सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 104, नई दिल्ली, सोमवार 23 जून 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जीवन बदलने के लिए लड़ना पड़ता है और आसान करने के लिए जीवन को समझना जरूरी है।

03 भगवान जगन्नाथ वॉलपेपर और माता सुभद्रा के पवन रथ यात्रा में मुख्यमंत्री

06 पिछड़ता उच्च शिक्षा का स्तर

08 हवाई अड्डे पर अफ़गानिस्तानि गिरफ्तार: नकली पासपोर्ट से ब्यापार कर रहा था

नमो भारत ट्रेन का सराय काले खां से मोदीपुरम के बीच ट्रायल रन सफल, 82 किमी की दूरी महज 1 घंटे में पूरी

संजय बाटला

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) ने सराय काले खां से मोदीपुरम तक नमो भारत ट्रेनों का 82 किमी का सफल ट्रायल रन एक घंटे से भी कम समय में पूरा किया। इस दौरान मेरठ मेट्रो ट्रेनें भी साथ चलीं। यह दिल्ली, गाजियाबाद और मेरठ के बीच देश के पहले नमो भारत कॉरिडोर के परिचालन की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) ने रविवार को सराय काले खां से मोदीपुरम के बीच नमो भारत ट्रेनों का समय-सारिणी बद्ध ट्रायल रन सफलतापूर्वक पूरा किया। इसमें ट्रेनों ने पूरी 82 किमी लंबी यात्रा एक घंटे से भी कम समय में तय की।

ट्रायल के दौरान मेरठ मेट्रो ट्रेनें भी नमो भारत ट्रेनों के साथ चल रही थीं। यह दिल्ली, गाज़ियाबाद और मेरठ के बीच तैयार किए गए देश के प्रथम नमो भारत कॉरिडोर के परिचालन की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जुलाई में पूरे ट्रैक पर नमो भारत ट्रेन का परिचालन शुरू हो जाने की संभावना है।

इस ट्रायल के दौरान, नमो भारत ट्रेनों को 160 किमी प्रति घंटे की अपनी अधिकतम परिचालन गति से निर्बाध रूप से चलाया गया। ट्रेनों ने सराय काले खां से मोदीपुरम के बीच हर स्टेशन पर स्टाप लिया और एनसीआरटीसी द्वारा लक्षित शेड्यूल का पालन करते हुए एक घंटे से भी कम समय में इस दूरी को तय किया। मालूम हो कि नमो भारत कारिडोर पर, विश्व में पहली बार प्रयोग होने वाले, एलटीई बैकबोन पर आधुनिक ईटीसीएस लेवल श्री हाइब्रिड सिग्नलिंग सिस्टम को स्थापित किया गया है।

वर्तमान में कॉरिडोर का 55 किमी हिस्सा यात्रियों के लिए परिचालित

इस सिग्नलिंग सिस्टम ने हर स्टेशन पर लगाए गए प्लेटफार्म स्क्रीन डोर (पीएसडी) के साथ बिना किसी बाधा सफलतापूर्वक परीक्षण पूर्ण किया। वर्तमान में, 11 स्टेशनों के साथ कॉरिडोर का 55 किमी हिस्सा यात्रियों के लिए परिचालित है। कॉरिडोर के बचे हुए यानी दिल्ली में सराय काले खां और न्यू अशोक नगर के बीच 4.5 किलोमीटर और मेरठ में मेरठ साउथ और मोदीपुरम के बीच लगभग 23 किमी के अपरिचालित खंड पर अंतिम फिनशिंग कार्यों के साथ-साथ ट्रायल रन तेजी से प्रगति कर रहे हैं।

18 किलोमीटर हिस्सा एलिवेटेड जबकि पांच किमी हिस्सा भूमिगत

मेरठ साउथ और मोदीपुरम डिपो के बीच के हिस्से पर मेरठ मेट्रो का ट्रायल रन भी गति से प्रगति कर रहा है। यह देश में पहली बार है जब नमो भारत ट्रेनों के ही बुनियादी ढांचे पर स्थानीय मेट्रो सेवाएं भी प्रदान की जाएंगी। 13 स्टेशनों के साथ, 23 किमी लंबे मेरठ मेट्रो के सेक्शन का 18 किलोमीटर हिस्सा एलिवेटेड जबकि पांच किमी हिस्सा भूमिगत है।

दिल्ली में बिजनेस खोलना और चलाना हुआ आसान, अब पुलिस से नहीं लेनी होगी एनओसी...

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली के उपराज्यपाल वी.के. सक्सेना ने व्यापार करने में आसानी को बढ़ावा देने और पुलिस पर बोझ कम करने के उद्देश्य से एक बड़ा नीतिगत बदलाव किया है। उन्होंने होटल, मोटल, रेस्तरां, डिस्कोथेक और मनोरंजन पार्कों सहित सात श्रेणियों के व्यवसायों के लिए लाइसेंस या अनापत्ति प्रमाण पत्र जारी करने की दिल्ली पुलिस की शक्तियों को वापस ले लिया है।

नई दिल्ली। राजधानी में होटल, मोटल, गेस्ट हाउस, डिस्कोथेक, रेस्तरां, ऑडिटोरियम, मनोरंजन पार्क, वीडियो गेम पार्लर व स्विमिंग पूल खोलना अब कहीं आसान हो गया है। वजह, लाइसेंस राज खत्म करने और व्यापार करने में आसानी को बढ़ाने के उद्देश्य से एक बड़े नीतिगत बदलाव में। एलजी वीके सक्सेना ने उक्त श्रेणियों में लाइसेंस या अनापत्ति प्रमाण पत्र जारी करने की दिल्ली पुलिस की शक्तियों को वापस ले लिया है।

अधिकारियों ने कहा कि यह निर्णय केंद्र सरकार के आदर्श वाक्य ₹कई लाइसेंसिंग व्यवस्थाओं को कम कर न्यूनतम सरकार व अधिकतम शासन₹ के अनुरूप है, जिसका पालन विभिन्न राज्य और केंद्र शासित प्रदेश करते हैं। यह निर्णय सीएम रेखा गुप्ता द्वारा प्रधानमंत्री, गृह मंत्री और एलजी से अनुरोध के बाद लिया गया है, जिसमें उन्होंने मौजूदा लाइसेंसिंग व्यवस्था के कारण शहर में व्यापारियों/उद्यमियों के समक्ष आ रही दिक्कतों का निदान करने का अनुरोध किया था।

लाइसेंसिंग की जिम्मेदारी सौंपना बल पर एक अतिरिक्त बोझ

एलजी ने अपने आदेश में उपहार त्रासदी मामले में दिल्ली हाइकोर्ट के फैसले का हवाला दिया, जिसमें सिफारिश की गई थी कि दिल्ली पुलिस को केवल कानून और व्यवस्था से संबंधित होना चाहिए और लाइसेंसिंग की जिम्मेदारी सौंपना बल पर एक अतिरिक्त बोझ है। हाइकोर्ट की सिफारिशों की पुष्टि करते हुए, सुप्रीम कोर्ट ने भी सुझाव दिया था कि लाइसेंस देने वाली पुलिस की मौजूदा प्रणाली को समाप्त कर दिया जाना चाहिए।

> दिल्ली के लिए यह ऐतिहासिक पल है। यहां की जनता और कारोबारियों के लिए यह निर्णय न केवल समयानुकूल बल्कि दूरदर्शी, व्यावहारिक और प्रशासनिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। दिल्ली पुलिस पर वर्षों से लाइसेंसिंग की जिम्मेदारी का बोझ था, जिससे न केवल उनकी मूल कानून-व्यवस्था संबंधी जिम्मेदारियां प्रभावित हो रही थीं, साथ ही कारोबारियों को लाइसेंस पाने के लिए काफी समय भी लग रहा था। इससे न केवल प्रशासनिक ढांचे में समन्वय बढ़ेगा बल्कि पुलिस को कानून व्यवस्था, अपराध नियंत्रण और महिला सुरक्षा जैसे अहम क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलेगी।
>
> – रेखा गुप्ता, मुख्यमंत्री, दिल्ली

अधिकारियों ने बताया कि तत्कालीन अतिरिक्त मुख्य सचिव (गृह) की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई थी, जिसमें दिल्ली पुलिस और दिल्ली सरकार के कानून एवं आइटी विभाग के अधिकारी शामिल थे। समिति का उद्देश्य दिल्ली पुलिस द्वारा लाइसेंस, अनापत्ति प्रमाण पत्र और अनुमति जारी करने की पूरी प्रणाली और वर्तमान परिदृश्य में उनकी प्रासंगिकता पर विचार करना था।

नियमों के ओवरलैपिंग ने व्यापार को प्रभावित किया

समिति की रिपोर्ट पर विचार करते समय, तत्कालीन मुख्य सचिव ने पाया कि दिल्ली पुलिस कर्मचारियों की कमी का सामना कर रही थी, जिससे उसके मूल पुलिसिंग कर्तव्य प्रभावित हो रहे थे। अतः सिफारिश की कि पुलिस को इन सात श्रेणियों के लाइसेंसों को विनियमित करने की जिम्मेदारियों से मुक्त कर दिया जाए। चूंकि दिल्ली नगर निगम, नई दिल्ली नगरपालिका परिषद और दिल्ली छावनी बोर्ड ने भी इन व्यापारिक गतिविधियों को विनियमित करने के लिए कानून बनाए हैं, इसलिए दिल्ली पुलिस अधिनियम के तहत जारी किए गए नियमों के ओवरलैपिंग ने समग्र 'व्यापार करने में आसानी' को प्रभावित किया।

एलजी ने अपने आदेश में उल्लेख किया कि गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र और गोवा जैसे प्रगतिशील राज्यों ने पहले ही उपरोक्त श्रेणियों के लिए पुलिस से लाइसेंस की आवश्यकता को समाप्त कर दिया है। इन सात व्यापार श्रेणियों के संबंध में कई नियमों की आवश्यकता पर फिर से विचार करते समय, यह देखा गया कि एलजी को पुलिस आयुक्त को एक सामान्य आदेश या अधिसूचना के माध्यम से प्रासंगिक नियमों को रद्द करने और ओवरलैपिंग अधिकार क्षेत्र से उत्पन्न ऐसी विसंगतियों को दूर करने और व्यापार करने में आसानी को बढ़ावा देने का निर्देश देने की अपनी शक्तियों के भीतर अच्छी तरह से था।

एलजी ने 1978 की धारा 4 के तहत शक्तियों का किया प्रयोग

एलजी ने अपने आदेश में कहा, ₹दिल्ली पुलिस अधिनियम, 1978 की धारा 4 के साथ धारा 28 (2) के तहत शक्तियों का प्रयोग करते हुए, मैं दिल्ली पुलिस अधिनियम, 1978 की धारा 28 (1) के तहत नियम जारी करने के लिए दिल्ली के पुलिस आयुक्त को दी गई मंजूरी को वापस लेता हूं, जिसमें पैरा 1 में उल्लिखित सात गतिविधियां शामिल हैं और दिल्ली के पुलिस आयुक्त को तत्काल प्रभाव से उक्त नियमों को निरस्त करने के लिए एक अधिसूचना जारी करने का निर्देश दिया जाता है।"

दिल्ली में बड़ा हादसा, तेज रफ्तार देवी बस ने डीटीसी बस को मारी टक्कर; एक की मौत

रणजीत नगर में शादीपुर डिपो के पास तेज रफ्तार देवी बस ने खड़ी डीटीसी बस को टक्कर मार दी। इस हादसे में 37 साल के एक व्यक्ति की मौत हो गई और दो अन्य घायल हो गए।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली में बड़ा हादसा हो गया है। रणजीत नगर में शादीपुर डिपो के पास तेज रफ्तार देवी बस ने खड़ी डीटीसी बस को टक्कर मार दी। इस हादसे में 37 साल के एक व्यक्ति की मौत हो गई और दो अन्य घायल हो गए। पुलिस ने मामले की जानकारी देते हुए बताया कि यह घटना उस समय हुई जब डीटीसी बस डिपो स्टैंड पर खड़ी थी और कथित तौर पर लापरवाही से चलाई जा रही DEVI (दिल्ली इलेक्ट्रिक व्हीकल इंटरकनेक्टर) बस ने पीछे से उसमें टक्कर मार दी।

पुलिस ने बताया कि टक्कर के कारण खड़ी गाड़ी ने सड़क पार कर रहे तीन पैदल यात्रियों को टक्कर मार दी। उन्होंने बताया कि बस को टिकरी कलां निवासी 56 साल का देवेंद्र चला रहा था।

एक पुलिस अधिकारी ने बताया, तीनों घायलों को आरएमएल अस्पताल ले जाया गया। उनमें से एक की पहचान बलजीत नगर निवासी सौरभ के रूप में हुई, जिसे बाद में आरएलकेसी अस्पताल ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

स्थानीय पुलिस और अपराध शाखा की टीम मौके पर पहुंची और सबूत इकट्ठे किए। पुलिस ने बताया कि इलाके में लगे सीसीटीवी फुटेज की जांच की जा रही है और आगे की जांच जारी है।

अब हादसे का डर नहीं! आनंद विहार के नए फ्लाईओवर पर खत्म होगी ये अड़चन

दिल्ली में सड़क परिवहन परियोजनाओं में बाधा बन रहे पेड़ों को हटाने की मंजूरी मिल रही है। नंद नगरी-गगन सिनेमा फ्लाईओवर और अप्सरा बॉर्डर-आनंद विहार फ्लाईओवर के बीच आ रहे पेड़ों को हटाने की अनुमति मिल गई है। बारापुला फेज-3 एलिवेटेड कॉरिडोर के पेड़ों को भी जल्द हटाया जाएगा। वृक्ष प्रत्यारोपण नीति 2020 के तहत पेड़ों को यमुना पुश्ता व गढ़ी मेढू में लगाया जा सकता है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। सड़क परिवहन क्षेत्र की बड़ी परियोजनाओं के बीच बाधा बन रहे पेड़ों को लेकर बड़ी राहत मिलने जा रही है। नंद नगरी-गगन सिनेमा फ्लाईओवर के बीच आ रहे पेड़ हटाने की अनुमति के बाद रोड नंबर 56 पर अप्सरा बॉर्डर से आनंद विहार के बीच बने फ्लाईओवर के ऊपर आ रहे पेड़ हटाने की भी मंजूरी मिल गई है।

इसके बाद बारापुला फेज-तीन एलिवेटेड कॉरिडोर के बीच आ रहे पेड़ों को भी जल्द हटाए जाने की उम्मीद जग गई है। हटाए जाने वाले पेड़ों की एवज में लगाए जाने वाले पेड़ों के स्थान के बारे में अभी अंतिम फैसला नहीं हुआ है। मगर बताया जा रहा है कि पेड़ों को यमुना पुश्ता व गढ़ी मेढू में लगाया जा सकता है।

बता दें कि दिल्ली सरकार ने वृक्ष प्रत्यारोपण नीति 2020 में विकास कार्यों के दौरान 80 प्रतिशत पेड़ों का प्रत्यारोपण अनिवार्य किया है। विकास परियोजना के लिए पेड़ों के नुकसान की एवज में एक वृक्ष की जगह 10 पौधे लगाने का भी प्रविधान है। पेड़ों के कारण बारापुला फेज-3 एलिवेटेड कॉरिडोर और नंद नगरी गगन सिनेमा परियोजना में दो-दो साल की देरी हो चुकी है। वृक्ष प्रत्यारोपण नीति 2020 के तहत पीडब्ल्यूडी पेड़ प्रत्यारोपित करने के लिए तैयार है। मगर ये मामले अदालत में पहुंच चुके हैं। इनकी अदालत द्वारा बनाई गई समिति निगरानी कर रही हैं।

पीडब्ल्यूडी मंत्री प्रवेश वर्मा कहते हैं कि इन मामलों की समीक्षा कराई गई है, उनकी सरकार नए सिरे से अदालत द्वारा बनाई गई समिति के सामने पक्ष रख रही है। यहां बता दें कि अप्सरा बॉर्डर-आनंद विहार कॉरिडोर के बीच आ रहे तीन हरे पेड़ हटाने की सरकार को मंजूरी मिल गई है। इनमें एक पेड़ सड़क के बीचोबीच आ रहा है, जो अधिक खतरनाक है और इसे लेकर अधिक समस्या है।

फ्लाईओवर का रखरखाव कर रहे पीडब्ल्यूडी को वन एवं पर्यावरण विभाग के उस आदेश का इंतजार है, जिसके तहत इसे प्रत्यारोपित किया जाना है। सूत्रों की मानें तो यहां बाधा बन रहे तीनों पेड़ों को यमुना खादर में प्रत्यारोपित किया जा सकता है। इसके अलावा विभाग वन विभाग के निर्देश के अनुसार, एक पेड़ के बदले 10 पेड़ भी लगाने के लिए तैयार है।

एलजी वीके सक्सेना ने इससे पहले उत्तर पूर्वी दिल्ली में नंद नगरी-गगन सिनेमा जंक्शन पर लंबे समय से प्रतीक्षित फ्लाईओवर परियोजना के लिए अंतिम बाधा को दूर करते हुए गत 4 जून को 27 पेड़ों के प्रत्यारोपण और कटाई को मंजूरी दे दी है। इन पेड़ों को भी वन विभाग के निर्देश के अनुसार पीडब्ल्यूडी प्रत्यारोपित करने के लिए तैयार है। विभाग को वन विभाग के आदेश जारी होने का इंतजार है।

सोम प्रदोष व्रत आज

हिंदू धर्म में प्रदोष व्रत का बड़ा महत्व है। यह व्रत भगवान शिव को समर्पित है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन सच्चे मन से भोलेनाथ की पूजा-अर्चना करने से सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं और कष्टों का अंत होता है। प्रत्येक माह में दो प्रदोष व्रत पड़ते हैं एक कृष्ण पक्ष और दूसरा शुक्ल पक्ष में।

प्रदोष व्रत कब है ?

==========

हिंदू पंचांग के अनुसार, आषाढ़ महीने के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि 23 जून को देर रात 01 बजकर 21 मिनट पर शुरू होगी। वहीं, इसकी समाप्ति 23 जून को रात 10 बजकर 09 मिनट पर होगी। इस दिन प्रदोष काल की पूजा का महत्व है। ऐसे में 23 जून को आषाढ़ माह के कृष्ण पक्ष का अंतिम प्रदोष व्रत रखा जाएगा। इसके साथ ही भगवान शिव की पूजा के लिए शुभ मुहूर्त शाम 07 बजकर 22 मिनट से लेकर 09 बजकर 23 मिनट तक रहेगा।

प्रदोष व्रत का धार्मिक महत्व

==========

प्रदोष व्रत भगवान शिव और माता पार्वती को समर्पित है। प्रदोष शब्द का अर्थ है रात की शुरुआत होने वाला समय, जो सूर्यास्त के बाद और रात्र के आगमन से पहले का समय होता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, प्रदोष काल में भगवान शिव कैलाश पर्वत पर नृत्य करते हैं और सभी देवी-देवता उनकी पूजा करते हैं। इस शुभ समय में शिव पूजा करने से भक्तों को रोग-दोष से मुक्ति मिलती है और जीवन में सुख-शांति आती है।

प्रदोष व्रत पूजा विधि

==========

इस दिन सुबह जल्दी उठें और स्नान करें।

इसके बाद भगवान शिव का ध्यान करते हुए व्रत का संकल्प लें।

सुबह भगवान शिव की पूजा विधिवत करें।

इसके बाद शाम के समय एक वेदी पर भगवान शिव और माता पार्वती की प्रतिमा स्थापित करें।

गंगाजल से अभिषेक करें।

उन्हें बेलपत्र, धतूरा, भांग, शमी पत्र, सफेद चंदन, अक्षत, धूप, दीप, फल और मिठाई आदि चीजें चढ़ाएं।

'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का 108 बार जप करें।

शिव चालीसा और प्रदोष व्रत कथा का पाठ करें।

अंत में आरती कर भगवान से प्रार्थना करें।

भगवान जगन्नाथ की दिव्य यात्रा, जानें महत्त्व और खास बातें

जगन्नाथ रथयात्रा भारत में मनाए जाने वाले धार्मिक महा महोत्सवों में सबसे प्रमुख तथा महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। यह रथयात्रा न केवल भारत अपितु विदेशों से आने वाले पर्यटकों के लिए भी खासी दिलचस्पी और आकर्षण का केंद्र बनती है। भगवान श्रीकृष्ण के अवतार 'जगन्नाथ' की रथयात्रा का पुण्य सौ यज्ञों के बराबर माना जाता है। सागर तट पर बसे पुरी शहर में होने वाले जगन्नाथ रथयात्रा उत्सव के समय आस्था का जो विराट वैभव देखने को मिलता है, वह और कहीं दुर्लभ है। इस रथयात्रा के दौरान भक्तों को सीधे प्रतिमाओं तक पहुंचने का बहुत ही सुनहरा अवसर प्राप्त होता है। जगन्नाथ रथयात्रा दस दिवसीय महोत्सव होता है। यात्रा की तैयारी अक्षय तृतीया के दिन श्रीकृष्ण, बलराम और सुभद्रा के रथों के निर्माण के साथ ही शुरू हो जाती है। देश-विदेश से लाखों लोग इस पर्व के साक्षी बनने हर वर्ष यहां आते हैं। भारत के चार पवित्र धामों में से एक पुरी के 800 वर्ष पुराने मुख्य मंदिर में योगेश्वर श्रीकृष्ण जगन्नाथ के रूप में विराजते हैं। साथ ही यहां बलभद्र एवं सुभद्रा भी हैं'

दर्शन : हिंदू धर्म में श्रीकृष्ण साक्षात भगवान विष्णु के अवतार हैं। अपने भक्तों को संदेश देते हुए उन्होंने स्वयं कहा है- 'जहां सभी लोग मेरे नाम से प्रेरित हो एकत्रित होते हैं, मैं वहां पर विद्यमान होता हूं।' वर्तमान रथयात्रा में जगन्नाथ को दशावतारों के रूप में पूजा जाता है, उनमें विष्णु, कृष्ण, वामन और बुद्ध हैं। जगन्नाथ मंदिर में पूजा, आचार-व्यवहार, रीति-नीति और व्यवस्थाओं को शैव, वैष्णव, बौद्ध, जैन धर्मावलम्बियों ने भी प्रभावित किया है। रथ का रूप श्रद्धा के रस से परिपूर्ण होता है। वह चलते समय शब्द करता है। उसमें धूप और अगरबत्ती की सुगंध होती है। इसे भक्तजनों का पवित्र स्पर्श प्राप्त होता है। रथ का निर्माण बुद्धि, चित्त और अहंकार से होता है, ऐसे रथ रूपी शरीर में आत्मा रूपी भगवान जगन्नाथ विराजमान होते हैं। इस प्रकार रथयात्रा शरीर और आत्मा के मेल की ओर संकेत करता है और आत्मदृष्टि बनाए रखने की प्रेरणा देती है। रथयात्रा के समय रथ का संचालन आत्मा युक्त शरीर करता है जो जीवन यात्रा का प्रतीक है। यद्यपि शरीर में आत्मा होती है तो भी वह स्वयं संचालित नहीं होती, बल्कि उसे माया संचालित करती है। इसी प्रकार भगवान जगन्नाथ के विराजमान होने पर भी रथ स्वयं नहीं चलता, बल्कि उसे खींचने के लिए लोक-शक्ति की आवश्यकता होती है।

प्रथाएं : रथयात्रा आरंभ होने से पूर्व पुराने राजाओं के वंशज पारंपरिक ढंग से सोने के हत्थे वाली झाड़ू से ठाकुर जी के प्रस्थान मार्ग को बुहारते हैं। इसके बाद मंत्रोच्चार एवं जयघोष के साथ रथयात्रा शुरू होती है। कई वाद्ययंत्रों की ध्वनि के मध्य विशाल रथों को हजारों लोग मोटे-मोटे रस्सों से खींचते हैं। सबसे पहले बलभद्र का रथ तालध्वज प्रस्थान करता है। थोड़ी देर बाद सुभद्रा की यात्रा शुरू होती है। अंत में लोग जगन्नाथ जी के रथ को बड़े ही श्रद्धापूर्वक खींचते हैं। लोग मानते हैं कि रथयात्रा में सहयोग से मोक्ष मिलता है, अतः सभी लोग कुछ पल के लिए रथ खींचने को आतुर रहते हैं। जगन्नाथ जी की यह रथयात्रा गुंडीचा मंदिर पहुंचकर संपन्न होती है। गुंडीचा मंदिर वहीं है, जहां विश्वकर्मा ने तीनों देव प्रतिमाओं का निर्माण किया था। इसे गुंडीचा बाड़ी भी कहते हैं। यह भगवान की मौसी का घर भी माना जाता है। सूर्यास्त तक यदि कोई रथ गुंडीचा मंदिर नहीं पहुंच पाता तो वह अगले दिन यात्रा पूरी करता है। गुंडीचा मंदिर में भगवान एक सप्ताह प्रवास करते हैं। इस बीच इनकी पूजा-अर्चना यहीं होती है।

बाहुड़ा यात्रा : आषाढ़ शुक्ल दशमी को जगन्नाथ जी की वापसी यात्रा शुरू होती है। इसे बाहुड़ा यात्रा कहते हैं। शाम से पूर्व ही रथ जगन्नाथ मंदिर तक पहुंच जाते हैं, जहां एक दिन प्रतिमाएं भक्तों के दर्शन के लिए रथ में ही रखी रहती हैं। अगले दिन प्रतिमाओं को मंत्रोच्चार के साथ मंदिर के गर्भगृह में पुनः स्थापित कर दिया जाता है। मंदिर में भगवान जगन्नाथ, बलभद्र एवं सुभद्रा की सौम्य प्रतिमाओं को श्रद्धालु एकदम निकट से देख सकते हैं। भक्त एवं भगवान के बीच यहां कोई दूरी नहीं रखी जाती। काष्ठ की बनी इन प्रतिमाओं को भी कुछ वर्ष बाद बदलने की परंपरा है। जिस वर्ष अधिमास रूप में आषाढ़ माह अतिरिक्त होता है, उस वर्ष भगवान की नई मूर्तियां बनाई जाती हैं। यह अवसर भी उत्सव के रूप में मनाया जाता है। पुरानी मूर्तियों को मंदिर परिसर में ही समाधि दी जाती है।

इतिहास : पौराणिक कथाओं के अनुसार 'राजा इन्द्रद्युम्न' भगवान जगन्नाथ को 'शबर राजा' से यहां लेकर आए थे तथा उन्होंने ही मूल मंदिर का निर्माण कराया था जो बाद में नष्ट हो गया। इस मूल मंदिर का कब निर्माण हुआ और यह कब नष्ट हो गया, इसके बारे में कुछ भी स्पष्ट नहीं है। 'ययाति केशरी' ने भी एक मंदिर का निर्माण कराया था। वर्तमान 65 मीटर ऊंचे मंदिर का निर्माण 12वीं शताब्दी में चोल 'गंगदेव' तथा 'अनंग भीमदेव' ने कराया था। परंतु जगन्नाथ संप्रदाय वैदिक काल से लेकर अब तक मौजूद है।

गुप्त नवरात्र महाविद्याओं की उपासना का पर्व

गुप्त नवरात्र हिंदू धर्म में उसी प्रकार मान्य हैं जिस प्रकार शारदीय और चैत्र नवरात्र। आषाढ़ और माघ माह के नवरात्रों को गुप्त नवरात्र कह कर पुकारा जाता है। बहुत कम लोगों को ही इसके ज्ञान या छिपे हुए होने के कारण इसे गुप्त नवरात्र कहा जाता है। गुप्त नवरात्र मनाने और इनकी साधना का विधान देवी भागवत व अन्य धार्मिक ग्रंथों में मिलता है। श्रृंगी ऋषि ने गुप्त नवरात्रों के महत्त्व को बतलाते हुए कहा है कि जिस प्रकार वासंतिक नवरात्र में भगवान विष्णु की पूजा और शारदीय नवरात्र में देवी शक्ति की नौ देवियों की पूजा की प्रधानता रहती है, उसी प्रकार गुप्त नवरात्र दस महाविद्याओं के होते हैं। यदि कोई इन महाविद्याओं के रूप में शक्ति की उपासना करे तो जीवन धन-धान्य, राज्य सत्ता और ऐश्वर्य से भर जाता है'

महत्त्व : गुप्त नवरात्रों का बड़ा ही महत्त्व बताया गया है। मानव के समस्त रोग-दोष व कष्टों के निवारण के लिए गुप्त नवरात्र से बढक़र कोई साधना काल नहीं है। श्री, वर्चस्व, आयु, आरोग्य और धन प्राप्ति के साथ ही शत्रु संहार के लिए गुप्त नवरात्र में अनेक प्रकार के अनुष्ठान व व्रत-उपवास के विधान शास्त्रों में मिलते हैं। इन अनुष्ठानों के प्रभाव से मानव को सहज ही सुख व अक्षय ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। 'दुर्गावरिवस्या' नामक ग्रंथ में स्पष्ट लिखा है कि साल में दो बार आने वाले गुप्त नवरात्रों में भी माघ में पडने वाले गुप्त नवरात्र मानव को न केवल आध्यात्मिक बल ही प्रदान करते हैं, बल्कि इन दिनों में संयम-नियम व श्रद्धा के साथ माता दुर्गा की उपासना करने वाले व्यक्ति को अनेक सुख व साम्राज्य भी प्राप्त होते हैं। 'शिवसंहिता' के अनुसार ये नवरात्र भगवान शंकर और आदिशक्ति मां पार्वती की उपासना के लिए भी श्रेष्ठ हैं। गुप्त नवरात्रों को सफलतापूर्वक संपन्न करने से कई बाधाएं समाप्त हो जाती हैं।

महानवमी को पूर्णाहुति : गुप्त नवरात्र में संपूर्ण फल की प्राप्ति के लिए अष्टमी और नवमी तिथि को आवश्यक रूप से देवी के पूजन का विधान शास्त्रों में वर्णित है। माता के सन्मुख जोत दर्शन एवं कन्या भोजन करवाना चाहिए।

स्त्री रूप में देवी पूजा : कूर्मपुराण में पृथ्वी पर देवी के बिंब के रूप में स्त्री का पूरा जीवन नवदुर्गा की मूर्ति के रूप से बताया गया है। जन्म ग्रहण करती हुई कन्या शैलपुत्री, कौमार्य अवस्था तक ब्रह्मचारिणी व विवाह से पूर्व तक चंद्रमा के समान निर्मल होने से चंद्रघटा कहलाती है। नए जीव को जन्म देने के लिए गर्भ धारण करने से कूष्मांडा व संतान को जन्म देने के बाद वही स्त्री स्कंदमाता होती है। संयम व साधना को धारण करने वाली स्त्री कात्यायनी व पतिव्रता होने के कारण पति की अकाल मृत्यु को भी जीत लेने से कालरात्रि कहलाती है। संसार का उपकार करने से महागौरी व धरती को छोडक़र स्वर्ग प्रयाण करने से पहले संसार को सिद्धि का आशीर्वाद देने वाली सिद्धिदात्री मानी जाती हैं।

घट स्थापना : शास्त्रीय मान्यता के अनुसार स्वच्छ दीवार पर सिंदूर से देवी की मुख-आकृति बना ली जाती है। सर्वशुद्धा माता दुर्गा की जो तस्वीर मिल जाए, वही चौकी पर स्थापित कर दी जाती है, परंतु देवी की असली प्रतिमा घट है। घट पर घी-सिंदूर से कन्या चिह्न और स्वस्तिक बनाकर उसमें देवी का आह्वान किया जाता है। देवी के दायीं ओर जौ व सामने हवनकुंड रखा जाता है। नौ दिनों तक नित्य देवी का आह्वान, फिर स्नान, वस्त्र व गंध आदि से षोडशोपचार पूजन करना चाहिए। नैवेद्य में बताशे और नारियल तथा खीर का भोग होना चाहिए। पूजन और हवन के बाद दुर्गा सप्तशती का पाठ करना श्रेष्ठ है। साथ ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त करने के लिए नवदुर्गा के प्रत्येक रूप की प्रतिदिन पूजा-स्तुति करनी चाहिए।

सनातन धर्म में....

हमारे सनातन धर्म के शास्त्रों के अनुसार हमारे घर में किसी के जन्म लेने से सूतक,और किसी की मृत्यु होने से पातक लगता है ! उस दौरान घर के मंदिर में विराजित देवी देवताओं की मूर्तियों को ना तो स्पर्श किया जाता है,ना उनकी पूजा की जाती है और ना भोग लगाया जाता है !अधिकांश घरों में लड्डू गोपाल जी विराजित होते हैं !इस दौरान उनकी सेवा पूजा कैसे की जाए,इसके बारे में विभिन्न संतों के भिन्न भिन्न निम्नलिखित मत हैं ! ---

१) हमारे वृंदावन के पूज्यश्री प्रेमानंद बाबा कहते हैं कि सूतक पातक में भी ठाकुरजी की सेवा पूजा निर्बाध रूप से जारी रखी जा सकती है !

२) वृंदावन के बांके बिहारी मंदिर के गोसाईं कहते हैं कि सूतक पातक में अपने ठाकुरजी की सेवा पूजा हम स्वयं नहीं कर सकते,परंतु दूसरों से करा सकते हैं !इसके लिए निकटस्थ मंदिर के पुजारी जी से संपर्क किया जा सकता है कि वो हमारे घर आकर हमारे ठाकुरजी की सेवा पूजा कर जाया करें !अथवा हमारे ठाकुरजी को वे अपने मंदिर या घर में ले जाकर सेवा पूजा करें !...इसकी व्यवस्था ना हो सके,तो अपनी किसी संबंधी,मित्र या परिचित को बुलाकर ठाकुरजी की सेवा पूजा करवाई जा सकती है !अथवा वे ठाकुरजी को अपने घर ले जाकर सेवा पूजा करें !

3) बागेश्वर धाम वाले बाबा कहते हैं कि उस दौरान घर के किसी 10 - 12 वर्ष तक के बालक द्वारा ठाकुरजी की सेवा पूजा कराई जा सकती है !अथवा बेटी,बहन या ननद से भी सेवा करवाई जा सकती है,क्योंकि विवाह के बाद उनका गोत्र बदल जाता है ; उनका परिवार दूसरा माना जाता है !

४)पूज्य स्वामी श्री रामसुख दास जी कहा करते थे कि हमारे घर के ठाकुर घर के सदस्य जैसे होते हैं !जब हम पर सूतक लगता है,तो ठाकुरजी पर भी लगता है !और जब हमारी शुद्धि होती है,तो ठाकुरजी की भी शुद्धि हो जाती है !अतः ठाकुर सेवा रोकनी नहीं चाहिए !...इस कथन को ध्यान में रखते हुए हम कह सकते हैं कि नित्य की जो सेवा है,...ठाकुरजी का स्नान,भोग,राग,शयन आदि जो है,वो नहीं रोका जाता !कुछ नया,कुछ विशेष नहीं कर सकते !किसी अन्य के ठाकुरजी को स्पर्श नहीं कर सकते !किसी मंदिर में नहीं जा सकते,कोई अनुष्ठान नहीं कर सकते !

वे यह भी कहते थे कि घर का जो व्यक्ति प्रतिदिन ठाकुरजी की सेवा पूजा करता है,वो सूतक पातक में भी उनकी सेवा पूजा कर सकता है !किंतु घर का कोई नया व्यक्ति नहीं कर सकता !

मैंने संतों के ये तमाम मत आपके सामने रख दिए ! इनमें से जो आपको प्रिय या अनुकूल लगे,उसे आप कार्यान्वित कर सकते हैं !

सदियों पुराना है माता शूलिनी मेले का इतिहास

देवभूमि हिमाचल धार्मिक स्थलों और देवी-देवताओं के मंदिरों के लिए देश भर में प्रसिद्ध माना जाता है। सोलन जिला में भी ऐसा ही एक प्रतिष्ठित मंदिर स्थापित है। जहां देशभर से लोग अपनी मनकोमना पूर्ण होने की मन्नतें करते हैं। सोलन जिला अपनी अधिष्ठात्री देवी मां शूलिनी के नाम से पूरे देश में विख्यात है। यह धार्मिक मंदिर इस क्षेत्र के सबसे पुराने और पवित्र मंदिरों में से एक है। हर साल इस मंदिर में एक वार्षिक मेले का आयोजन किया जाता है। राज्यस्तरीय शूलिनी मेला इस बार 22 जून तक मनाया जाएगा। बहरहाल शूलिनी मेला सोलन शहर की अधिष्ठात्री देवी माता शूलिनी के नाम से मनाया जाता है। तीन दिनों तक माता शूलिनी अपनी बड़ी बहन के पास अपने मुख्य मंदिर परिसर से गंज बाजार स्थित मंदिर में रहती है। इन तीन दिनों को सोलन शहर में मेले के रूप में मनाया जाता है। प्रदेशभर से लोग इस मेले में शामिल होने आते है। मेले की सांस्कृतिक संध्याएं भी इसके आकर्षण का केंद्र रहती हैं। माता शूलिनी सोलन की अधिष्ठात्री देवी हैं। देवी भागवत पुराण में मां दुर्गा के असंख्य नामों में शूलिनी नाम भी शामिल है। दशम गुरु गोबिंद सिंह जी ने भी शूलिनी नाम से ही देवी की आराधना की है। सोलन नगर बघाट रियासत की राजधानी हुआ करता था। इस रियासत की नींव राजा बिजली देव ने रखी थी। बारह घाटों से मिलकर बनने वाली बघाट रियासत का क्षेत्रफल 36 वर्ग मील में फैला हुआ था। इस रियासत की प्रारंभ में राजधानी जौणाजी इसके बाद कोटी और बाद में सोलन बनी। राजा दुर्गा सिंह इस रियासत के अंतिम शासक थे।

रियासत के विभिन्न शासकों के काल से ही माता शूलिनी देवी का मेला लगता आ रहा है। जानकारों के अनुसार बघाट रियासत के शासक अपनी कुलश्रेष्ठा की प्रसन्नता के लिए मेले का आयोजन करते थे। बदलते समय के दौरान यह मेला आज भी अपनी पुरानी परंपरा के अनुसार चल रहा है। माता शूलिनी के इस मंदिर का पुराना इतिहास बघाट रियासत से जुड़ा हुआ है। बघाट रियासत के लोग माता शूलिनी को अपनी कुलदेवी के रूप में मानते थे, तभी से माता शूलिनी बघाट रियासत के शासकों के लिए उनकी कुलदेवी के रूप में पूजी जाती है। मां शूलिनी देवी को माता दुर्गा का रूप ही माना जाता है। कहते हैं सदियों पहले बघाट रियासत की राजधानी जौणाजी हुआ करती थी, ये उस समय की बात है जब इस प्रदेश में राजाओं का राज हुआ करता था। बताया जाता है कि इस दौरान राजा को एक सपना आया और सपने में मां शूलिनी देवी ने उनको दर्शन दिए, जिसमें देवी मां ने कहा कि मैं जौणाजी में रहती हूं और वहां धरती के नीचे से मेरी मूर्तियों को निकाला जाए।

इसके बाद ही राजा ने जौणाजी में खुदाई शुरू करवा दी और वहां से मां शूलिनी देवी की और दो अन्य देवताओं की मूर्तियां निकलीं। इसके बाद तत्काल ही राजा ने इन मूर्तियों को सोलनी गांव में स्थापित कर दिया। जिसके बाद यहां पर राजा द्वारा मंदिर का निर्माण किया गया। मंदिर बनने के बाद लोगों ने इस देवी को अपनी कुलदेवी माना। मान्यता है कि माता शूलिनी के प्रसन्न होने पर क्षेत्र में किसी प्रकार की प्राकृतिक आपदा या महामारी का प्रकोप नहीं होता है, बल्कि सुख-समृद्धि व खुशहाली आती है। मेले की यह परंपरा आज भी कायम है। कालांतर में यह मेला केवल एक दिन ही अर्थात आषाढ़ मास के दूसरे रविवार को शूलिनी माता के मंदिर के समीप खेतों में मनाया जाता था। सोलन जिला के अस्तित्व में आने के पश्चात इसका सांस्कृतिक महत्त्व बनाए रखने तथा इसे और आकर्षक बनाने के अलावा पर्यटन की दृष्टि से बढ़ावा देने के लिए राज्य स्तरीय मेले का दर्जा प्रदान किया गया और इसे तीन दिवसीय उत्सव का दर्जा प्रदान किया गया है। हर साल मेले की शुरुआत मां शूलिनी देवी की शोभा यात्रा से होती है, जिसमें माता की पालकी के अलावा विभिन्न धार्मिक झांकियां भी निकाली जाती हैं। इस यात्रा में हजारों की संख्या में लोग माता शूलिनी के दर्शन करके सुख समृद्धि का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। मौजूदा समय में यह मेला जहां जनमानस की भावनाओं से जुड़ा है, वहीं पर विशेषकर ग्रामीण लोगों को मेले में आपसी मिलने जुलने का अवसर मिलता है, जिससे लोगों में आपसी भाईचारा तथा राष्ट्र की एकता व अखंडता की भावना पैदा होती है।

मन को वश में करना

राजयोगी ब्रह्माकुमार निकुंज जी

इस तथ्य में कोई संदेह नहीं है कि मनुष्य ने अपनी हिम्मत और बुद्धिमता के आधार पर अंतरिक्ष, माउंट एवरेस्ट और अन्य कई चुनौतियों को पार किया है, किंतु इतना सब हासिल करने के बाद भी क्यों अब तक हम अपने मन को काबू करने में असफल रहे हैं? अधिनाकांश लोगों के मतानुसार मन को व उसके भीतर आने वाले निरंतर विचारों के प्रवाह को रोक पाना या नियंत्रित करना असंभव है और इसलिए ही ऐसा कहा जाता है कि मन रूपी घोड़े को लगाम लगाना बहुत ही कठिन कार्य है। परंतु इस कठिन कार्य को संभव करने का उपाय बिलकुल सहज और सरल है जी हां ! ध्यान-मेडिटेशन के अभ्यास द्वारा हम चंचल से चंचल मन को भी काबू में कर सकते हैं और निरंतर आने वाले विचारों को भी न केवल नियंत्रित कर सकते हैं, अपितु इस अद्भुत कला द्वारा हम संपूर्णतः विचारों को पूरी तरह से रोक भी सकते हैं। वर्तमान आधुनिक सदी में जीने वाले लोग अज्ञान अंधकार की भूल भुलैया में भटकते-भटकते अपने मूल स्वरूप, ईश्वर के अनुग्रह का जीवन में महत्त्व एवं अपने लक्ष्य की बात को एक प्रकार से पूरी तरह भुला बैठे हैं।

अमूमन लोग वस्तुओं को अकसर भूल जाते हैं, सुनी, पढ़ी बातों को भूल जाने की घटनाएं भी होती रहती हैं, किंतु ऐसा कदाचित ही होता है कि कोई अपने आप को ही भुला देता है। ऐसी विचित्रता तो मनुष्यों में ही देखी जा सकती है। मैं एक अजर-अमर चैतन्य आत्मा हूं इस तथ्य को पूर्ण रूप से भुलाकर हमने खुदको को शरीर मानकर उसी के स्वार्थों को अपना स्वार्थ, उसी की आवश्यकताओं को अपनी आवश्यकता मानना शुरू कर दिया है। हमें यह किंचित भी याद नहीं रहता कि शरीर और मन यह दोनों ही आत्मा रूपी सारथी के साधन मात्र है। यदि हम इस वस्तुस्थिति को यानी कि शरीर और आत्मा के बीच के भेद को समझ लेते हैं, तो फिर हमारे जीवन में आत्मकल्याण की बात प्रमुख बन जाती है और साधनों के लिए हम फिर उतना ही समय देंगे जितना कि उनके लिए आवश्यक है।

आज हालात ऐसे हो गए है कि हम आत्मा रूपी सारथी को दिव्य गुणों से शृंगारने के बजाय शरीर रूपी रथ को स्वर्ण आभूषणों से सजा रहे हैं। परमात्म ज्ञान रूपी शक्तिवर्धक खुराक से आत्मा को वंचित करके हम उसे भूखा मार रहे हैं और शरीर रूपी स्थूल साधन को दूध और घी पिला रहे है, यह कैसी विचित्र स्थिति है। ऋषियों के मतानुसार इसी को 'कलियुग' कहा जाता है कि जहां पर स्वामी (आत्मा) अपने उत्तरदायित्वों को सर्वदा भुलाकर सेवकों (शरीर) की सेवकाई में लगा रहे। इन सभी बातों के पीछे का सार यह है कि जब तक मनुष्य अपनी विस्मृति से बहार निकलकर उसे स्मृति में नहीं बदलेगा, तब तक वह किसी भी प्रकार की 'ध्यान साधना' में अपना मन लगा नहीं सकेगा। आज हमारी हालत मेले के खो गए उस बच्चे जैसे हो गई है, जिसका हाथ बीच रस्ते अपनी मां के हाथ से छुट गया और जो अपने घर का पता, गंतव्य स्थान का नाम व अपना नाम तक भूल गया। अपना नाम, पता, परिचय पत्र, टिकट आदि सब कुछ गंवा देने पर आज हम भी ऐसी असमंजस भरी स्थिति में खड़े हैं कि आखिर हम हैं कौन, कहां से आए हैं और कहां जाना था?

भगवद्गीता में कहा गया है 'बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः। अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत्॥ 6.6॥' अर्थात जो मनुष्य मन को वश में कर लेता है, उसका वह मन ही परम मित्र बन जाता है, लेकिन जो मनुष्य मन को वश में नहीं कर पाता है, उसके लिए वह मन ही परम शत्रु के समान होता है। अब यदि हम अपने मन को वश करना चाहते है, तो उसका वशीकरण मंत्र है खुद को आत्मा समझना जी हां ! मन, बुद्धि, संस्कार यह तीनों ही चैतन्य आत्मा के साधन हैं, अतः इन तीनों को यदि कोई नियंत्रित कर सकता है, तो वह है उनका स्वामी यानी की आत्मा। तो आइए हम सभी खुद को आत्मनिश्चय करें और तटस्थ भाव से शरीर रूपी साधन व उसके संसाधनों का उपयोग कर ध्यान साधना द्वारा अपने जीवन को सुखी व शांतमय बनाएं।

ओलंपिक दिवस पर लेट्स मूव अभियान के तहत दौड़ का आयोजन किया गया

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति की ओर से रविवार को ओलंपिक दिवस पर 'लेट्स मूव' अभियान के तहत दौड़ का आयोजन किया गया। इस अभियान में दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने केंद्रीय मंत्री मनसुख मांडविया और राज्यसभा सदस्य एवं इंडियन ओलंपिक एसोसिएशन की अध्यक्ष पीटी ऊषा के साथ भाग लिया।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश ने खेल जगत का एक नया स्वर्णिम युग देखा है। फिर चाहे ओलंपिक में ऐतिहासिक प्रदर्शन हो, खेलो इंडिया जैसी दूरदर्शी योजनाएं हों या देशभर में अत्याधुनिक खेल अवसंरचना का विकास हो, भारत को खेल महाशक्ति बनाने का एक महायज्ञ प्रारंभ हुआ है।

मुख्यमंत्री ने कहा, देश को लगातार बेहतर खिलाड़ी मिल रहे हैं और केंद्र सरकार की ओर से खिलाड़ियों को बेहतर सुविधाएं मुहैया करवाई जा रही हैं। देश पूरी तरीके से ओलंपिक-2036 की मेजबानी के लिए तैयार है। हम चाहते हैं कि हमें ये मेजबानी मिले। हमारे खिलाड़ी अपनी तैयारी करें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार इसी प्रेरणा से दिल्ली को खेल राजधानी बनाने के लिए पूरी शक्ति से कार्य कर रही है। युवा खिलाड़ियों को बेहतर सुविधाएं और नए अवसर देने के लिए हमारी प्रतिबद्धता अटल है। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार राजधानी को फिट, निरोग और हरित बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

भगवान जगन्नाथ वॉलपेपर और माता सुभद्रा के पवन रथ यात्रा में मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता शामिल हुई

मुख्य संवाददाता

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और माता सुभद्रा के श्रीचरणों में कोटि-कोटि नमन किया। मुख्यमंत्री रविवार को दिल्ली के कमला नगर में आयोजित भगवान जगन्नाथ की पावन रथ यात्रा में सहभागी बनी। मुख्यमंत्री ने इस मौके पर कहा कि आज रथ यात्रा में सहभागी बनकर मन और आत्मा को अद्भुत शांति, ऊर्जा और आनंद की अनुभूति हो रही है। रथ खींचना केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि प्रभु की सेवा और समाज कल्याण का एक दिव्य माध्यम है, जो हमें आत्मिक शुद्धता और सच्चे कर्तव्य पथ की ओर अग्रसर करता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह अलौकिक रथ यात्रा भारत की सांस्कृतिक एकता, सामाजिक समरसता और सनातन परंपराओं की अद्वितीय शक्ति का प्रतीक है। उन्होंने महाप्रभु से प्रार्थना कि वे हम सभी को संयम, सेवा और राष्ट्र निर्माण के मार्ग पर आगे बढ़ने की शक्ति और संकल्प को पूरा करने का सामर्थ्य प्रदान करें।

श्री राम सेवा संघ द्वारा निशुल्क दांतों की जांच कैंप आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। श्री राम सेवा संघ द्वारा निशुल्क दांतों की जांच कैंप के दौरान कानूनी सेवक संदीप बत्रा एवं अधिवक्ता बिजेंद्र आंतिल को विशिष्ट अतिथि के रूप में स्वागत किया गया इस अवसर पर सैंकड़ों नागरिकों को दांतों की जांच कराने के साथ साथ जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण सोनीपत की कार्य प्रणाली से अवगत करवाया गया राष्ट्रीय स्तर का हेल्प लाइन नंबर 15100 तथा जिला स्तर पर 01302220057 लैंड लाइन नंबर एवं कार्यालय का पत्ता भी दिया गया इस अवसर पर संस्था की तरफ से कैंप में शामिल अतिथियों एवं अन्य नागरिकों को उपहार स्वरुप पौधे भी समर्पित किए गए।

एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था ने आर्मी कैंट में किया योग शिविर का आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था अध्यक्ष योगेन्द्र कुमार साहू योगा प्रभारी धर्मा कुमारी के नेतृत्व में संस्था के माध्यम से ग्यारहवें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर हल्द्वानी आर्मी कैंट में योग शिविर का आयोजन किया गया

इस दौरान एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था योगा प्रभारी धर्मा कुमारी सदस्य मनीष साहू ने संयुक्त रूप से कहा कि स्वस्थ जीवन के लिए हमें योग को अपनाना बहुत ही जरूरी है क्योंकि योग वह क्रिया है जो शरीर के सभी अंगों की गतिविधियों और सांसों को नियंत्रित कर शरीर के साथ मन मस्तिक को प्रकृति से जोड़कर आन्तरिक और बाहरी ताकत को बढ़ावा देने का कार्य करता है और नियमित रूप से योग करने वाले व्यक्तियों के लिए योग एक बहुत ही अच्छा अभ्यास है जो सभी प्रकार की बीमारियों से मुक्ति दिलाकर स्वस्थ जीवन शैली के साथ बेहतर जीवन जीने में हमारी सहायता कर हमें योग एकाग्रता सहनशीलता अध्यात्मिकता सामाजिकता से परिपूर्ण कर धर्महित समाजहित भारतहित में कार्य करने के लिए हमेशा प्रेरित करता है इसलिए योग प्राचीन समय से मनुष्य को प्रकृति द्वारा दिया गया बहुत ही महत्वपूर्ण और अनमोल उपहार है जो जीवन भर मनुष्य को दृढ़ संकल्पित कर प्रकृति के साथ हमेशा जोड़कर रखता है इसीलिए तो योग व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण का कार्य स्थापित करता है

इस दौरान योग करने में समस्त सैन्य अधिकारी गण सहित सैकड़ों जवान उपस्थित रहे

इस दौरान योगा कराने में एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था अध्यक्ष योगेन्द्र कुमार साहू योगा प्रभारी धर्मा कुमारी मनीष साहू जया जोशी पूर्णिमा रजवार रोहतास प्रजापति सूरज मिस्त्री दीपक कुमार सुशील राय उपस्थित रहे।

नाद मंजरी में बिलासपुर की बेटियों ने मचाई धूम, जश्न ऐ ज़बा कार्यक्रम में पहले दो स्थानों पर जमाया कब्ज़ा

परिवहन विशेष न्यूज

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। छत्तीसगढ़ प्रदेश में नृत्यधारा डांस अकादमी ने बहुत ही कम समय में मिसाल पेश की है। आँचल पांडेय इस अकादमी की निर्देशिका हैं जो स्वयं अंतर्राष्ट्रीय कथक एवं ओड़सी नृत्यांगना हैं जिन्होनें अपनी कला की प्रस्तुति ना ही केवल छत्तीसगढ़, बल्कि मलेशिया, सिंगापुर, जापान, कोरिया, अफ्रीका, अरब, दुबई के अलावा देशभर में दी है।

बिलासपुर के देवकीनंदन दीक्षित सभा भवन में आयोजित ज़श्न ऐ ज़बा प्रतियोगिता में देशभर के 450 से अधिक कलाकारों ने हिस्सा लिया एवं प्रतिभागी कलाकारों के साथ ही देश भर के संगीत व सांस्कृतिक प्रेमी शामिल हुए। सास्थी मौर्य, अभिमान्या सिंह, अनिका बाजपेयी, स्वस्तिका दुबे, आरोही राठौर, नीमरित पात्रा, आन्वी वर्मा, जे खुशी राव, डेलीशा मिश्रा, आस्था साहू, श्रेया पाण्डेय, श्रीजल साहू, भाव्या सिंह, किरण देवांगन, शहर की बेटियां ने इस प्रतियोगिता में भाग लेकर पहला एवं दूसरा स्थान प्राप्त कर अभूतपूर्व उपलब्धि हासिल की।

वहीं आंचल पाण्डेय को नादार्चन प्रतिभा सम्मान से सम्मानित किया गया। बिलासपुर एवं छत्तीसगढ़ के लिए यह बहुत गर्व की बात है। आंचल का कहना है कि इस विधा को नृत्यधारा अकादमी के माध्यम से और भी शहर के बच्चों तक पहुंचाना चाहती हूं ताकि अपनी जड़ से भावी पीढ़ी जुड़ी रहे और उन्हें हमारी संस्कृति और सभ्यता के बारे में बता पाऊं। इसके लिये मैं प्रयासरत हूं एवं जो बच्चे बहुत ही टैलेंटेड है लेकिन वह डांस सीखने के लिए आर्थिक रूप से सक्षम नहीं है वैसे जरूरतमंद बच्चों को मेरा प्रयास है कि उन्हें निशुल्क प्रशिक्षण दूं एवं उनके अंदर के टैलेंट को इसी तरह देश दुनिया में पहुंचा सकूं।

आंचल पांडेय ने अब कला की बारीकियों और घरानो व परंपराओं खूबियों को नवोदित कलाकारों के बीच बांटने और उसे एक मजबूत प्लेटफार्म देने के उद्देश्य से नृत्य अकादमी की शुरुआत की है। अकादमी में नवोदित कलाकार की कला और बारीकी सीखने के साथ ही कड़ी मेहनत करना और अपने अंदाज वह अपने दम पर आगे बढ़ने की सीख ले रही है। आंचल बताती है कि डांस एकेडमी के जरिए वह अपनी कला को इतना प्रसारित करना चाहती है कि हर एक बच्चा जो नृत्य सीखने के लिए आ रहा है उनमें सभी कलाएं कूट कूट कर भरी हो, इसलिए वह कथक एवं ओडीसी के साथ लोक नृत्य शास्त्रीय नृत्य व सभी प्रकार के नृत्य से परिचित करा रही हैं।

आँचल पांडेय वर्तमान में स्वयं द्वारा स्थापित एनजीओ नृत्यधारा वेलफेयर फाउंडेशन के तहत समृद्ध भारतीय संस्कृति, कला, संगीत और नृत्य की बेहतरी के लिए काम कर रही हैं। वह अपने काम और जिम्मेदारियों के प्रति अत्यधिक प्रतिबद्ध और समर्पित हैं। उनका एकमात्र लक्ष्य छात्रों और नई प्रतिभाओं को तैयार करना और उन्हें मंच प्रदान करना है।

अमेरिका-इजरायल को चुनौती देता ईरान और भारतीय राजनीति का पतन

(आलेख : संजय पराते)

जब अमेरिका के समर्थन से इजरायल ने बिना किसी कारण और उकसावे के ईरान पर हमला किया था, तो लग रहा था कि इजरायल की सामरिक शक्ति के आगे ईरान ढह जायेगा और समर्पण कर देगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ और किसी ने सोचा भी न था कि अमेरिका-इजरायल गठबंधन के आगे ईरान इस तरह तनकर खड़ा हो जाएगा कि इजरायल को दिन में ही तारे दिखने लगे। मीडिया द्वारा ईरान की बर्बादी की कितनी भी सच्ची झूठी तस्वीरें दिखाई जाएं, लेकिन सच्चाई यही है कि इजरायल में ईरान ने जितनी तबाही मचाई है, उसकी कल्पना भी अमेरिका और इजरायल ने मिलकर नहीं की थी। नेतन्याहू की विस्तारवादी नीतियों का नतीजा इजरायल की निर्दोष जनता को भुगतना पड़ रहा है और ईरानी हमलों से बचने के लिए उसे बंकरों में भी जगह नहीं मिल रही है।

लेकिन यह हमला क्यों? इजरायल का आरोप है कि ईरान परमाणु बम बना रहा है। यह आरोप वह इजरायल लगा रहा है, जिसने खुद परमाणु बम बना लिया है और फिलिस्तीनियों के कत्लेआम का अपराधी है। याद कीजिए कि ऐसा ही आरोप इराक पर लगाकर सद्दाम हुसैन की हत्या की गई थी और बाद में पता चला कि अमेरिकी आरोपों में कोई दम नहीं था और यह आरोप केवल सद्दाम को सत्ता से हटाने के लिए लगाया है रहा था। ईरान के मामले में भी ठीक ऐसा ही है, क्योंकि इस हमले से पहले तक अमरीकी ख़ुफ़िया विभाग के प्रमुख तुलसी गबार्ड लगातार बयान दे रहे थे कि ईरान ने परमाणु बम नहीं बनाया है, ना ही उसके पास इसे बनाने की क्षमता है। ऐसा ही बयान अंतर्राष्ट्रीय नाभिकीय ऊर्जा एजेंसी के डायरेक्टर जनरल रफाइल ग्रॉसी ने अभी दो दिन पहले ही दिया है कि ईरान परमाणु बम नहीं बना रहा और परमाणु बिजली बनाने के अपने सभी केंद्रों की जाँच में सहयोग कर रहा है।

अमरीकी ख़ुफ़िया विभाग के प्रमुख और अंतर्राष्ट्रीय नाभिकीय ऊर्जा एजेंसी के डायरेक्टर जनरल के बयान विश्वसनीय हैं, क्योंकि ईरान अंतर्राष्ट्रीय संधि परमाणु अप्रसार संधि पर दस्तखत कर चुका है, जो किसी देश को परमाणु बम बनाने से बाधित करता है। अमरीका सहित संयुक्त राष्ट्र के 5 स्थायी सदस्यों रूस, चीन, फ़्रांस और ब्रिटेन के साथ हुए करार में भी ईरान यह गारंटी दे चुका है कि वह कोई परमाणु बम नहीं बनाएगा। उसका परमाणु कार्यक्रम नितांत शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए है और ऐसा करने का उसके पास हक है। अभी कुछ दिनों पहले तक खुद अमरीका और ईरान के बीच वार्ता चल रही थी और स्वयं ट्रम्प ने वार्ता में अच्छी प्रगति होने की जानकारी दी थी।

साफ है कि ईरान के पास परमाणु बम होने का आरोप तो एक बहाना है, असली बात ईरान के तेल को हथियाना है, दुनिया के बाजार को नए सिरे से बांटना है, दिवालिया होती अमेरिकी अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाना है। ट्रंप ने पूरी दुनिया के खिलाफ टैरिफ के नाम पर जो व्यापार युद्ध छेड़ने की कोशिश की थी, उसका क्या हश्र हुआ, सब देख रहे हैं। इससे पैदा शर्मिंदगी से निकलने की यह आड़ है। पूरी दुनिया को फिर से धौंस में लेने और साम्राज्यवादी लुटेरों की चारागाह बनाने की कवायद है। एक ऐसी दुनिया बनाने की हताश कोशिश है, जहां बिना किसी नियम-नैतिकता के बर्बर और असभ्य राज कर सकें और इस पृथ्वी की प्राकृतिक संपदा को अपने मुनाफे के लिए लूट सके।

लेकिन दुनिया को लूटने की साम्राज्यवाद की कोशिशों को कभी स्थायित्व नहीं मिला, न मिलेगा। इसे वियतनाम ने चुनौती दी है, क्यूबा ने दी है। सोवियत संघ के खात्मे और दुनिया के एक ध्रुवीय होने के बाद भी साम्राज्यवादी अमेरिका का सपना पूरा नहीं हुआ है, पूरा नहीं होगा। शोषण के खिलाफ लड़ने वाली सबसे कमजोर ताकत से भी उसे जबरदस्त चुनौती मिली है, क्योंकि मानवीय सभ्यता उपनिवेशवाद की जंजीरों को तोड़कर आगे बढ़ रही है, आगे बढ़ेगी।

लेकिन इस विश्व परिदृश्य में भारत की स्थिति क्या है, भारत कहां खड़ा है? एक समय था, जब दुनिया में भारत की आवाज को शोषित उत्पीड़ितों की आवाज माना जाता था। आज इस चुप्पी की जगह एक मौन पसरा है। एक समय था, जब भारत फिलिस्तीनी पक्ष की मुखर आवाज था। आज वह भारत एक कठपुतली की तरह अमेरिका के इशारे पर फिलिस्तीन पर इजरायल के गमले को रोकने के संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रस्ताव पर तटस्थ है, जबकि ब्रिटेन, कनाडा और जापान, नेपाल, भूटान, मालदीव, श्रीलंका, सार्क, ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के सभी सदस्य देशों ने युद्ध विराम के पक्ष में वोट दिया है। पूरी दुनिया की शांतिकामी जनगण से अपने आपको काटने का काम नरेंद्र मोदी की सरकार ने किया है। केंद्र में काबिज यह पहली सरकार है, जिसने भारत में फिलिस्तीन के पक्ष में होने वाले प्रदर्शनों का दमन किया है और आंदोलनकारियों को गिरफ्तार किया है। केंद्र में बैठी मोदी सरकार फिलिस्तीन को एक शत्रु-राष्ट्र मान रही है।

यही रवैया ईरान-इजरायल युद्ध के बारे में है। ईरान हमारा परंपरागत मित्र रहा है, जो कश्मीर के मामले में हर नाजुक समय में हमारे साथ खड़ा रहा है। लेकिन भारतीय जनगण आज शर्मिंदा है कि भारत आज इजरायल-अमेरिका गठजोड़ के पक्ष में खड़ा है। मोदी सरकार का यह रवैया उन अटलबिहारी बाजपेयी की भी तौहीन है, जिनके बिना नरेंद्र मोदी आज प्रधानमंत्री होने का सपना भी नहीं देख सकते थे। नरेंद्र मोदी ने भारत की गुट निरपेक्षता की विदेश नीति को मुस्लिम विरोध की नीति पर लाकर पटक दिया है। विश्व पटल पर भारतीय राजनीति का इससे बड़ा पतन और क्या हो सकता है?

(लेखक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं)

पुराने दोस्त आज कई दिनों बाद मिले — बहुत अच्छा लगा। हमने खूब मजे किए, अपनी भावनाएं साझा कीं और पूरा समय एन्जॉय किया। कभी-कभी अपनों के लिए भी समय निकालना बहुत जरूरी होता है।

ओलंपिक दिवसः समरसता, साहस और सपनों की संकल्प-यात्रा

[ओलंपिक: जहाँ हार नहीं होती, सिर्फ़ नए आरंभ होते हैं]

जब दुनिया की धड़कनें तनाव, विभाजन और असहिष्णुता की आँधी में थम-सी जाती हैं, तब एक लौ चुपके से जल उठती है—ओलंपिक की मशाल। यह सिर्फ़ आग नहीं, बल्कि मानवता का संकल्प है, जो सीमाओं को तोड़ता है, दिलों को जोड़ता है और एक स्वर में कहता है कि खेल सिर्फ़ मैदान की जीत नहीं, बल्कि जीवन की उड़ान है। 23 जून को मनाया जाने वाला अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक दिवस इस ज्योति को हर दिल तक पहुँचाता है। यह दिन केवल खेलों का उत्सव नहीं, बल्कि समानता, साहस, समरसता और सपनों का महाकुंभ है। यह वह पल है जो हमें याद दिलाता है कि एक रेस में दौड़ने वाला हर इंसान, चाहे वह हारे या जीते, अपने भीतर की असीम संभावनाओं को जीत लेता है। यह दिन हमें प्रेरित करता है कि हम न सिर्फ़ मैदान पर, बल्कि जीवन के हर मोड़ पर उत्कृष्टता, मैत्री और सम्मान के ओलंपिक मूल्यों को जियें।

अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) ने 1948 में ओलंपिक दिवस की नींव रखी, जो 23 जून 1894 को बैरन पियरे डी कूबर्तिन द्वारा पेरिस के सोरबोन विश्वविद्यालय में देखे गए आधुनिक ओलंपिक के सपने से प्रेरित थी। यह सपना आज 200 से अधिक देशों को एक मंच पर लाता है, जहाँ खेल न केवल प्रतिस्पर्धा, बल्कि समानता, एकता और समावेशिता का प्रतीक है। 2025 की थीम "खेल के मैदान को समान बनाना, सबको साथ लेकर चलना" इस भावना को और गहरा करती है, जो हर व्यक्ति, चाहे वह किसी भी पृष्ठभूमि का हो, को खेल के माध्यम से जोड़ने और सशक्त बनाने का आह्वान करती है। आईओसी का लक्ष्य खेल को हर जीवन का हिस्सा बनाना और इसके मूल्यों—सम्मान, मित्रता, उत्कृष्टता—को विश्व भर में फैलाना है। यह दिवस "मूव, लर्न, डिस्कवर" के संदेश के साथ लाखों लोगों को प्रेरित करता है। 2024 की थीम "लेट्स मूव एंड सेलिब्रेट" ने विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के साथ मिलकर लोगों को रोज़ाना 30 मिनट की शारीरिक गतिविधि के लिए प्रोत्साहित किया, क्योंकि डब्ल्यूएचओ के अनुसार, 1.4 बिलियन लोग अपर्याप्त शारीरिक गतिविधि के कारण मोटापा, डायबिटीज और हृदय रोग जैसी समस्याओं का सामना कर रहे हैं।

अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक दिवस समावेशिता और एकता का प्रतीक है। ओलंपिक के पाँच रंगीन छल्ले—नीला, पीला, काला, हरा, लाल—पाँच महाद्वीपों को जोड़ते हैं, नस्ल, धर्म, लिंग की सीमाओं को तोड़कर सपनों को उड़ान देते हैं। 2024 पेरिस ओलंपिक में भारत ने 117 खिलाड़ियों के साथ 6 पदक जीते—नीरज चोपड़ा का भाला फेंक रजत, मानु भाकर के दो निशानेबाज़ी कांस्य, स्वप्निल कुसाले का राइफल कांस्य, हॉकी टीम का कांस्य और अमन सहरावत का कुश्ती कांस्य। टोक्यो 2020 के 7 पदकों (1 स्वर्ण, 2 रजत, 4 कांस्य) ने भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन दिखाया, जिसमें नीरज, मीराबाई चानू, पी.वी. सिंधु और हॉकी टीम चमके। पेरिस में विनेश फोगाट का अयोग्य ठहराया जाना और कई चौथे स्थान निराशाजनक रहे, पर भारत की 65% युवा आबादी भविष्य की उम्मीद है। ओलंपिक 2024 का मंत्र "हार्मनी इन डाइवर्सिटी" भारत को बेहतर सुविधाओं और प्रशिक्षण के साथ विश्व मंच पर और ऊँचाइयाँ छूने की प्रेरणा देता है।

यह दिन हमें सिर्फ़ खेलों की बात नहीं

करता, बल्कि जीवन की समग्रता की बात करता है। आज जब मानसिक तनाव, डिप्रेशन और जीवनशैली रोग युवाओं को घेर रहे हैं, खेल एक ऐसा माध्यम है जो शारीरिक और मानसिक दोनों स्तरों पर हमें मज़बूत बनाता है। डब्ल्यूएचओ के अनुसार, नियमित शारीरिक गतिविधि से मानसिक तनाव 40% तक कम हो सकता है। खेल हमें आत्मविश्वास, समय प्रबंधन, नेतृत्व और टीम वर्क जैसे गुण सिखाते हैं, जो जीवन के हर क्षेत्र में काम आते हैं। भारत की प्राचीन धरोहर योग, जो अब ओलंपिक आयोजनों में शामिल होने की दिशा में है, इसका जीवंत उदाहरण है। योग न केवल शारीरिक लचीलापन बढ़ाता है, बल्कि मन को शांति और संतुलन भी देता है।

भारत जैसे देश के लिए यह दिन एक क्रांति का आह्वान है। यहाँ प्रतिभा की कमी नहीं, लेकिन अवसरों और संसाधनों की कमी अक्सर सपनों को पंख लगने से रोकती है। ग्रामीण क्षेत्रों में खेल सुविधाओं का अभाव, लड़कियों के लिए सामाजिक बाधाएँ और खेल को करियर के रूप में कम महत्व देना कुछ ऐसी चुनौतियाँ हैं जिन्हें हमें दूर करना होगा। सरकार की योजनाएँ जैसे "खेलो इंडिया" और "टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम" (टीओपीएस – टॉप्स) ने इस दिशा में कदम उठाए हैं, लेकिन ज़रूरत है सामुदायिक स्तर पर जागरूकता और भागीदारी की। स्कूलों में खेलों को अनिवार्य करना, स्थानीय स्तर पर कोचिंग सेंटर स्थापित करना और माता-पिता को बच्चों को खेलों के लिए प्रोत्साहित करना इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकते हैं।

ओलंपिक दिवस हमें असफलता से डरना नहीं सिखाता। मिल्खा सिंह, जिन्होंने 1960 रोम ओलंपिक में 400 मीटर दौड़ में चौथा स्थान हासिल किया, या दीपा करमाकर, जिन्होंने 2016 रियो ओलंपिक में जिमनास्टिक्स में चौथे स्थान पर रहकर भी इतिहास रचा, ये वो नायक हैं जो हमें सिखाते हैं कि हार अंत नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत है। यह भावना न केवल एथलीटों, बल्कि हर उस व्यक्ति के लिए प्रेरणा है जो जीवन में चुनौतियों का सामना करता है।

विश्व भर में इस दिन को दौड़, साइकिल रैली, खेल प्रदर्शनियों और कार्यशालाओं के साथ मनाया जाता है। भारत में उत्तराखंड, तमिलनाडु और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में स्कूलों और समुदायों द्वारा रंगारंग आयोजन किए जाते हैं। ये आयोजन न केवल खेलों को बढ़ावा देते हैं, बल्कि सामाजिक एकता को भी मज़बूत करते हैं। लेकिन हमें यह समझना होगा कि ओलंपिक दिवस सिर्फ़ एक दिन का उत्सव नहीं, बल्कि एक जीवनशैली का आलिंगन है। यह हमें आह्वान करता है कि हम अपने दैनिक जीवन में खेलों को शामिल करें, चाहे वह सुबह की सैर हो, योग हो या कोई सामुदायिक खेल।

यह दिन पर्यावरण के प्रति हमारी ज़िम्मेदारी को रेखांकित करता है। पेरिस 2024 ओलंपिक ने "सस्टेनेबल गेम्स" का लक्ष्य रखा था, जिसमें कार्बन उत्सर्जन को 50% तक कम करने की योजना थी। भारत जैसे देश, जहाँ पर्यावरणीय चुनौतियाँ गंभीर हैं, के लिए यह प्रेरणा है कि हम खेल आयोजनों को पर्यावरण के अनुकूल बनाएँ। स्थानीय स्तर पर पेड़ लगाने, प्लास्टिक मुक्त आयोजनों और साइकिलिंग जैसे पर्यावरण हितैषी खेलों को बढ़ावा देना इस दिशा में प्रभावी कदम हो सकता है।

ओलंपिक मशाल वह ज्योति है जो हमें अंधेरे में भी रास्ता दिखाती है। यह हमें याद दिलाती है कि जब तक हम कोशिश करते रहेंगे, तब तक कोई लक्ष्य असंभव नहीं। अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक दिवस एक निमंत्रण है—एक स्वस्थ शरीर, सशक्त मन और एकजुट विश्व के निर्माण का निमंत्रण। इस दिन संकल्प लें कि हम न केवल मैदान पर, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में ओलंपिक भावना को जियेंगे। हम दौड़ेंगे, गिरेंगे, फिर उठेंगे और अपने सपनों को हकीकत बनाएँगे। क्योंकि यही ओलंपिक का असली स्वर्ण है—न डरने की हिम्मत, न थमने का हौसला और न रुकने का जज़्बा। यही इस दिन का मोल है, यही इसका मोल है, और यही हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए सबसे अनमोल विरासत है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत",

गांव भाटला में एससी समाज के ग्यारह लोगों ने गांव का माहौल खराब होने की

आज अंतरराष्ट्रीय विधवा दिवस पर विशेष : बंद नहीं आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा की समस्याओं से जूझना

इस देश की विधवाओं की सबसे बड़ी समस्या आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा से जूझना है। खासकर ऐसी महिलाएं जिनके लिए उनका पति ही उनके लिए परमेश्वर था।

वैसे भी जीवन में सबसे बड़ा दुख किसी अपने को खोना है, लेकिन जब कोई अपने जीवनसाथी को खोता है, तो उस दुःख को बयां कर पाना मुश्किल है। खासकर जब कोई महिला अपने जीवनसाथी यानी पति को खोती है, उस वक्त दुःख के साथ उस महिला को आर्थिक के साथ सामाजिक चुनौतियों से भी जूझना पड़ता है। - - - -और विधाओं की इसी तरह की तमाम समस्याओं से निजात दिलाने के उद्देश्य से ही हर साल 23 जून को अंतरराष्ट्रीय विधवा दिवस मनाया जाता है, जिससे विधवा महिलाओं को सशक्त किया जा सके।

गौरतलब है कि दुनियाभर में कई विधवा महिलाएं गरीबी, भेदभाव और सामाजिक बहिष्कार का सामना करती हैं। इसी लिए इस दिन को मनाने का मुख्य उद्देश्य विश्व स्तर पर विधवाओं को सशक्त बनाने के महत्व को बढ़ावा देना है।

विधवा महिलाओं की समस्याओं को लेकर मनाए जाने वाले इस अंतरराष्ट्रीय विधवा दिवस को पहली बार 23 जून-2011 को संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता दी गई थी। जिसमें वैश्विक स्तर पर विधवाओं के सामने आने वाली कठिनाइयों, अधिकारों और कल्याण करने के उद्देश्य से इस दिन को मनाने की मान्यता मिली थी। ताकि विधवा महिलाओं को सशक्त बनाया जा सके।

बता दें कि अंतरराष्ट्रीय विधवा दिवस की स्थापना विभिन्न संगठनों के प्रयासों से प्रेरित थी। जिसमें मुख्य रूप से लूम्बा फाउंडेशन भी शामिल था। दरअसल यह एक अंतरराष्ट्रीय चैरिटी है, जो विधवाओं के अधिकारों के हक के लिए लड़ती है। हालांकि, संयुक्त राष्ट्र द्वारा इसे स्वीकार किए जाने से पहले ही लूम्बा फाउंडेशन 2005 से ही इस दिन को मना रहा है। इस फाउंडेशन की स्थापना लंदन में हाउस ऑफ लॉर्ड्स के सदस्य राजिंदर पॉल लूम्बा ने विकासशील देशों में विधवाओं की समस्याओं के समाधान के लिए किया था।

अगर समाज की बात करें तो कई बार देखा गया है कि विधवा महिलाओं के पास आय का भी उचित जरिया नहीं होता है, जिससे वो खुद और परिवार का पालन कर सके। अंतरराष्ट्रीय विधवा दिवस का मुख्य उद्देश्य दुनियाभर में विधवाओं के जीवन को बेहतर बनाना है। इसके अलावा इस दिन का उद्देश्य ये भी है कि विधवाओं को जागरूक कर उन्हें उचित रोजगार, आय, पेंशन और सामाजिक सुरक्षा आदि सुविधाएं प्रदान करने का प्रयास किया जाए। लेकिन भारत जैसे देशों के संदर्भ में यह प्रयास

आज अंतरराष्ट्रीय विधवा दिवस पर विशेष : बंद नहीं आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा की समस्याओं से जूझना

सुनील वाजपेई

इस देश की विधवाओं की सबसे बड़ी समस्या आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा से जूझना है। खासकर ऐसी महिलाएं जिनके लिए उनका पति ही उनके लिए परमेश्वर था।

वैसे भी जीवन में सबसे बड़ा दुख किसी अपने को खोना है, लेकिन जब कोई अपने जीवनसाथी को खोता है, तो उस दुःख को बयां कर पाना मुश्किल है। खासकर जब कोई महिला अपने जीवनसाथी यानी पति को खोती है, उस वक्त दुःख के साथ उस महिला को आर्थिक के साथ सामाजिक चुनौतियों से भी जूझना पड़ता है। - - - -और विधाओं की इसी तरह की तमाम समस्याओं से निजात दिलाने के उद्देश्य से ही हर साल 23 जून को अंतरराष्ट्रीय विधवा दिवस मनाया जाता है, जिससे विधवा महिलाओं को सशक्त किया जा सके।

गौरतलब है कि दुनियाभर में कई विधवा महिलाएं गरीबी, भेदभाव और सामाजिक बहिष्कार का सामना करती हैं। इसी लिए इस दिन को मनाने का मुख्य उद्देश्य विश्व स्तर पर विधवाओं को सशक्त बनाने के महत्व को बढ़ावा देना है।

विधवा महिलाओं की समस्याओं को लेकर मनाए जाने वाले इस अंतरराष्ट्रीय विधवा दिवस को पहली बार 23 जून-2011 को संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता दी गई थी। जिसमें वैश्विक स्तर पर विधवाओं के सामने आने वाली कठिनाइयों, अधिकारों और कल्याण करने के उद्देश्य से इस दिन को मनाने की मान्यता मिली थी। ताकि विधवा महिलाओं को सशक्त बनाया जा सके।

बता दें कि अंतरराष्ट्रीय विधवा दिवस की स्थापना विभिन्न संगठनों के प्रयासों से प्रेरित थी। जिसमें मुख्य रूप से लूम्बा फाउंडेशन भी शामिल था। दरअसल यह एक अंतरराष्ट्रीय चैरिटी है, जो विधवाओं के अधिकारों के हक के लिए लड़ती है। हालांकि, संयुक्त राष्ट्र द्वारा इसे स्वीकार किए जाने से पहले ही लूम्बा फाउंडेशन 2005 से ही इस दिन को मना रहा है। इस फाउंडेशन की स्थापना लंदन में हाउस ऑफ लॉर्ड्स के सदस्य राजिंदर पॉल लूम्बा ने विकासशील देशों में विधवाओं की समस्याओं के समाधान के लिए किया था।

अगर समाज की बात करें तो कई बार देखा गया है कि विधवा महिलाओं के पास आय का भी उचित जरिया नहीं होता है, जिससे वो खुद और परिवार का पालन कर सके। अंतरराष्ट्रीय विधवा दिवस का मुख्य उद्देश्य दुनियाभर में विधवाओं के जीवन को बेहतर बनाना है। इसके अलावा इस दिन का उद्देश्य ये भी है कि विधवाओं को जागरूक कर उन्हें उचित रोजगार, आय, पेंशन और सामाजिक सुरक्षा आदि सुविधाएं प्रदान करने का प्रयास किया जाए। लेकिन भारत जैसे देशों के संदर्भ में यह प्रयास विधवा महिलाओं के हित में बहुत सार्थक प्रतीत नहीं होता क्योंकि सको विधवाएं ऐसी हैं जो आज भी इस दिशा में सरकार द्वारा विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के रूप में किए जाने वाले प्रयासों से वंचित हैं।

पिता का पस्त मन और पुत्रों की पश्चिमी व्यस्तता

एक पिता की विदाई, और समाज की परीक्षा

लखनऊ के एक रिटायर्ड कर्नल ने अपने बेटों को एक मार्मिक पत्र लिखकर आत्महत्या कर ली। दोनों बेटे अमेरिका में बसे थे और मां की मृत्यु पर भी पूरी संवेदनशीलता नहीं दिखा सके। पिता ने पत्र में लिखा कि उन्होंने देश को सम्मान दिया लेकिन समाज को असंवेदनशील पुत्र दे दिए। यह घटना केवल एक आत्महत्या नहीं, बल्कि भारतीय पारिवारिक मूल्यों के पतन का आईना है। आधुनिकता के दौड़ में रिश्तों की संवेदना और बुजुर्गों का सम्मान कहीं पीछे छूटता जा रहा है।

— प्रियंका सौरभ

एक फौजी पिता की वर्दी सलामी के लिए नहीं, बल्कि सम्मान और समर्पण के प्रतीक होती है।

लेकिन जब वही पिता अपनी अंतिम सांस लेने से पहले अपनी ज़िंदगी के सबसे कड़वे शब्दों में पत्र लिखकर खुद को गोली मार ले, तो यह केवल आत्महत्या नहीं होती — यह एक सामाजिक मृत्यु होती है। लखनऊ की एक पॉश कॉलोनी में रहने वाले रिटायर्ड कर्नल ने ऐसा ही किया। दो बेटे, एक अमेरिका में कॉरपोरेट नौकरी में व्यस्त, दूसरा अपने परिवार के साथ जीवन में लीन। पिता और मां ने पूरी ज़िंदगी इन बेटों की परवरिश में बिता दी थी। ऊँची शिक्षा, बेहतर जीवन, विदेशी स्थायित्व, दुनिया की सुविधाएं — सब दिया, लेकिन आखिर में अकेलेपन का उत्तरदायित्व भी उन्हीं मां-बाप के हिस्से आया।

कहते हैं, हर पिता चाहता है कि बेटा उससे बड़ा बने, लेकिन शायद ही कोई पिता चाहता है कि बेटा उसे भूल जाए। जिस बेटे को कभी बुखार आने पर पिता रातभर सिरहाने बैठा रहा हो, वही बेटा मां की मौत पर कह दे कि "पापा की मौत में आ जाऊंगा" — तो वहां केवल संबंध नहीं टूटते, आत्मा टूट जाती है। उस पिता ने पत्र में कोई गाली नहीं दी, कोई ताना नहीं दिया, कोई आक्रोश नहीं दिखाया। उन्होंने बस यह कहा कि शायद मेरी परवरिश में कोई कमी रह गई, क्योंकि मैंने समाज को सभ्य नागरिक नहीं, असंवेदनशील संतति दी।

यह वाक्य जितना सीधा है, उतना ही खौफनाक है। यह एक पिता का नहीं, एक पीढ़ी का दुःख है। यह कहानी किसी एक कर्नल की नहीं है। यह हर उस मां-बाप की है, जो अपने बच्चों को उड़ान देना चाहते हैं, लेकिन बुढ़ापे में लौटती हुई परछाइयां भी नहीं देख पाते। यह उस भारतीय समाज की है, जो अमेरिका जाने वाले बेटे पर गर्व करता है, लेकिन वहीं मां-बाप को वृद्धाश्रम में छोड़ने पर खामोश हो जाता है। यह उस संवेदनहीनता का बयान है, जो आधुनिकता के मुखौटे के पीछे रिश्तों को घोंट रही है।

पिता की चिट्ठी ने लिखा कि अब उसकी लाश के पास भी कोई इंतज़ार नहीं करेगा, इसलिए वह खुद ही चला जाता है — ताकि कोई मजबूरी न हो, कोई बहाना न बने, कोई बेटा यूं न कह सके कि 'फ्लाइट नहीं मिली'। यह वाक्य किसी खबर का हिस्सा नहीं, एक सांस्कृतिक हार का एलान है। वह पिता जिसने युद्ध में दुश्मनों से लड़ा, जिसने सेवा में राष्ट्र को प्राथमिकता दी, वह अपने ही घर में अकेलेपन से हार गया। उसकी आखिरी इच्छा थी कि उसके तमगे और तस्वीरें बटालियन को लौटा दी जाएं। शायद वो ये नहीं चाहता था कि उसके बच्चों के ड्राइंग रूम में झूठी स्मृति के रूप में उसकी तस्वीर टंगी रहे।

हम एक ऐसे समाज में जी रहे हैं, जहां हर त्योहार पर "परिवार के साथ समय बिताएं" जैसे विज्ञापन चलाए जाते हैं, लेकिन असल में माता-पिता के पास समय बिताने वाला कोई नहीं होता। वीडियो कॉल पर रिश्ता निभाया जाता है, जन्मदिन पर केक भेजकर ज़िम्मेदारी पूरी मानी जाती है, और अंत्येष्टि में आना 'काम की व्यस्तता' के आधार पर टाला जा सकता है। कर्नल साहब के बेटे के लिए यह सिर्फ 'एक और दिन' रहा होगा। लेकिन उस दिन ने एक पिता को चुपचाप शहीद कर दिया — इस बार बिना दुश्मन के, बिना युद्ध के, बिना आदेश के।

जिस समाज में माताएं बेटे को यह सिखाती थीं कि बुढ़ापे में मां-बाप भगवान होते हैं, उस समाज में बेटे मां के निधन पर आने से कतराने लगे हैं। यह संस्कारों की नहीं, अवसरवादिता की पीढ़ी है। जहां "हमारी प्राथमिकताएं बदल गई हैं" जैसे वाक्य, रिश्तों की कब्र पर पत्थर बनकर रख दिए गए हैं। रिश्ते अब भावना से नहीं, सहूलियत से निभाए जाते हैं। कोई फ़ोन करेगा तो बात होगी। कोई कहेगा तो आऊंगा। कोई मरेगा तो सोचूंगा। यही हमारी आधुनिक संस्कृति है, जो रिटायरमेंट के बाद मां-बाप को केवल एक खर्च या बोझ समझती है।

क्या हम सोचते हैं कि हमारे बच्चों को हम जैसा ही व्यवहार मिलेगा? क्या जो आज बोया जा रहा है, वही कल काटा नहीं जाएगा? बेटों ने क्या सिर्फ इसलिए पढ़ाई की थी कि वे संवेदना से चूक जाएं? अगर शिक्षा केवल कैरियर और डॉलर कमाने तक सीमित रह जाए, तो वह एक आदर्श संतान नहीं, एक संवेदनहीन मशीन तैयार करती है।

कर्नल साहब ने खुद को गोली नहीं मारी — उन्होंने एक घोषणा की थी। कि वह एक असफल पिता थे, क्योंकि उन्होंने ऐसे बेटे पैदा किए जो शव देखने से डरते थे, लेकिन सेल्फी लेने में नहीं झिझकते। उन्होंने एक ऐसा समाज छोड़ा, जो बुजुर्गों की बातें 'बोरिंग' समझता है और बूढ़ों के आँसू सिर्फ 'ग्लानि' का विषय बनते हैं, करुणा का नहीं।

अब सवाल यह है कि हम इस पत्र को पढ़कर केवल अफसोस जताएं या आत्मपरीक्षण करें। हम क्या वाकई उस दिशा में जा रहे हैं, जहां रिश्तों का मूल्य डॉलर से कम है? क्या हम अपने बच्चों को यह शिक्षा दे रहे हैं कि सफलता का मतलब पीछे मुड़कर न देखना है? कर्नल साहब का पत्र चेतावनी है — उन सब के लिए जो सोचते हैं कि विदेश में बस जाने से जड़ें खत्म हो जाती हैं। नहीं, जड़ें हमेशा रहती हैं। सूखती हैं, तबाही लाती हैं।

यह समाज तब तक जीवित रहेगा, जब तक बुजुर्गों को सम्मान मिलेगा। जिस दिन मां की चिता को बेटे 'इवेंट' मानने लगेंगे, उस दिन से सभ्यता खत्म होनी शुरू हो जाएगी। आज जो कर्नल साहब के साथ हुआ, वह कल किसी और के साथ होगा। शायद आपके साथ। शायद मेरे साथ।

आख़िर में बस इतना कहना चाहूंगी — रिश्ते निभाइए। मां-बाप को समय दीजिए। अमेरिका जाकर सफलता अर्जित करना बुरा नहीं, पर उस उड़ान में अगर संवेदनाएं पीछे छूट जाएं तो वह उड़ान नहीं, विस्मृति बन जाती है।

कर्नल साहब की आत्महत्या, एक पिता का मर जाना नहीं है — यह हमारे समाज की आत्मा की पराजय है। और अगर अब भी हम नहीं चेते, तो अगली पीढ़ी हमें केवल बर्थडे कार्ड और अंत्येष्टि के टोल फ्री नंबर ही देगी।

अमेरिका के राष्ट्रपति का जुनून-प्रतिष्ठित नोबेल शांति पुरस्कार 2026 के लिए दुनियाँ के सबसे ताकतवर देश के राष्ट्रपति की चाहत से नोबेल पुरस्कार की रेपुटेशन हाई हुई

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर दुनियाँ के सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार यदि कोई है तो वहहै, नोबेल पुरस्कार जो भिन्न-भिन्न 6क्षेत्रों भौगोलिक, रसायन विज्ञान, चिकित्सा साहित्य शांति व अर्थशास्त्र में प्रतिवर्ष दिया जाता है। 2025 के लिए नॉमिनेशन की अंतिम तिथि 31 जनवरी 2025 थी, अब पुरस्कारों की घोषणा 10 अक्टूबर 2025 को होगी। परंतु पिछले कुछ दिनों से अब नोबेल पुरस्कार 2026 की चर्चा प्रिंट इलेक्ट्रानिक सोशल मीडिया पर जोरो से चल रही है, विशेष रूप से नोबेल शांति पुरस्कार की, वो भी इसलिए की दुनियाँ के सबसे ताकतवर देश अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को यह पुरस्कार पाने का जुनून है, हालांकि अपने पिछले टर्म में राष्ट्रपति के दौरान वे नहीं पा सके थे, परंतु अब 2026 का पुरस्कार पाने की चाहत उनके बयानों एक्सः एक ट्विटर हैंडल पर पोस्ट हो रही है, जिसकी चर्चा पूरे विश्व में हो रहीहै, जबकि 2026 का ऑफीशियली रजिस्ट्रेशन सितंबर 2025 से शुरू होगा। आज इसकी चर्चा इसलिए भी जोर पकड़ रही है कि, इसके लिए ट्रंप का ऑफीशियली रूप सेनॉमिनेशन पाक द्वारा कर भी दिया गया है जो एक प्रक्रिया के तहत होता है, जिसकी चर्चा हम नीचे पैराग्राफ में करेंगे। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र का मानना है कि, पाक के सेनापति द्वारा ट्रंप को नोबेल पुरस्कार मिलने की मौखिक सिफारिश की फिर उन्हें ट्रंप द्वारा ऑफीशियली रूप से लंच पर आमंत्रित दिया गया, फिर पाक़ द्वारा ऑफीशियली नॉमिनेशन की घोषणा की गई, जबकि मेरा मानना हैकि अंदरूनी कहानी ईरान-इजरायल युद्ध की भयंकर बढ़ती सिचुएशन से उत्पन्न क्राइसिस से निपटने के लिए रणनीतिके तहत पाक़ हवाई पट्टीयों का उपयोग करेगा, पाक अमेरिका के बीच यह स्थितियां हो रही है, हालांकि पाक़ सेनापति व ट्रंप की लंच मुलाकात की एक भी फोटो वीडियो प्रेस में साझा नहीं किया गया है, यह मेरा अनुमान है। तो दूसरी ओर ट्रंप खुले रूप से अपने बयान हुआ एक केंद्र पर कर रहे हैं कि उन्होंने भारत-पाक कांगो-रवांडा इसराइल -हमास रूस यूक्रेनमें से दो के युद्ध रोके हैं, बाकी की कोशिश चल रही है। हालांकि 2 दिन पूर्व भारतीय पीएम ने ट्रंप से सीधे 35 मिनट की बातचीत में कहा कि भारत पाक युद्ध विराम का समझौता आपसी द्वपक्षी बातचीत के जरिए हुआथा परंतु ट्रंप इसको शांति पुरस्कार का आधार मानते है, परंतु उन्होंने कहा मुझे मालूम है, मुझे नोबेल शांति पुरस्कार नहीं दिया जाएगा, हालांकि इन पुरस्कारों की पूरी प्रक्रिया की चर्चा हम नीचे पर में करेंगे। चूँकि वैश्विक स्तरपर 6 क्षेत्रों में दिए जाने वाले नोबेल पुरस्कार की चयन प्रक्रिया अत्यंत कठोर, विभिन्न चरणों में भारी मानदंडों से होना इसकी खूबसूरती है, इसलिए आज हम मीडियम उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का जुनून, प्रतिष्ठित नोबेल शांति पुरस्कार 2026 के लिए दुनियाँ के सबसे ताकतवर देश के राष्ट्रपति की चाहत से नोबेल पुरस्कारों की रेपुटेशन हाई हुई।

साथियों बात अगर हम अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा नोबेल शांति पुरस्कार को पाने के जुनून की करें तो, आज कल अमेरिका के राष्ट्रपति नोबेल शांति पुरस्कार को लेकर चर्चा में आ गए। बता दें कि कुछ दिन पहले राष्ट्रपति ट्रंप पाक के आर्मी चीफ से मिले। अब पाक द्वारा नोबल शांति पुरस्कार के लिए ट्रंप को नॉमिनेट किया जाना पाक़ की चालाकी बताई जा रही है, क्योंकि

ट्रंप चाहते हैं कि यह पुरस्कार किसी भी तरह उन्हें मिले। वहीं चर्चाओं के बीच ट्रंप ने अपने ट्रूथ सोशल अकाउंट पर एक पोस्ट में लिखा कि सोमवार को व्हाइट हाउस में कांगो और रवांडा शांति समझौते पर दस्तख्त करेंगे। इसके पहले मैंने भारत पाकिस्तान सहित कई युद्ध रुकवाए, लेकिन मुझे कोई इस नेक काम करके लिए नोबल प्राइज नहीं देगा। ट्रंप ने शुक्रवार को अपने ट्रुथ सोशल प्लेटफॉर्म पर लंबी पोस्ट में छह बार इस प्रतिष्ठित पुरस्कार का उल्लेख किया। पाक ने अमेरिका के राष्ट्रपति को 2026 के नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामित किया है। इस कदम ने न केवल भू-राजनीतिक विशेषज्ञों को चौंका दिया है, बल्कि खुद पाक के लोग और नेता भी इससे हैरान हैं। कई पाकी सामाजिक कार्यकर्ताओं और लेखकों ने सरकार के इस फैसले की आलोचना की है। उन्होंने याद दिलाया कि ट्रंप ने गाजा में हो रहे नरसंहार और ईरान पर इस्राइल के हमले का समर्थन किया था। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर इस फैसले की आलोचना हो रही है। पाक ने ट्रंप को नोबेल शांति पुरस्कार के लिए इसलिए नामित किया है, क्योंकि उन्होंने कथित तौर पर भारत और पाक के बीच तनाव के दौरान निर्णायक कूटनीतिक दखल दिया।

हालांकि, भारत पहले ही कई बार स्पष्ट कर चुका है कि ऑपरेशन सिंदूर के समय जो संघर्षविराम हुआ, वह दोनों देशों के बीच सीधे संवाद से हुआ था- न कि किसी तीसरे पक्ष की मध्यस्थता से। दरअसल, भारत ने जब पाक के खिलाफ ऑपरेशन सिंदूर लॉन्च किया था. तब दोनों देशोंके बीच 4 दिनतक तनाव रहा, वार-पलटवार का सिलसिला जारी रहा, इसी के बाद पाक ने भारत से इस ऑपरेशन को रोकने का आग्रह किया, हालांकि, ट्रंप ने दावा किया था कि दोनों देशों के बीच उन्होंने सीजफायर कराया, पाक ने ट्रंप के इसी हस्तक्षेप का एहसान चुकाने के लिए अब ट्रंप को नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नॉमिनेट कर दिया है।

साथियों बात अगर हम नोबेल शांति पुरस्कार को जानने व इसकी प्रक्रिया को समझने की करेंतो, इस पुरस्कार को हासिल करने की प्रक्रिया कितनी लंबी है, यह जान लेना जरूरी है कि यह पुरस्कार आखिर है क्या, किसको दिया जाता हैजब हम नोबेल पुरस्कार की बात कर रहे हैं तो यह जान लेना जरूरी है कि नोबेल शांति पुरस्कार की शुरुआत अल्फ्रेड नोबेल की वसीयत से हुई थी, यह अवॉर्ड केमिस्ट्री, फिजिक्स, फिजियोलॉजी या मेडिसिन, शांति और साहित्य, पहली बार यह पुरस्कार साल 1901 में दिया गया था, शांति के कैटेगरी में यह अवॉर्ड उन लोगों को दिया जाता है जिन्होंने राष्ट्रों के बीच भाईचारा बढ़ाने, हथियारों की संख्या को कम करने और शांति सम्मेलन आयोजित करने में खास योगदान दिया, कौन-कौन कर सकता है नॉमिशननॉर्वेजियन नोबेल समिति नोबेल शांति पुरस्कार विजेताओं को चुनती है, इसके लिए कोई भी व्यक्ति, संगठन या आंदोलन को नॉमिनेट किया जासकता है। लेकिन यहां शर्त है उन लोगों की जो नॉमिनेट कर सकते हैं, हर कोई नोबेल पुरस्कार के लिए किसी के नाम को नॉमिनेट नहीं कर सकता है, इसके लिए एक सीमित लोगों की लिस्ट वो ही नामों की सिफारिश कर सकते हैं, जहां अब हम जान चुके हैं कि नोबेल शांति पुरस्कार क्या होता है, वहीं, अब यह जानना जरूरी है कि कौन-कौन नॉमिशन कर सकता है, क्या आम आदमी भी इस में नॉमिशन कर सकता है? (1) किसी देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, कैबिन मंत्री, राष्ट्रीय सभाओं और सरकारों के सदस्य, (2) नीदरलैंड के हेग में अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय और हेग में प्रमानेंट मध्यस्थता न्यायालय के सदस्य, (3) एल'इंस्टीट्यूट डी ड्रोइट इंटरनेशनलके सदस्य (4) शांति और स्वतंत्रता के लिए महिला अंतर्राष्ट्रीय लीग के अंतर्राष्ट्रीय बोर्ड के सदस्य (5) यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर, एमेरिटी प्रोफेसर और इतिहास, सामाजिक विज्ञान, कानून, फिलॉसफी, धर्मशास्त्र और धर्म के एसोसिएट प्रोफेसर, यूनिवर्सिटी के रेक्टर और यूनिवर्सिटी डायरेक्टर, शांति अनुसंधान संस्थानों और विदेश नीति संस्थानों के डायरेक्टर (6) वो व्यक्ति जिन्हें पहले ही नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया हो (7) नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित संगठनों के मुख्य डायरेक्टर (8) नॉर्वेजियन नोबेल समिति के वर्तमान और पूर्व सदस्य भी इसमें नॉमिनेट हो सकते हैं, (9)नॉर्वेजियन नोबेल समिति के पूर्व सलाहकार। ट्रंप का नाम साल 2026 के नोबेल शांति पुरस्कार के लिए पाक की तरफ से नॉमिनेट किया गया है, जहां अब हम समझ चुके हैं कि हर आम आदमी नोबेल शांति पुरस्कार के लिए किसी को नॉमिनेट नहीं कर सकता है, लेकीन ऊपर दी हुई लिस्ट के लोग किसी भी शख्स को इस सम्मान के लिए नामित कर सकते हैं।

साथियों बात अगर हम नोबेल शांति पुरस्कार के इतिहास की करें तो, नोबेल शांति पुरस्कार 1901 से 2024 के बीच 142 नोबेल पुरस्कार विजेताओं, 111 व्यक्तियों और 31 संगठनों को 105 बार प्रदान किया गया है। चूंकि रेड क्रॉस की अंतर्राष्ट्रीय समिति को तीन बार (1917, 1944 और 1963 में) नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है, और शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र उच्चायुक्त के कार्यालय को दो बार (1954 और 1981 में) नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है, ऐसे 28 व्यक्तिगत संगठन हैं जिन्हें नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। 2025 के नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामांकन की अंतिम तिथि 31जनवरी थी, नॉर्वेजियन नोबेल समिति द्वारा 10 अक्टूबर 2025 को पुरस्कार की घोषणा की जाएगी और 10 दिसंबर 2025 को प्रदान किया जाएगा, किसी बाहरी मध्यस्थता के माध्यम से नहीं। नोबेल प्राइज 2026 के लिए ऑफिशियल रजिस्ट्रेशन सितंबर में शुरू किए जाएंगे। हालांकि, अभी अंतिम तारिख का ऐलान नहीं किया गया है। 2025 के नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामांकन की आखिरी तारीख 31 जनवरी थी।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि अमेरिका के राष्ट्रपति का जुनून-प्रतिष्ठित नोबेल शांति पुरस्कार 2026 के लिए दुनियाँ के सबसे ताकतवर देश के राष्ट्रपति की चाहत से नोबेल पुरस्कार की रेपुटेशन हाई हुई, वैश्विक स्तरपर 6 क्षेत्रों में दिए जाने वाले नोबेल पुरस्कारों की चयन प्रक्रिया अत्यंत कठोर, विभिन्न चरणों में भारी मानदंडों से होना इसकी खूबसूरती है। दुनियाँ के सबसे शक्तिशाली राष्ट्र के राष्ट्रपति की नोबेल शांति पुरस्कार पाने की चाहत से पुरस्कार की रेपुटेशन में जबरदस्त उछाल परंतु यह काम को मिलता है व्यक्ति को नहीं सराहनीय है।

रेनॉल्ट ट्राइबर और किगर फेसलिफ्ट की हो रही टेस्टिंग, लॉन्च से पहले मिली क्या जानकारी

परिवहन विशेष न्यूज

आगामी रेनॉल्ट कार लॉन्च रेनो की ओर से भारतीय बाजार में हैचबैक कार से लेकर एसयूवी सेगमेंट तक के वाहनों की बिक्री की जाती है। जानकारी के मुताबिक रेनो की ओर से अपनी एमपीवी और कॉम्पैक्ट एसयूवी Renault Triber और Kiger के Facelift को लाने की तैयारी की जा रही है। मीडिया रिपोर्ट्स में इन दोनों कारों के बारे में क्या जानकारी सामने आई है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। फ्रांस की वाहन निर्माता Renault की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से जल्द ही अपनी दो कारों के फेसलिफ्ट वर्जन को लाने की तैयारी की जा रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक Renault Triber और Kiger के फेसलिफ्ट को लेकर क्या जानकारी सामने आई है। इनको कब तक लॉन्च (upcoming Renault car launch) किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Renault Triber और Kiger के Facelift की हो रही तैयारी

रेनो की ओर से ट्राइबर और काइगर के फेसलिफ्ट को भारत में लॉन्च करने की तैयारी हो रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक इन दोनों कारों के फेसलिफ्ट को लॉन्च करने से पहले इनकी टेस्टिंग (Renault Triber facelift testing) की जा रही है। टेस्टिंग के दौरान इन कारों को देखा गया है।

क्या मिली जानकारी

टेस्टिंग के दौरान इन दोनों कारों को कई बार देखा (Kiger facelift spy shots) जा चुका है। हाल में देखी गई यूनिट्स को भी पूरी तरह से ढंका गया था। नई यूनिट्स में चौकोर एलईडी टेल लाइट्स, नए बंपर, नई टेल लाइट्स के साथ इनके एक्सटीरियर में कई तरह के बदलावों को नोटिस किया गया है। रेनो काइगर फेसलिफ्ट में बड़ी ग्रिल, एलईडी डीआरएल, फॉग लाइट्स को भी दिया जा सकता है।

इंजन में नहीं होगा बदलाव

रिपोर्ट्स के मुताबिक दोनों कारों में सिर्फ कॉस्मैटिक बदलावों को ही किया जाएगा। इनके इंजन में किसी भी तरह के बदलाव की उम्मीद काफी कम है। इनमें मौजूदा एक लीटर इंजन के विकल्पों को ही दिया जाएगा। जिसके साथ मैनुअल और एएमटी ट्रांसमिशन के विकल्प दिए जाएंगे। इन कारों को पेट्रोल के साथ ही सीएनजी में भी ऑफर किया जा सकता है।

कब तक होंगी लॉन्च

रेनो की ओर से अभी तक इस बारे में कोई औपचारिक जानकारी नहीं दी गई है। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि रेनो की ओर से अगले साल तक इन दोनों कारों के फेसलिफ्ट को पेश किया जा सकता है।

कितनी होगी कीमत

रेनो की ओर से मौजूदा समय में ट्राइबर और काइगर को 6.14 लाख रुपये की शुरुआती एक्स शोरूम कीमत पर ऑफर किया जाता है। ऐसे में इन कारों के फेसलिफ्ट की कीमत में ज्यादा बदलाव की उम्मीद कम है। लेकिन कुछ हजार रुपये तक की बढ़ोतरी रेनो की ओर से की जा सकती है।

स्कूटर सेगमेंट में जल्द लॉन्च होंगे ये पांच बेहतरीन विकल्प, आइसीई से लेकर ई.वी तक है लिस्ट में शामिल

परिवहन विशेष न्यूज

नया स्कूटर लॉन्च टू व्हीलर बाजार में हर महीने लाखों वाहनों की बिक्री की जाती है। बिक्री को और बढ़ाने के साथ ही नए विकल्पों को देने के लिए कई निर्माताओं की ओर से अगले कुछ महीनों के दौरान नए स्कूटर्स को पेश और लॉन्च किया जा सकता है। किस निर्माता की ओर से किस स्कूटर को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में मोटरसाइकिल के साथ ही स्कूटर सेगमेंट के वाहनों को भी काफी पसंद किया जाता है। हर महीने स्कूटर सेगमेंट में भी लाखों यूनिट्स की बिक्री की जाती है। इसे देखते हुए कई निर्माताओं की ओर से नए स्कूटर्स को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। अगले कुछ महीनों के दौरान किस निर्माता की ओर से किस तकनीक के साथ किस स्कूटर को पेश और लॉन्च (upcoming scooters in India) किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Suzuki E Access होगा लॉन्च

सुजुकी की ओर से जल्द ही अपने पहले इलेक्ट्रिक स्कूटर Suzuki E Access को लॉन्च (electric scooters 2025) किया जाएगा। निर्माता की ओर से इस स्कूटर को अगले कुछ हफ्तों में लॉन्च किया जा सकता है। इस स्कूटर को फिक्स बैटरी के साथ लाया जाएगा और इससे स्कूटर को एक बार चार्ज करने के बाद 95 किलोमीटर के आस-पास की रेंज मिल सकती है।

Vida VX2 स्कूटर भी होगा लॉन्च

हीरो मोटोकॉर्प के इलेक्ट्रिक ब्रॉन्ड विदा भी अगले कुछ दिनों में अपने नए स्कूटर को लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। निर्माता की ओर से एक जुलाई 2025 को औपचारिक तौर पर अपने नए इलेक्ट्रिक स्कूटर को लॉन्च कर दिया जाएगा। उम्मीद की जा रही है कि इसमें भी रिमूवेबल बैटरी का ही उपयोग किया जाएगा। फिलहाल इस स्कूटर से जुड़े टीजर सोशल मीडिया पर जारी किए जा रहे हैं। जिसमें इसके डिजाइन की जानकारी मिल चुकी है।

TVS ला सकती है 150 सीसी स्कूटर

EV सेगमेंट के साथ ही कई निर्माता ICE सेगमेंट में भी अपने उत्पादों को ऑफर करती हैं। जानकारी के मुताबिक प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल टीवीएस की ओर से भी 150 सीसी सेगमेंट में नए स्कूटर को लॉन्च (ICE scooters launch) किया जा सकता है। इस स्कूटर को TVS N Torq सीरीज में पेश किया जा सकता है।

Honda Activa Facelift

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक होंडा की ओर से भी एक्टिवा स्कूटर के फेसलिफ्ट को लॉन्च किया जा सकता है। काफी समय से होंडा की ओर से इस स्कूटर को बिना किसी बदलाव के ऑफर किया जा रहा है। लेकिन फेसलिफ्ट वर्जन में कई नए फीचर्स के साथ डिजाइन में मामूली बदलाव भी किए जा सकते हैं। इसके इंजन में किसी भी तरह के बदलाव की उम्मीद काफी कम है।

Bajaj भी ला सकती है नया चेतक

Bajaj Chetak को इलेक्ट्रिक सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक इस स्कूटर को भी नए वेरिएंट के साथ ऑफर किया जा सकता है। जिसमें ज्यादा अंडर सीट स्टोरेज दी जा सकती है। साथ ही इसमें राइडिंग के लिए दो मोड्स को दिया जा सकता है।

5स्टार सेफ्टी रेटिंग वाली मारुति डिजायर खरीदना किसके लिए बेहतर होगा, जानें डिटेल

परिवहन विशेष न्यूज

मारुति सुजुकी डिजायर AGS की दीर्घकालिक समीक्षा मारुति सुजुकी की ओर से कॉम्पैक्ट सेडान कार के तौर पर डिजायर की नई जेनरेशन को 2024 के आखिर में ही लॉन्च किया गया था। 2025 में अगर सेडान कार को खरीदने का विचार कर रहे हैं तो इस कार के AGS वेरिएंट को खरीदना आपके लिए कितना फायदेमंद साबित हो सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। देश में हर महीने लाखों की संख्या में वाहनों की बिक्री की जाती है। जिनमें से मारुति सुजुकी की कारों की भी बड़ी संख्या होती है। निर्माता की ओर से कॉम्पैक्ट सेडान कार सेगमेंट में Maruti Dzire की बिक्री की जाती है। हाल में ही इस सेडान कार को B NCAP की ओर से क्रैश टेस्ट में 5स्टार रेटिंग दी गई है। जिसके कुछ समय पहले ही सेडान कार को हमने करीब दो हफ्तों तक 500 किलोमीटर से ज्यादा तक चलाया। हमने इस कार को शहर की भीड़ और हाइवे की खुली सड़कों पर भी परखने की कोशिश की। इस दौरान यह कार हमें कितना प्रभावित कर पाई। क्या 2025 में इस कार के AGS वेरिएंट को खरीदना आपके लिए सही होगा या नहीं। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

कैसी है Maruti Dzire AGS

मारुति की ओर से कॉम्पैक्ट सेडान कार सेगमेंट में डिजायर की बिक्री की जाती है। इस कार को मैनुअल के साथ ही AGS वेरिएंट के साथ भी ऑफर किया जाता है। डिजाइन के बारे में बात करें तो अब यह पहले के मुकाबले ज्यादा प्रीमियम दिखाई देती है। साथ ही इसके डिजाइन को स्विफ्ट की तरह भी नहीं रखा गया है। कार फ्रंट में एलईडी प्रोजेक्टर हेडलाइट्स, फॉग लैंप, क्रोम के साथ फ्रंट ग्रिल के साथ आती है। ऐसे में यह कहना गलत नहीं होगा कि यह अपने सेगमेंट की अन्य कारों के मुकाबले भी काफी बेहतर और प्रीमियम लुक के साथ आती है।

कैसे हैं फीचर्स

मारुति की डिजायर कार में पहले के मुकाबले काफी ज्यादा बेहतर फीचर्स को ऑफर किया जा रहा है। नई जेनरेशन डिजायर में अब एलईडी हेडलाइट्स के साथ ही फॉग लैंप, पार्किंग सेंसर, 360 डिग्री कैमरा, रिवर्स पार्किंग कैमरा, नौ इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, एंड्राइड ऑटो, एपल कार प्ले, टॉगल बटन के साथ एसी यूनिट, सेगमेंट में पहली बार सिंगल पेन सनरूफ जैसे कई फीचर्स को ऑफर किया जा रहा है। कार के रियर में बैठ कर सफर करने वालों के लिए रियर एसी वेंट भी दिया गया है जो गर्मी के मौसम में काफी राहत देता है। कार में मिलने वाला इंफोटेनमेंट सिस्टम रियल टाइम में कई जानकारी देता है जिसमें टीपीएमएस, एवरेज स्पीड, माइलेज आदि शामिल हैं। इसके साथ ही इसका टच भी अच्छा है। हालांकि कुछ फीचर्स की कमी इसमें महसूस होती है, जिसमें फ्रंट आर्म रेस्ट और एंबिएंट लाइट शामिल है।

कितना दमदार प्रदर्शन

Maruti Dzire की नई जेनरेशन को नए इंजन के साथ ऑफर किया जा रहा है। अब इसमें जेड सीरीज का नया इंजन मिलता है जो चार की जगह तीन सिलेंडर के साथ आता है। हमने इसके AGS वेरिएंट को टेस्ट किया। ट्रैफिक के दौरान यह चलाने में काफी आरामदायक है और हाइवे पर भी इसे चलाने में किसी तरह की परेशानी नहीं लगी। हालांकि कभी कभी ओवरटेक के समय पावर की कमी थोड़ी सी महसूस होती है, लेकिन जल्द ही नया इंजन इस परेशानी को भी दूर कर देता है। इसके अलावा इसका AGS अभी तक के बाकी कारों के साथ आने वाले AGS के मुकाबले काफी ज्यादा बेहतर लगा। गियर शिफ्टिंग काफी आसानी से होती है और जरुरत पड़ने पर इसे मैनुअल कार की तरह भी चलाया जा सकता है जो कि काफी अच्छी बात लगती है। कार में क्रूज कंट्रोल को भी दिया गया है लेकिन इसमें भी स्विफ्ट की तरह ही हमें महसूस हुआ कि जब क्रूज कंट्रोल की स्पीड को कम किया जाता है तो वह तेजी से नहीं होती, जिससे क्लच या ब्रेक लगाकर इस फीचर को डी एक्टिवेट करना पड़ता है। इस सेगमेंट में आने वाली होंडा अमेज के मुकाबले मारुति डिजायर का स्टेयरिंग रिस्पांस भी काफी अच्छा लगा। इसे ट्रैफिक में चलाना जितना आसान लगता है उतना की आसान इसे खुली सड़कों पर तेज स्पीड में चलाना भी है।

कितनी है माइलेज

माइलेज की बात करें तो मारुति डिजायर को हमने तेज गर्मी के मौसम में दिल्ली में शाम को 5 से 8 बजे और सुबह 8 से 11 बजे के बीच भी चलाया। इस समय दिल्ली एनसीआर में काफी ज्यादा ट्रैफिक होता है और कार को बंपर टू बंपर ट्रैफिक में चलाना पड़ता है। वहीं हमने इसे रात के समय खुली सड़कों और नेशनल हाइवे पर भी चलाया। ऐसे में हमें 15 से 17 किलोमीटर प्रति लीटर की औसत माइलेज मिली। जो AGS ट्रांसमिशन के साथ काफी अच्छी है। हाइवे पर इसकी माइलेज करीब 20 से 21 किलोमीटर प्रति लीटर तक मिल सकती है।

समीक्षा

अगर आप अपने लिए ऐसी कार खरीदने का मन बना रहे हैं जिसमें एसयूवी के मुकाबले ज्यादा आरामदायक सीटें हों, सामान रखने के लिए 382 लीटर का बूट स्पेस मिले। शहर या हाइवे कहीं पर भी चलाने के लिए AGS ट्रांसमिशन मिले, सनरूफ, 360 डिग्री कैमरा, एलईडी लाइट्स, बेहतर एनवीएच लेवल केबिन, बेहतर कंट्रोल, अच्छा माइलेज और इंफोटेनमेंट सिस्टम मिले। साथ ही Bharat NCAP की ओर से दी गई 5 स्टार सेफ्टी रेटिंग की सुरक्षा भी मिले तो आप बिना संकोच Maruti Suzuki Dzire AGS को खरीद सकते हैं। लेकिन अगर आपको एक ऐसी कार चाहिए जो एसयूवी की तरह दिखाई दे। फर्म सीट्स चाहिए, पैनोरमिक सनरूफ पसंद है। ADAS जैसे फीचर को कार में चाहते हैं तो फिर आप अन्य सेडान और एसयूवी के विकल्पों पर विचार कर सकते हैं।

मारुति सुजुकी ब्रेज़ा एसयूवी के ZXI एटी वेरिएंट को है घर लाना, दो लाख रुपये की अग्रिम भुगतान के बाद कितनी जाएगी ईएमआई

परिवहन विशेष न्यूज

कार फाइनेंस योजना मारुति सुजुकी की ओर से सब फोर मीटर एसयूवी के तौर पर Maruti Brezza को ऑफर किया जाता है। अगर आप भी इस एसयूवी के ZXI AT वेरिएंट को खरीदकर घर लाने का मन बना रहे हैं। तो दो लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर इस गाड़ी को घर लाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Maruti Suzuki की ओर से सब फोर मीटर एसयूवी सेगमेंट में Maruti Breeza की बिक्री की जाती है। अगर आप इस एसयूवी के ऑटोमैटिक वर्जन को खरीदना चाहते हैं तो दो लाख रुपये की डाउन पेमेंट देने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर इसे घर लाया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Maruti Brezza ZXI AT Price

मारुति की ओर से ब्रेजा को ZXI वेरिएंट के साथ AT ट्रांसमिशन के विकल्प में ऑफर किया जाता है। कंपनी इस एसयूवी के ZXI AT वेरिएंट को 12.66 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर बिक्री के लिए उपलब्ध करवा रही है। अगर इसे दिल्ली में खरीदा जाता है तो 12.66 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत के साथ ही इस पर रजिस्ट्रेशन, इंश्योरेंस भी देना होगा। इस गाड़ी को खरीदने के लिए करीब 1.27 लाख रुपये का रजिस्ट्रेशन टैक्स, करीब 47 हजार रुपये इंश्योरेंस के देने होंगे। इनके अलावा फास्टैग, एमसीडी, स्मार्ट कार्ड और टीसीएस चार्ज के तौर पर 18345 रुपये भी देने होंगे। जिसके बाद गाड़ी की दिल्ली में ऑन रोड कीमत 14.62 लाख रुपये हो जाती है।

दो लाख रुपये Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर Maruti Brezza के ZXI AT वेरिएंट को आप खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में दो लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 12.62 लाख रुपये की राशि को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको नौ फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 12.62 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने सिर्फ 20318 रुपये की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी Car

अगर आप नौ फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 12.62 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 20318 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप Maruti Brezza के ZXI AT वेरिएंट के लिए करीब 4.43 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आपकी कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 19.06 लाख रुपये हो जाएगी।

किनसे होता है मुकाबला

Maruti की ओर से Brezza को सब फोर मीटर एसयूवी सेगमेंट में लाया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Hyundai Venue, Kia Syros, Kia Sonet, Tata Nexon, Mahindra XUV 3XO, Citroen Basalt जैसी एसयूवी के साथ होता है।

एमजी से लेकर टाटा तक ईवी सेगमेंट में नई गाड़ी लॉन्च करने की कर रही तैयारी, जानें कौन सी 5 कारें होंगी पेश

परिवहन विशेष न्यूज

upcoming electric cars in India भारतीय बाजार में इलेक्ट्रिक वाहनों की मांग में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। जिसे देखते हुए कई निर्माताओं की ओर से नए उत्पादों को पेश और लॉन्च किया जा रहा है। इस साल पांच नई EVs को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। किस कंपनी की ओर से किस गाड़ी को EV सेगमेंट में लाया जाएगा। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। देश में इलेक्ट्रिक वाहनों की मांग लगातार बढ़ रही है। जिसे देखते हुए वाहन निर्माताओं की ओर से जल्द ही नई इलेक्ट्रिक वाहन सेगमेंट में पांच कारों को पेश और लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। किन कंपनी की ओर से किस कार को कब तक पेश और लॉन्च (EV launches 2025) किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Kia Carens Clavis EV होगी लॉन्च

किआ की ओर से एमपीवी सेगमेंट में कैरेंस क्लाविस की बिक्री की जाती है। निर्माता जल्द ही इस गाड़ी के इलेक्ट्रिक वर्जन को भारत में लॉन्च कर सकती है। जानकारी के मुताबिक इसे जुलाई 2025 में भारत लाया जा सकता है। ICE वेरिएंट के मुकाबले इसमें ज्यादा फीचर्स दिए जा सकते हैं। मई में ही इसके ICE वेरिएंट को लॉन्च किया गया है।

Maruti Suzuki E Vitara भी होगी लॉन्च

मारुति सुजुकी की ओर से भी जल्द ही ई-विटारा को बाजार में लॉन्च किया जा सकता है। इस इलेक्ट्रिक एसयूवी को जनवरी 2025 में ऑटो एक्सपो में पेश किया जा चुका है। जल्द ही इस गाड़ी के लिए बुकिंग शुरू की जा सकती हैं और फिर कुछ समय बाद सितंबर तक इसे लॉन्च भी किया जा सकता है।

Vinfast VF6 को भी किया जाएगा लॉन्च

वियतनाम की इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता विनफास्ट की ओर से भी भारत में सितंबर तक नई कार को लॉन्च किया जा सकता है। निर्माता की ओर से इसके लिए जल्द ही बुकिंग भी शुरू की जा सकती है। यह विनफास्ट की ओर से पहली कार होगी और इसके साथ ही कई और कारों को भी लॉन्च किया जाएगा।

Tata Sierra EV भी होगी लॉन्च

टाटा मोटर्स की ओर से सिएरा के ईवी वर्जन को भी अक्टूबर 2025 तक लॉन्च किया जा सकता है। अभी इस बारे में औपचारिक तौर पर जानकारी नहीं दी गई है, लेकिन उम्मीद की जा रही है कि फेस्टिव सीजन में टाटा की नई ईवी को लॉन्च किया जाएगा। इसके कुछ समय बाद 2026 में इसके ICE वेरिएंट को भी बाजार में पेश किया जा सकता है।

MG Cyberster भी होगी लॉन्च

एमजी मोटर्स की ओर से भी साइबरस्टर को अगले कुछ महीनों के दौरान लॉन्च किया जा सकता है। जानकारी मिल रही है कि इसे जून या जुलाई तक बाजार में औपचारिक तौर पर लॉन्च किया जाएगा। इसे सीबीयू के तौर पर लाया जाएगा, ऐसे में इसकी कुछ ही यूनिट्स को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जा सकता है। यह कार भी कई बेहतरीन फीचर्स के साथ ऑफर की जाएगी।

पिछड़ता उच्च शिक्षा का स्तर

विजय गर्ग

देश की उच्च शिक्षा व्यवस्था उदारीकरण के बाद आगे तो बढ़ी, लेकिन उसी गति से उसमें गुणवत्ता विकसित नहीं हो पाई। उदारीकरण के तीन दशक पूरे हो चुके हैं, मगर इसका लाभ उच्च शिक्षा में केवल कमाई के अवसर के रूप में देखा गया। खास यह भी है कि तकनीकी शिक्षा के लिए आल इंडिया काउंसिल आफ टेक्निकल एजुकेशन (एआइसीटीई) को मानक तय करने के लिए 1987 में बनाया गया था। इसके नियमों की खूब अवहेलना हुई। समय के साथ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) भी नकेल कसने में कम ही। कम ही कामयाब रहा। आकर्षक विज्ञापनों और चमचमाते सपनों के साथ साथ युवाओं के हाथ में उच्च शिक्षण संस्थाओं ने डिग्रियां तो खूब थमाईं, पर कौशल के मामले में वे खोखले ही। रह गए। यूजीसी की वेबसाइट को खंगालें, तो मौजूदा समय में सभी प्रारूपों में 1200 से अधिक विश्वविद्यालय हैं, जिनमें 57 केंद्रीय और 502 राज्य विश्वविद्यालय हैं। सभी उच्च शिक्षण संस्थान और इनसे जुड़े कालेज हर साल तकरीबन चार करोड़ से अधिक युवाओं की तकदीर बनाते हैं। ऐसे संस्थान स्थापित करने के लिए बहुत बड़ी राशि की आवश्यकता पड़ती है। निराशा की बात यह है कि इनमें कई संस्थान शिक्षा को धन उगाही का जरिया बना लेते हैं और डिग्रियां बांटना एक तरह से कारोबार बन जाता है।

असल में शिक्षा कोई रातों-रात विकसित होने वाली व्यवस्था नहीं है। वैश्वीकरण के बाद उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कई दरवाजे खुले मगर व्यावहारिक तौर पर अब ये विफल दिखाई देते हैं। भारत में विगत तीन दशकों शिक्षा संस्थानों के प्रति काफी नरमी बरती जा रही है और शिक्षा की गुणवत्ता में गिरावट की मुख्य वजह भी यही है भारत सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश है। संसार की सबसे बड़ी युवा आबादी यहीं है। जिस गति से शिक्षा लेने वालों की संख्या यहां बढ़ी, शिक्षण संस्थाएं उससे तालमेल नहीं बैठा पाईं। कुछ क्षेत्रों में बिना किसी त के कमाने वाली शिक्षण संस्थाओं की बाढ़ आ गई। इंजीनियरिंग कालेज इसी तर्ज पर पर विकसित हुए और यह बात तब और पुख्ता हो जाती है, जब आंकड़े बताते हैं कि देश देश में इंजीनियरिंग की सफलता दर आम तौर पर दस फीसद से। अधिक नहीं होती है जबकि हर साल 15 लाख इंजीनियरिंग स्नातक कालेजों से निकलते हैं। इतना ही नहीं 40 फीसद आइआइटी स्नातक भी नौकरी पाने में असफल रहे 'इंडियाज ग्रेजुएट स्किल्स इंडेक्स' के अनुसार, देश देश में वर्ष 2024 में लगभग 57 फीसद स्नातकों के पास आवश्यक कौशल नहीं है।

सवाल उठता है कि शैक्षणिक वातावरण हमारे यहां कैसा है। अब शिक्षण संस्थानों को सुशासन के मार्ग की ओर ले जाने की जरूरत है। उच्च शिक्षा को लेकर दो प्रश्न उभरते हैं। पहला यह कि क्या विश्व परिदृश्य में तेजी से बदलते घटनाक्रम के बीच उच्चतर शिक्षा, शोध और ज्ञान के विभिन्न संस्थान स्थिति के अनुसार बदल रहे हैं? दूसरा क्या अर्थव्यवस्था, दक्षता और प्रतिस्पर्धा के प्रभाव में शिक्षा को तकनीक से जोड़ने का कोई बड़ा लाभ मिल रहा है यदि हां, तो सवाल यह भी है कि क्या परंपरागत मूल्यों और उद्देश्यों का संतुलन इसमें बरकरार है? विभिन्न विश्वविद्यालयों में शुरू में ज्ञान के सृजन का हस्तांतरण भूमंडलीय हिस्सेदारी के आधार पर हुआ था। धीरे-धीरे बाजारवाद के कारण शिक्षा गुणवत्ता के मामले में पिछड़ती गई। वर्तमान में तो इसे बाजारवाद और व्यक्तिवाद के संदर्भ में परखा और जांचा जा रहा है। तमाम ऐसे कारकों के चलते उच्च शिक्षा सवालों में घिरती चली गई। देश में उच्च शिक्षा की स्थिति चिंताजनक क्यों हुई, इसे समझना होगा। ऐसा इसलिए हुआ कि इस क्षेत्र में उन मानकों को कहीं अधिक ढीला छोड़ दिया गया, जिसे लेकर एक निश्चित नियोजन होना चाहिए था। उच्च शिक्षा में गुणवत्ता तभी आती है, जब इसे शोधपरक बनाने का प्रयास किया जाता है न कि रोजगार जुटाने मात्र का जरिया बनाया जाता है। निजी विश्वविद्यालय फीस वसूलने में पूरा दम लगाए रखते हैं, पर उच्च शिक्षा के प्रति इनकी प्रतिबद्धता कम ही दिखती है। कोई दो मत नहीं कि यहां शिक्षा एक व्यवसाय है, इसका अपना एक आकर्षण है। ऐसा लगता है कि अब तो आनलाइन व्यवस्था में शिक्षण संस्थान मोबाइल और लैपटाप में सिमट चुके हैं। पाइल आ तीन नवंबर 2017 को सुप्रीम कोर्ट ने अपने एक निर्णय में विश्वविद्यालयों के दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रमों पर सवाल उठाया था। शीर्ष अदालत ने उड़ीसा हाईकोर्ट के इस फैसले को कि पत्राचार के जरिए तकनीकी शिक्षा सही है, उसे खारिज करते हुए स्पष्ट कर दिया था कि किसी भी प्रकार की तकनीकी शिक्षा दूरस्थ पाठ्यक्रमों के माध्यम से उपलब्ध नहीं कराई जा सकती। शीर्ष अदालत के इस फैसले से मेडिकल, इंजीनियरिंग और फार्मेसी समेत कई अन्य पाठ्यक्रम जो तकनीकी पाठ्यक्रम की श्रेणी में आते हैं, उन्हें लेकर विश्वविद्यालय अब मनमानी नहीं कर सकते। इतना ही नहीं, इस फैसले से पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट के उस उस निर्णय को भी समर्थन मिलता है जिसमें कंप्यटर विज्ञान में में पत्राचार के माध्यम से ली गई डिग्री को नियमित तरीके से हासिल डिग्री की तरह मानने से इनकार कर दिया [गया था। कचोटने वाली बात यह भी है कि उच्च शिक्षा के नाम पर चौतरफ अव्यवस्था फैली हुई है। बीते दो दशक में दूरस्थ शिक्षा को लेकर गली-मोहल्लों में दुकानें खुलने का सिलसिला आज भी जारी है।

₹उत्तर प्रदेश के कई नामी-गिरामी विश्वविद्यालय भी इस मोह से नहीं पाए। स्नातक और परास्नातक समेत कई व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को लेकर दूरस्थ माध्यम से बिना किसी खास कसौटी के न केवल केंद्र खोलने की अनुमति दी गई, बल्कि स्वयं के साथ इससे जुड़े ठेकेदारों को भी फायदा पहुंचाने लगे। इतना ही नहीं, बीटेक से लेकर एमबीए तक की डिग्रियां भी दूरस्थ माध्यम से ऐसे से ऐसे केंद्रों से सहज रूप से उपलब्ध होने लगी। दरअसल, शिक्षण संस्थाओं ने व्यवसाय अधिक किया, जबकि नैतिक धर्म का पालन करने में कोताही बरती है। हमारे छह पुराने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान आमतौर पर राष्ट्रीय रैंकिंग में सबसे आगे रहते हैं, उन्होंने मूल्यांकन प्रक्रिया की पारदर्शिता पर चिंताओं का हवाला देते हुए लगातार पांचवें वर्ष 'टाइम्स हायर एजुकेशन वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग' का बहिष्कार जारी रखा है। वैश्विक स्तर पर, आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय लगातार नौवें वर्ष शीर्ष स्थान पर बना हुआ है, जबकि एमआइटी स्टैनफोर्ड को पछाड़ कर दूसरे स्थान पर पहुंच गया है। ऐसे में हमारी शिक्षा व्यवस्था किस मुकाम पर है? जाहिर है जब तक उच्च शिक्षण संस्थान चलाने वाले गंभीर नहीं होंगे, शिक्षा के महत्त्व को नहीं समझेंगे और शोध के मामले में गंभीर नहीं होंगे, तब तक यह व्यवस्था हांफती रहेगी और इसमें सुशासन की दरकार बनी रहेगी।

मस्तिष्क वास्तविक छवियों को उन लोगों से कैसे अलग करता है जिनकी वह कल्पना करता है

विजय गर्ग

वास्तविक और कल्पना की गई छवियों को मस्तिष्क में समान प्रणालियों का उपयोग करके संसाधित किया जाता है, फिर भी अधिकांश लोग दोनों के बीच अंतर कर सकते हैं। न्यूरोसाइंटिस्ट ने दो मस्तिष्क क्षेत्रों की पहचान की है जो कल्पना की गई छवियों को वास्तविकता से अलग रखते हैं,

ब्रिटेन के यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन के कॉग्निटिव न्यूरोसाइंटिस्ट कंपनी के सह-लेखक नादिन डिजक्स्ट्रा कहते हैं, ₹अपनी आंतरिक दुनिया और वास्तविक वास्तविकता को अलग रखने में सक्षम होना दैनिक जीवन में सामान्य कामकाज के लिए काफी उपयोगी है.₹ वे आगे कहती हैं, ₹यह कुछ ऐसा है जो मनोविकृति और सिज़ोफ्रेनिया में गलत हो जाता है.₹

डिज्कस्ट्रा और उसके सहयोगियों ने वास्तविक और काल्पनिक छवियों को अलग करने की लोगों की क्षमता की सीमा की जांच करने के लिए एक विधि विकसित की। इसमें स्वयंसेवकों को टेलीविजन स्थिर जैसी पृष्ठभूमि पर अलग-अलग पारदर्शिता की काली और सफेद धारियां दिखाना शामिल था। कुछ परीक्षणों में, शोधकर्ताओं ने प्रतिभागियों को धारियों की कल्पना करने के लिए कहा क्योंकि उन्होंने छवि को देखा था, और यह रिपोर्ट करने के लिए कि क्या उन्होंने वास्तव में धारियों को देखा था और यदि हां, तो वे कितने ज्वलंत थे।

जब प्रतिभागियों को लगा कि धारियां अधिक ज्वलंत हैं, तो वे उन्हें वास्तविक के रूप में रिपोर्ट करने की अधिक संभावना रखते हैं, भले ही धारियां वास्तव में हों।

मिनेसोटा ट्विन सिटीज़ विश्वविद्यालय के न्यूरोसाइंटिस्ट थॉमस नासेलारिस कहते हैं, शोधकर्ता एक महत्वपूर्ण अमूर्त अवधारणा को मापने और फिर मॉडल बनाने की कोशिश कर रहे हैं - कल्पना और दृष्टि के बीच बातचीत - कि अब तक एक दार्शनिक सवाल रहा है।

ब्रेन इमेजिंग मस्तिष्क गतिविधि के साथ प्रतिभागियों की टिप्पणियों को सहसंबंधित करने के लिए, शोधकर्ताओं ने प्रतिभागियों के कार्यात्मक चुंबकीय अनुनाद इमेजिंग (एफएमआरआई) रीडिंग ली, जबकि उन्होंने छवियों को धारियों के साथ और बिना देखे। एफएमआरआई रीडिंग, जो मस्तिष्क गतिविधि के लिए एक प्रॉक्सी के रूप में रक्त प्रवाह में परिवर्तन पर नज़र रखने पर भरोसा करते हैं, ने दिखाया कि एक क्षेत्र में गतिविधि जिसे धारियों की रिपोर्ट की गई विविडिटी के साथ फ्यूसिफॉर्म गाइरस को अत्यधिक सहसंबद्ध कहा जाता है। न्यूरोसाइंटिस्ट पहले से ही जानते थे कि फ्यूसिफॉर्म गाइरस उच्च-स्तरीय दृश्य जानकारी को संसाधित करता है, लेकिन वास्तविकता से कल्पना की गई छवियों को अलग करने में इसकी भूमिका अज्ञात थी।

डिज्कस्ट्रा कहते हैं, इससे पता चलता है कि फ्यूसीफॉर्म गाइरस कुल कल्पना और वास्तविक उत्तेजना को बढ़ाता है। वे कहती हैं, ₹फ्यूसिफॉर्म ग्यारस इस 'रियलिटी सिग्नल' पर नज़र रख रहा है, यह विद्वता संकेत है कि तब वास्तविकता के निर्णयों की भविष्यवाणी करता है [क्या प्रतिभागियों ने छवि को वास्तविक माना है].₹

पूर्वकाल द्वीप, एक अन्य क्षेत्र जो प्रसंस्करण और गेटकीपिंग जानकारी के लिए एक केंद्रीय केंद्र है, ने गतिविधि तभी दिखाई जब प्रतिभागी ने धारियों को वास्तविक होने का न्याय किया। डिज्कस्ट्रा नोट करता है कि कल्पना की गई छवियों को वास्तविकता से अलग करने में पूर्वकाल द्वीप की भागीदारी की सीमा की पुष्टि करने के लिए आगे के अध्ययन की आवश्यकता है।

नेकसेलरीड का कहना है कि अध्ययन धारणा और कल्पना को अलग करने में एक महत्वपूर्ण प्रारंभिक कदम है, लेकिन वह बताते है कि जानकारी रिपोर्टिंग लोगों पर भरोसा अध्ययन अंय संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के लिए खाते की जरूरत है: उदाहरण के लिए, अगर एक प्रतिभागी का ध्यान भटक जब धारियों प्रयोग के दौरान दिखाया जाता है, वे गलत तरीके से रिपोर्ट कर सकते है कि छवि असली नहीं था।

डिज्कस्ट्रा और नेकसेलरीड दोनों अधिक जटिल छवियों, जैसे चेहरे और दृश्यों के साथ दो क्षेत्रों में मस्तिष्क गतिविधि का निरीक्षण करना चाहते हैं, क्योंकि यह इस बारे में अधिक जानकारी प्रदान करेगा कि यह प्रक्रिया वास्तविक दुनिया के दृश्य प्रसंस्करण में कैसे काम करती है, विशेष रूप से उन लोगों में जो दृश्य मतिभ्रम का अनुभव करते हैं।

अंकों के बजाय गुणवत्ता को तरजीह दें

विजय गर्ग

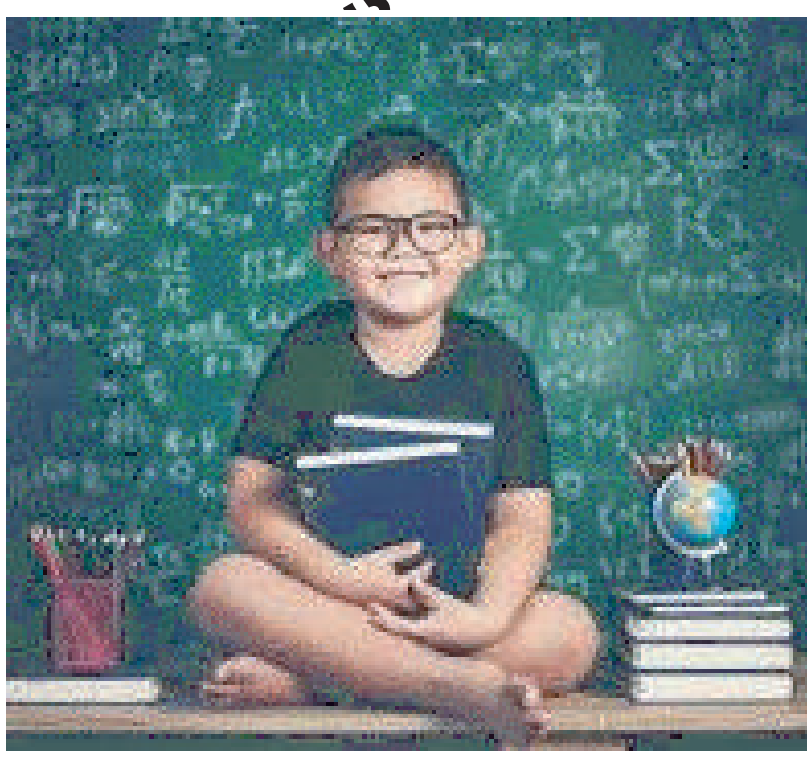

रोजमर्रा की जीवनशैली में जिंदगी की जरूरतों से उलझते - सुलझते हम कई बार मुख्यधारा की स्थापनाओं या धारणाओं से इस कदर दब जाते हैं कि जो दुनिया सोच-समझ या कर रही होती है, उसी के सुर में सुर मिला कर वैसा ही करने लगते हैं। जीवन की गतिविधियों के इस पहलू की व्यापकता तो काफी बड़े दायरे में फैली हुई है, लेकिन इस बार हम अपने जीवन में महत्त्वकांक्षाओं और सपनों के यथार्थ से टकराव के एक नतीजे पर गौर करते हैं।

आकलन का आधार

मसलन, अगर हमारे घर में स्कूल जाने वाले बच्चे हैं तो उनकी मुख्य उपलब्धि हमारे लिए क्या होती है ? पढ़ाई- लिखाई की गुणवत्ता को हमारा बच्चा अपने भीतर किस स्तर पर समाहित करता है, इस पर गौर करने के बजाय उसके बारे में हमारे आकलन का आधार मुख्य रूप से यह होता है कि परीक्षा में उसने कितने अंक प्राप्त किए। अगर उसने ऊंचे अंक हासिल किए, तब हम खुश हो जाते हैं, बच्चे को पुरस्कार स्वरूप तोहफे देते हैं, उसके बारे में अपने नाते-रिश्ते में सबको खुश होकर बताते हैं । लेकिन ठीक इसके विपरीत जब किन्हीं वजहों से उसे अपेक्षा से कम अंक आता है, तो हम न केवल खुद शर्म और अफसोस से भर जाते हैं, बल्कि अपने बच्चे को भी अलग-अलग तरह से अपमानित और प्रताड़ित करने लगते हैं। सवाल है कि क्या ऐसा करने से हम अपने बच्चे के व्यक्तित्व और भविष्य को बेहतर कर पाते हैं? इसका स्पष्ट जवाब है- नहीं बल्कि ऐसा करके हम बच्चे के व्यक्तित्व को और ज्यादा नुकसान ही पहुंचाते हैं।

अगर किसी बच्चे ने अपनी मेहनत से साठ फीसद अंक हासिल किए हैं, उस पर डांट-फटकार या अपमानित किए जाने, अपने माता- पिता के शर्म करने का नतीजा यह होता है कि बच्चा और ज्यादा हीन भावना से भर जाता है। ज्यादा अंक लाने पर जोर देने या

ज्यादा अंक लाने वाले को ही बेहतर

मानने की बात ऐसे बच्चों के आत्मविश्वास को कमजोर कर देती है और इसके बाद वह अगली परीक्षा में और भी खराब परिणाम ला सकता है।

योग्यता या गुणवता हकीकत यह है कि अव्वल तो ज्यादा अंक हासिल करना किसी की स्कूल या फिर प्रतियोगिता परीक्षा में अंकों के आधार पर मापी गई योग्यता या गुणवत्ता आधारित शिक्षा से लैस होने का सूचक नहीं हो सकती। कई बार कम अंक प्राप्त करने वाले बच्चे भी ज्यादा या नब्बे फीसद या इसके करीब अंक लाने वाले के

मुकाबले ज्यादा बुद्धिमान और कुशल होते हैं। उनका व्यक्तित्व ज्यादा अंक लाने वालों के मुकाबले ज्यादा सशक्त हो सकता है। वह विचार के स्तर पर बेहतर हो सकता है।

बराबर सम्मान

इसके अलावा, अगर अभिभावकों को इस बात की फिक्र है कि उनका बच्चा ज्यादा अंक हासिल करे तो यह जरूरी है कि कम अंक लाने पर भी बच्चों को बराबर स्तर पर सम्मान करें, उनकी क्षमता को खुश होकर स्वीकार करें और उसे इतने पर भी प्रोत्साहित करें। एक छोटा प्रोत्साहन बच्चे को बेहतर से बेहतर करने के लिए प्रेरित कर सकता है, नई ऊर्जा से भर दे सकता है। इस तरह का प्रोत्साहन और स्वीकार कई बार बच्चों के भीतर किसी कोने में छिपी क्षमता और आत्मविश्वास को बाहर ला दे सकता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

सदी का त्रासद विमान हादसा

ल भर में ही तमाम ख्वाहिशें, सपने, परिवार चिंदी-चिंदी हो गए। जीवन राख बन गया। बहरहाल अब जांच का दायरा 'अंतरराष्ट्रीय' हो गया है। 'अंतरराष्ट्रीय नागरिक विमानन संगठन' को 30 दिनों के भीतर रपट सौंपनी होगी। बुनियादी जांच 'एयरक्राफ्ट एक्सीडेंट इनवेस्टिगेशन ब्यूरो' (एएआईबी) ही करेगा, जो भारत सरकार के नागरिक विमानन मंत्रालय से ही संबद्ध एक कार्यालय है। भारतीय वायुक्षेत्र में सभी गंभीर विमान हादसों की जांच यही ब्यूरो करता है। बहरहाल सभी रपटों को सार्वजनिक जरूर किया जाए, ताकि आम आदमी भी हादसे के कारण जान सके। यह विमान हादसा सबसे त्रासद इसलिए है, क्योंकि विमान एक मेडिकल कॉलेज के हॉस्टल की इमारत से टकराया और उसका एक हिस्सा इमारत में ही फंसा रह गया। वह दोपहर का भोजन करने का समय था, लिहाजा मेस में कुछ डॉक्टर, एमबीबीएस छात्र, नर्सिंग छात्र और अन्य खाना खा रहे थे। विमान वज्रपात की तरह क्रैश हुआ और धडक़ती जिंदगियों को पल भर में ही लाश बना दिया। कुछ तो विमान की आग के तापमान में जल कर खाक हो गए। ऐसी मौतों की संख्या 27 बताई गई है और 20 डॉक्टर लापता बताए जा रहे हैं। कितनी भयावह त्रासदी है यह! मन चीत्कार कर रहा है। मौतों की पुष्टि के बाद ही अधिकृत आंकड़ा देना नैतिक होगा।

वैसे दुनिया के सामने सब स्पष्ट है कि कितना विध्वंसक हादसा है यह! इसे सामान्य घटना तो कोई मान ही नहीं सकता, लेकिन अचंभा है कि बोइंग 787-8 ड्रीमलाइनर सरीखा आधुनिक, विकसित और सबसे अधिक भरोसेमंद विमान इस तरह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हुआ? बोइंग विमान के 14 साल के सफर में 1175 विमानों में, 2100 उड़ानें प्रतिदिन के हिसाब से, 1 अरब से अधिक यात्री अब तक उड़ान भर चुके हैं। एक भी ड्रीमलाइनर विमान क्रैश नहीं हुआ। इसे लंबी दूरी का सबसे विशिष्ट विमान माना जाता है। दुनिया की बड़ी विमानन कंपनियां इन्हीं विमानों का इस्तेमाल करती रही हैं, लेकिन खूबियों के बावजूद ड्रीमलाइनर विमान में तकनीकी खामियां भी सामने आती रही हैं। ये खामियां भारतीय संसद में भी गूंज चुकी हैं। अधिकतर विशेषज्ञों के आकलन हैं कि विमान के दोनों इंजन बंद हो गए, लिहाजा विमान को थ्रष्ट नहीं मिल पाया, नतीजतन 625 फीट तक उड़ान भरने के बाद विमान ऊपर नहीं जा सका। अंततः नीचे आकर क्रैश हो गया। विशेषज्ञ यह सवाल भी करते हैं कि अचानक दोनों इंजन कैसे फेल हो गए? विमान में जीई कंपनी के इंजन लगाए जाते हैं, जो सबसे विश्वसनीय माने जाते रहे हैं। विमान से ईंधन लीक होने, लीथियम बैटरी, कम्प्यूटर चिप संबंधी चेतावनियां सामने आती रही हैं। बैटरी के कारण ज्यादा हीटिंग भी एक भयंकर समस्या है। ये चिप ऐसी हैं, जिन्हें हैक किया जा सकता है। जहां हादसा हुआ है, वहां विशेषज्ञ पक्षियों की आशंका से भी इंकार नहीं कर रहे हैं। स्पीड सेंसर ने ठीक से काम न किया हो, उससे विमान को स्पीड सिस्टम का गलत डाटा मिल रहा होगा। साफ्टवेयर की गलती भी हो सकती है। उड़ान भरते ही कोई समस्या आई होगी, लिहाजा पायलट सुमित सभ्रवाल को 'मे डे कॉल' (जानलेवा खतरे की कॉल) करनी पड़ी। पायलट को 8200 घंटे उड़ान का अनुभव था, लिहाजा मानवीय त्रुटि की बात गले नहीं उतरती। बोइंग

कहानी: गुलबानो

विजय गर्ग

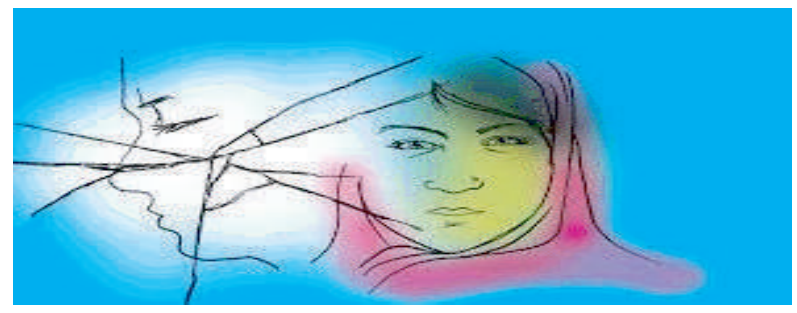

गुलबानो उस समय कपड़े धो रही थी और कपड़े धोने वाले सोटे की ठप्प-ठप्प के साथ कोई गीत गुनगुना रही थी। खुशदिल ख़ान ने वही सोटा उससे छीनकर उसके सिर में दे मारा और कहा, 'जानती नहीं, गाना कुफ़्र है?' फिर उसकी बांह पकड़कर घसीटते हुए उसे आंगन में ले आया, 'बता, चन्दन वाली बात सच है?' गुलबानो चुप। अपने जीवन में एक अकेले सच को वह कैसे झूठ कह दे? खुशदिल ख़ान उसको घसीटते-घसीटते ऊपर छत पर ले गया, 'आ, तुझे चन्दन से मिलवाऊं...।'

अजीत कौरखुशदिल ख़ान गार्ड की बीवी गुलबानो बेहद सुंदर थी।

आसपास के बीसियों गांवों में एक! सिर्फ़ एक! दूसरी बनाई ही नहीं थी बनाने वाले ने।

लम्बी ऊंची पठानी। मुंह जैसे कच्चे दूध का कटोरा हो! अंग जैसे साग के कोमल डंठल! और सुंदर, मानो परियों की रानी! चांद की कतरन!

पर हर परी को जैसे कोई देव अपने पत्थर के किले में कैद करके रखता है, वैसे ही खुशदिल ख़ान गार्ड ने गुलबानो को छिपा रखा था।

यूं भी सभी पठान अपनी बीवियों को ऐसे छिपाकर रखते हैं मानो ब्याहकर न लाए हों, उन्हें लूटकर लाए हों कहीं से। लेकिन, खुशदिल ख़ान गार्ड की बीवी की तो छाया भी कभी किसी मर्द ने नहीं देखी थी।

खुले मौसम में सभी गांव की औरतें मिलकर शहर में सौदा खरीदने जातीं। हर औरत उस घड़ी की प्रतीक्षा ऐसे करती, जैसे किसी मेले की। सज-धजकर, बुर्के पहनकर घर से निकल पड़तीं। सबसे आगे ढोल बज रहा होता। दूर से ढोल की आवाज़ सुनकर पठान रास्ता छोड़ देते। गांव के बाहर जब किसी के देख लेने का भय न रहता तो वे सभी बुर्कों के नकाबों को ऊपर उठा लेतीं और उनके मेहंदी रंगे चांदी की पाजेबों वाले पांव ढोल की ताल पर नाचते-नाचते बावरे हो जाते। काफ़ी समय से ज़बरदस्ती रोककर रखा हुआ नृत्य और उल्लास उनकी एड़ियों से फूट पड़ता।

जैसे-जैसे वे आगे बढ़तीं, राह में जो जो गांव आता, उन सबकी औरतें उनके साथ हो लेतीं। लेकिन जब वे खुशदिल ख़ान गार्ड के गांव गढ़ी महाज़ ख़ां पहुंचती, तो सभी के दिल में एक टीस-सी उठने लगती। यह दर्द गुलबानों के कलेजे-में एक असहय पीड़ा बनकर रह जाता। गांव की सब औरतें उनके साथ हो लेतीं, पर बेचारी गुलबानों घर की दीवारों में घिरी रह जाती। खुशदिल ख़ान गार्ड ने कभी जाने की इजाज़त ही नहीं दी।

सारी औरतें खुशदिल ख़ान गार्ड के घर जातीं, पिंजरे में बन्द गुलबानो के घर। फिर सब उसके आंगन में नाचना शुरू कर देतीं। ढोल बजता रहता और सेब, अमरूद, भुट्टे, खुरमानियां, चिलगोजे, किशमिश, काजू, गुड़ और मिसरी आदि बांटे जाते। सब मिलकर खातीं और गातीं।

गुलबानो को देखकर सबके दिल पर बादल घटाएं बनकर बरसने-बरसने को हो आते। नीचे झुक आते और नीम-अंधेरा-सा घिर आता। न बरसते, न रोशनी को और हवा को भीतर आने देते।

ढोल की ढम्म-ढम्म में पीड़ के बोल साकार हो उठते। पठानी औरतें नृत्य करतीं तो उनकी एड़ियों से मानो कोई दर्द विलाप कर उठता।

और गुलबानो? उसकी पीड़ा उन रातों की तरह थी जिन्हें अंधेरी राहों पर ठोकर लग जाती है और लाखों सितारे जिनके दर्द में कोयले से सुलग उठते हैं।

औरतें अपनी राह लेतीं। गुलबानो को लगता, उसके घर की दीवारों की तपती हुई भट्टी में उसका जीवन जलकर राख हो जाएगा।

खुशदिल ख़ान गार्ड के यार-दोस्त कहा करते कि उसे भी अपनी बीवी को दूसरी औरतों के संग जाने देना चाहिए। लेकिन वह किसी की न सुनता। लोग कहते, 'गाय-भैंसों को भी तो झुंड के साथ बाहर भेजते हैं कि नहीं?' वह चुप ही रहता।

जब भी औरतों का झुंड खुशदिल ख़ान गार्ड के घर आता, वह क्रोध से लाल हो उठता और बारी-बारी से सबसे झगड़ने लग पड़ता। दफ्तर में मातहतों पर गरम और घर में नौकरों से नाराज़। बच्चों पर बात-बात पर बरसता। बीवी को अहसास कराता कि वो छोटी-सी चींटी से भी गई गुजरी है। हैसियत ही क्या है उसकी? अगर खुशदिल ख़ान से ब्याह न होता उसका, तो क्या करती वो?

वह बर्तन फोड़ देता, चीज़ें तोड़ देता। मानो कोई आंधी घर के दरवाजे तोड़कर अन्दर आ गई हो।

फिर जैसे-जैसे दिन व्यतीत होने लगते, आंधी खुद-ब-खुद शांत हो जाती। ज़िन्दगी अपनी राह हो लेती, ऐसी राह पर जहां नया कुछ न होता, न ही कुछ नया होने की संभावना होती। गुलबानो के प्राण घर की दीवारों को ऐसे अंगीकार कर लेते, मानो वो उसके जिस्म की ही दूसरी खाल हों।

खुशदिल ख़ान गार्ड के घर में बरसों से चन्दन नाम का एक व्यक्ति दूध देने आया करता था। उसकी निगाह सदा आंगन में कुछ खोजती-सी रहती, लेकिन उसे गुलबानो के दर्शन कभी नहीं हुए।

फिर एक दिन...

चन्दन ने अभी गागर बरामदे में रखी ही थी कि अन्दर आंगन में से गुलबानो गुजरी। उसने चन्दन को नहीं देखा, लेकिन चन्दन को उसकी एक झलक-भर मिल गई। उसे लगा, गुलबानो की खूबसूरती सागर जल से धुली, दूध-सी सफेद, एक चमकदार सीपी के समान है। वह गुलबानो के रूप की एक ही झांकी पाकर बादशाह हो गया।

चन्दन जहां कहीं उठता-बैठता, गुलबानो की बातें करता। उसका चेहरा ऐसा था, उसकी चाल ऐसी, कपड़े फलां रंग के, गहने... उसके हाथ... चलते हुए उसके पांव...

गुलबानो चन्दन के सामने से आंगन में गुजरी थी - साकार गुलबानो! गुलबानो खुद! और चन्दन के मन के अंधेरे आकाश में बिजली-सी कौंध गई।

उनकी आपस में कभी कोई बात नहीं हुई। गुलबानो ने चन्दन की तरफ देखा तक नहीं। चन्दन को लगा, जैसे यह सब सपना है, एक ऐसा सपना जो पंख फैलाकर उसके मन में, उसकी आत्मा में, उसकी सोच में, उसके ख़यालों में, उसके समूचे वजूद को ढककर बैठ गया था। इन मुलायम और गर्म पंखों के नीचे कई चाहतें, कई सपने, कई कल्पनाएं, आशाएं अपनी छोटी, पतली और लम्बी गर्दनें निकालकर निरीह और भयहीन आंखों से संसार का स्तंभित-सी देख रही थीं - उस आकाश, उस धरती को जो लाखों वर्ष पुरानी थी, परन्तु उसके लिए आज ही, अभी, कच्चे दूध-सी मीठी और कुनकुनी, सिरफ़ उसके लिए बनी थी, सिरफ़ उसी के लिए ही।

एक ओर चन्दन था जिसके दिल की दहलीज गुलबानो की एक ही झलक से खुल गई और धरती-आसमान दोनों उसमें समा गए।

दूसरी तरफ खुशदिल ख़ान था जो गुलबानो की बरसों की निकटता पाकर भी पत्थर बना रहा, एक ऐसा पत्थर जो लावे में जल-भुनकर कंकड़ बन जाता है।

एक गुलबानो थी जो खुशदिल ख़ान के पास रहते हुए भी उससे कोसों दूर थी।

और उधर एक गुलबानो थी, जो चन्दन से कोसों दूर रहते हुए भी उसकी सांसों में समाई हुई थी।

गुलबानो को उसकी एक सहेली ने बताया कि उसके घर दूध देने वाला चन्दन झूम-झूमकर उसके हाथों, पांवों, बालों और होठों की तारीफ़ में सब तरफ़ गाता घूमता है।

अगले दिन चन्दन की दूध की गागर से एक धार जब उसके घर की गागर में गिरी तो गुलबानो ने द्वार की फांक में से पलकभर देखा। उसे लगा, दूध की एक धार चन्दन की गागर से निकलकर उसकी अपनी देह में समा गई है।

अब गुलबानो घर के आंगन में चलती तो उसके पांव थिरक-थिरक जाते। उसका जीवन संगीतमय हो गया। गीतों की कड़ियां खुद-ब-खुद उसके होठों पर आने लगीं। मस्ती के खुमार में आंखों को बन्द किए वह देर तक अपने अन्दर के गुनगुने पानियों में डूबी रहती।

उसके मानस के खाली पड़े आंगन में एक पौधा उगा - चन्दन के प्यार का पौधा। और उसके जीवन के सभी गंधहीन बरस सुवासित हो उठे, महक-महक उठे। उसकी आत्मा की सीपी में एक बूंद प्यार की टपकी, और वह इश्क रूपी असली मोती बन गई।

उस बार जब समीप के गांवों की औरतें ढोल की ताल पर नृत्य करतीं उसके घर के आंगन में आईं, तो ढोल भी खुश था और गुलबानो भी खुश! गुलबानो को खुश देखकर सभी औरतें खुश थीं। और गांव से दूर, नदी के किनारे भैंसों को नहलाता चन्दन भी खुश। इस दिन यदि कोई खुश नहीं था तो वह था - खुशदिल ख़ान गार्ड।

आहिस्ता-आहिस्ता चन्दन की कही हुई बातें लोगों की जुबानी खुशदिल ख़ान तक पहुंची। उसका सिर घूम गया। आंखों में खून उतर आया। इसी हालत में वह घर पहुंचा।

गुलबानो उस समय कपड़े धो रही थी और कपड़े धोने वाले सोटे की ठप्प-ठप्प के साथ कोई गीत गुनगुना रही थी। खुशदिल ख़ान ने वही सोटा उससे छीनकर उसके सिर में दे मारा और कहा, 'जानती नहीं, गाना कुफ़्र है?'

फिर उसकी बांह पकड़कर घसीटते हुए उसे आंगन में ले आया, 'बता, चन्दन वाली बात सच है?'

गुलबानो चुप। अपने जीवन में एक अकेले सच को वह कैसे झूठ कह दे?

खुशदिल ख़ान उसको घसीटते-घसीटते ऊपर छत पर ले गया, 'आ, तुझे चन्दन से मिलवाऊं...।'

फिर उसने छत से गुलबानो को नीचे धक्का दे दिया। वह धड़ाम से गली में आ गिरी। एक चीख़ गूंजी और बस...

आवाज़ सुनते ही लोग चारों ओर से दौड़ पड़े। खुशदिल ख़ान ने ऊपर छत पर से देखा, उसकी बीवी नंगे मुंह गली में पड़ी है और सब लोग उसे देख रहे हैं।

वह दौड़ा-दौड़ा नीचे उतरा। अन्दर से एक मोटी चादर लेकर गली में पहुंचा और झटपट गुलबानो के मुंह पर डाल दी।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट

स्वप्न से सिद्धि तक: डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की प्रेरक विरासत

[एक देश, एक विधान, एक निशान – विचार से बलिदान तक : डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी]

जब इतिहास के पन्नों पर साहस, बलिदान और राष्ट्रभक्ति की अमर गाथा लिखी जाती है, तो डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का नाम स्वर्णिम अक्षरों में उभरता है। वे एक व्यक्ति नहीं, एक विचार थे; एक ऐसी ज्वाला, जो भारत की अखंडता और गौरव के लिए जलकर भी अनंत प्रेरणा देती है। उनकी पुण्यतिथि कोई साधारण स्मरण नहीं, बल्कि एक हुंकार है—हर भारतीय के हृदय में राष्ट्र के लिए जीने, लड़ने और मरने की चेतना जगाने वाली। वे उस युग के ध्रुवतारे थे, जिन्होंने न केवल अपने समय को रोशन किया, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक ऐसा मार्ग प्रशस्त किया, जो सत्य, साहस और समर्पण से बना है।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जन्म 6 जुलाई, 1901 को कोलकाता के एक प्रतिष्ठित बंगाली परिवार में हुआ, जहां संस्कृति, शिक्षा और नैतिकता का अनूठा संगम था। उनके पिता, सर आशुतोष मुखर्जी, एक महान शिक्षाविद् और बैरिस्टर थे, जिनसे उन्हें बौद्धिक तेज और देशसेवा का जुनून विरासत में मिला। युवावस्था में ही उनकी प्रतिभा ने सबको आश्चर्यचकित कर दिया। 1923 में बीए और 1924 में एमए की डिग्री हासिल करने के बाद, उन्होंने बैरिस्टर बनकर कानूनी क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई। लेकिन उनकी असली उड़ान तब शुरू हुई, जब मात्र 33 वर्ष की आयु में वे कोलकाता विश्वविद्यालय के कुलपति बने—एक ऐसा रिकॉर्ड, जो उनकी असाधारण बौद्धिकता और प्रशासनिक क्षमता का जीवंत प्रमाण था। इस पद पर रहते हुए उन्होंने शिक्षा को राष्ट्र निर्माण का आधार बनाया और भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए कई क्रांतिकारी सुधार किए, जो आज भी प्रेरणादायक हैं।

स्वतंत्रता संग्राम के दौर में, जब भारत गुलामी की जंजीरों को तोड़ने के लिए छटपटा रहा था, डॉ. मुखर्जी ने अपनी बौद्धिक शक्ति और वैचारिक दृढ़ता से राष्ट्रीय आंदोलन को नई ऊर्जा दी। शुरू में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ थे, लेकिन जब उन्हें लगा कि कांग्रेस की नीतियाँ राष्ट्रहित से भटक रही हैं, तो उन्होंने सिद्धांतों से समझौता करने के बजाय अपनी राह चुनी। उन्होंने नेताजी सुभाष चंद्र बोस जैसे क्रांतिकारियों का समर्थन किया और बंगाल में हिंदू महासभा को एक सशक्त मंच बनाया। स्वतंत्रता के बाद, जब वे भारत के पहले मंत्रिमंडल में उद्योग और आपूर्ति मंत्री बने, तो उन्होंने देश की औद्योगिक नींव को मजबूत करने के लिए दूरदर्शी कदम उठाए। लेकिन उनकी असली अग्निपरीक्षा तब आई, जब जम्मू-कश्मीर के मुद्दे पर केंद्र सरकार की नीतियाँ उन्हें राष्ट्रविरोधी प्रतीत हुईं।

डॉ. मुखर्जी का विश्वास था कि जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है और धारा 370 के तहत दिया गया विशेष दर्जा देश की एकता के लिए घातक है। उन्होंने 'एक देश, एक विधान, एक निशान' का नारा दिया—एक ऐसा नारा, जो केवल शब्द नहीं, बल्कि भारत की संप्रभुता और अखंडता का प्रतीक बन गया। इस मुद्दे को उन्होंने संसद से लेकर

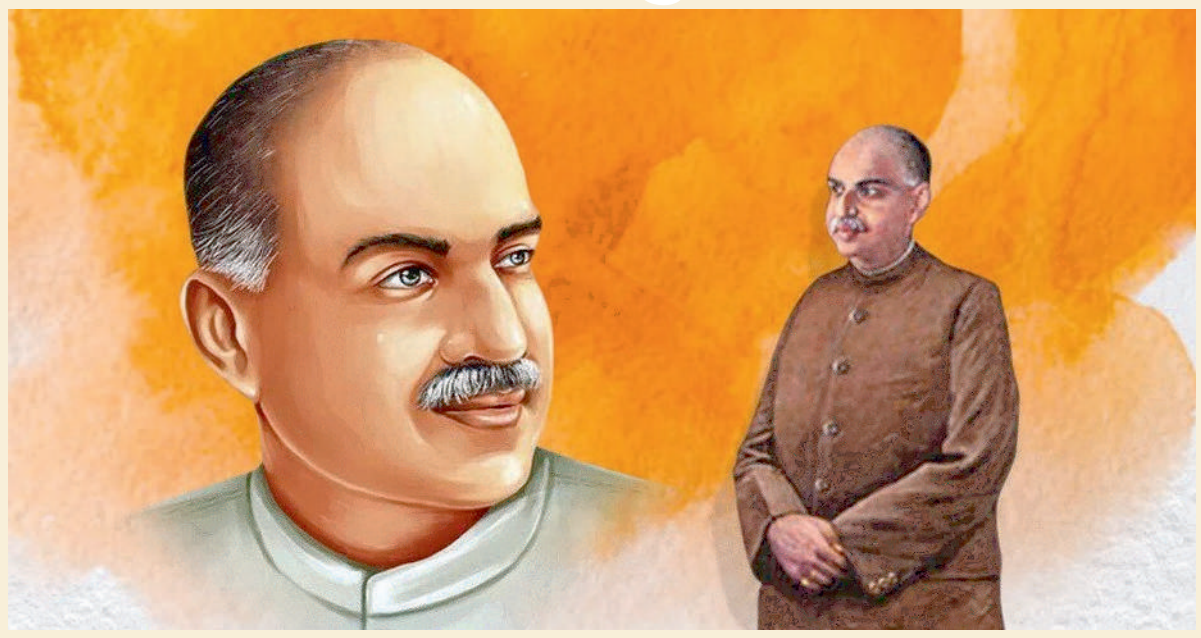

सड़कों तक बुलंद किया। जब उनकी आवाज को दबाने की कोशिश हुई, तो उन्होंने 1951 में भारतीय जनसंघ की स्थापना की — जो आज भारतीय जनता पार्टी के रूप में देश की सबसे बड़ी राजनीतिक शक्ति बनी है। यह एक राजनीतिक दल से कहीं अधिक था—यह एक वैचारिक क्रांति थी, जो राष्ट्रवाद और भारतीय संस्कृति को केंद्र में रखकर देश को एक नई दिशा देना चाहती थी।

1953 में, डॉ. मुखर्जी ने धारा 370 के खिलाफ जम्मू-कश्मीर में सत्याग्रह शुरू किया। उनका संदेश स्पष्ट था—कश्मीर भारत का हिस्सा है, और किसी भारतीय को वहां प्रवेश के लिए परमिट की जरूरत नहीं। लेकिन यह यात्रा उनके जीवन की अंतिम यात्रा बन गई। 8 मई, 1953 को उन्हें श्रीनगर में गिरफ्तार कर लिया गया और जेल में रखा गया। 23 जून, 1953 को रहस्यमयी परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु आज भी सवालों के घेरे में है—क्या यह हत्या थी? क्या यह एक साजिश थी? लेकिन इन सवालों से बड़ा सत्य यह है कि उनकी मृत्यु एक व्यक्ति का अंत नहीं, बल्कि एक विचारधारा का बलिदान था—जो भारत की एकता को सर्वोच्च मानती थी।

उनका बलिदान व्यर्थ नहीं गया। उनके विचारों ने लाखों लोगों को प्रेरित किया, और भारतीय जनसंघ ने उनके सपनों को साकार करने का संकल्प लिया। 2019 में, जब भारत सरकार ने धारा 370 को समाप्त किया, तो यह डॉ. मुखर्जी के बलिदान की सच्ची जीत थी। यह उस सपने की पूर्ति थी, जिसके लिए उन्होंने अपने प्राण न्यौछावर किए। लेकिन उनका योगदान केवल कश्मीर तक सीमित नहीं था। वे एक ऐसे भारत के स्वप्नद्रष्टा थे, जहां जाति, धर्म, भाषा या क्षेत्र की दीवारें न हों। वे चाहते थे कि भारत अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करे, लेकिन आधुनिकता और प्रगति के रास्ते पर भी अग्रसर हो।

डॉ. मुखर्जी का जीवन हमें सिखाता है कि सच्ची राष्ट्रभक्ति सत्ता की चाह में नहीं, बल्कि सिद्धांतों की अडिगता में है। उन्होंने सत्ता का त्याग किया, लेकिन सत्य और राष्ट्रहित को कभी नहीं छोड़ा। उनकी पुण्यतिथि हमें यह याद दिलाती है कि राष्ट्र निर्माण केवल नेताओं का काम नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। हमें उनके जैसे निर्भीक, निष्ठावान और समर्पित बनना होगा। हमें यह पूछना होगा—क्या हम उनके सपनों के भारत को साकार करने के लिए तैयार हैं? क्या हम उनके बलिदान का मूल्य समझते हैं?

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की पुण्यतिथि एक मशाल है, जो हमें अंधेरे में भी मार्ग दिखाती है। यह एक संकल्प का क्षण है—राष्ट्र के लिए जीने का, राष्ट्र के लिए लड़ने का, और यदि जरूरत पड़े, तो राष्ट्र के लिए मरने का। वे भले ही आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी चेतना हर उस भारतीय के हृदय में धड़कती है, जो भारत को सर्वोपरि मानता है। उनकी मृत्यु एक अंत नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत थी—एक ऐसे भारत की शुरुआत, जो एकजुट, सशक्त और गौरवशाली हो। उनकी ज्योति आज भी हमें पुकारती है—उठो, जागो, और अपने कर्तव्यों को निभाओ। यह संकल्प ही उनकी सच्ची श्रद्धांजलि है, और यही वह शक्ति है, जो हमें उनके सपनों के भारत की ओर ले जाएगी।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

डिजिटल युग में निजता और सुरक्षा है महत्वपूर्ण

आज का युग डिजिटल युग है और इस डिजिटल युग में साइबर सुरक्षा एक बहुत बड़ा मुद्दा है। कहना ग़लत नहीं होगा कि डिजिटल युग के साथ ही भारत ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में डेटा की सुरक्षा एक बहुत बड़ा मुद्दा हो गया है। बड़ा मुद्दा इसलिए क्यों कि डिजिटल दुनिया में भी निजता(प्राइवेसी) और सुरक्षा वास्तविक दुनिया जितनी ही महत्वपूर्ण होती है। आज की दुनिया में डेटा या सूचना ही सबकुछ है। दरअसल, आज जिसके पास डेटा या सूचना उपलब्ध है, वह सबसे धनी है, क्यों कि सूचनाओं का इस्तेमाल करके बहुत कुछ किया जा सकता है। इसलिए डेटा या सूचना की सुरक्षा, जिसे हम इलेक्ट्रॉनिक सूचना का नाम भी दे सकते हैं, आज के इस डिजिटल होते युग में बहुत जरूरी हो चुकी है। दरअसल साइबर सुरक्षा हमारे कंप्यूटर सिस्टम, नेटवर्क, प्रोग्राम और डेटा को डिजिटल हमलों से बचाने की प्रक्रिया है। वास्तव में इसका उद्देश्य विभिन्न एप्लीकेशंस, क्लाउड व , नेटवर्क तक किसी भी अनधिकृत पहुंच(अन अथराइज्ड रीच), उपयोग, प्रकटीकरण, व्यवधान, संशोधन या विनाश से सुरक्षा करना है। कहना ग़लत नहीं होगा कि साइबर सुरक्षा आज के डिजिटल युग में बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि हम सभी अपनी डिजिटल जानकारी और प्रणालियों पर निर्भर हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो आज के समय में (डिजिटल युग में) हमारी निजी और पेशेवर जिंदगी का ज्यादातर हिस्सा ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों पर ही निर्भर हो चुका है। हम अपने आफिस, घर, व्यापार के लिए विभिन्न आनलाइन प्लेटफार्मों पर ही निर्भर हैं और ऐसे समय में हमारे डाटा की सुरक्षा(सूचनाओं की सुरक्षा)एक बहुत ही गंभीर व संवेदनशील मुद्दा बन चुका है। जैसा कि आज के समय में साइबर अपराधी हमारे इस डाटा या हमारी सूचनाओं का दुरुपयोग करके वित्तीय धोखाधड़ी और अन्य अपराधों को कभी भी अंजाम दे सकते हैं, ऐसे में यह स्थिति उन लाखों-करोड़ों डिजिटल उपयोगकर्ताओं के लिए एक बड़े खतरे की घंटी है, जो अपनी विभिन्न दैनिक गतिविधियों के लिए इन प्लेटफॉर्मों पर ही निर्भर हैं। बहरहाल, पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि हाल ही में एप्पल, गूगल, फेसबुक, गिटहब और टेलीग्राम समेत कई अन्य कंपनियों(सरकारी एजेंसियों) के करीब 16 अरब पासवर्ड और लॉगइन क्रेडेंशियल लीक हो गये।डेटा लीक का यह कोई साधारण और छोटा मामला कहा जा सकता है। आज के इस डिजिटल युग में आम आदमी के डेटा में सेंध लगाई जा रही है और यह सेंध कहीं न कहीं साइबर सुरक्षा की कमजोरियों को ही उजागर करती है। आज यदि किसी व्यक्ति के अकाउंट आसानी से एक्सेस किए जा रहे हैं तो वास्तव में यह बहुत चिंताजनक बात है। आज डेटा की आनलाइन सेल तक की जा रही है। दरअसल,साइबर सिक्योरिटी रिसचर्स ने यह पाया है कि 16 अरब से ज्यादा क्रेडेंशियल डार्क वेब पर ऑनलाइन सेल के लिए उपलब्ध हैं। इस संबंध में एक्सपर्ट्स का यह कहना है कि अगर वक्त रहते इससे निपटा नहीं गया तो लोगों को फिशिंग अटैक, आईडी थेफ्ट और यहां तक कि अकाउंट का कंट्रोल तक खोना पड़ सकता है।बताया जा रहा है कि बड़े पैमाने पर पासवर्ड लीक के लिए कई इन्फोस्टेलर मैलवेयर जिम्मेदार हैं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार 30 डेटासेट लीक हुए, जिनमें प्रत्येक में 3.5 अरब से अधिक रिकॉर्ड शामिल हैं जिस वजह से ये आंकड़ा 16 अरब पहुंच गया। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि साइबर न्यूज और फोर्ब्स की रिपोर्ट का यह खुलासा हुआ है कि यह वह डाटा नहीं है, जो वर्षों से इंटरनेट की दुनिया में भटक रहा है, बल्कि यह तो नया डाटा है, इसलिए यह चिंताजनक हो जाता है। आज की इस डिजिटल दुनिया में साइबर अपराधी हर जगह सक्रिय हैं और फोन हैक करने से लेकर बैंक अकाउंट से पैसे तक निकाल लेते हैं। दरअसल, साइबर अपराधी हमारी पहचान, हमारे बारे में सूचनाएं व जानकारी चुराकर, प्राप्त कर हमारे साथ फ्रॉड(धोखाधड़ी) करते हैं। वे हमें ई-मेल या कोई लिंक भेजकर हमें शिकार बना लेते हैं। कई बार यह भी देखा गया है कि साइबर अपराधी हमें विभिन्न फेक ऑफर्स का भी झांसा देते हैं, जिसमें वो हमारे फोन नंबर, बैंक अकाउंट नंबर, पेन कार्ड या क्रेडिट कार्ड के नंबर और पता आदि पूछते हैं। जैसे ही हम इन जानकारियों को उनके साथ शेयर करते हैं, इतने में ही साइबर अपराधी अपना काम कर डालते हैं और हम अपना सा मुंह लेकर बैठ जाते हैं।कई बार हम अपने विभिन्न सोशल मीडिया प्रोफाइल में अपना नंबर या कोई जानकारी, सूचना विशेष, फोटो या विडियो विशेष भी डाल देते हैं, जिसे साइबर अपराधी आसानी से देख सकते हैं और हमारे साथ फ्रॉड कर सकते हैं। इतना ही नहीं, अनेक बार फर्जी काल करके, हमारा वाई फाई, या कंप्यूटर लैपटॉप का पासवर्ड चुराकर भी साइबर अपराधी धोखाधड़ी करते हैं ऐप से भी फ्रॉड की घटनाओं को ये आसानी से अंजाम देते हैं, क्यों कि लुभावने ऐप्स के चक्कर में हम इन्हें अपने कंप्यूटर, लैपटॉप या एंड्रॉयड मोबाइल फोन में इंस्टाल कर लेते हैं और हमारे इन गैजेट्स में उपलब्ध समस्त सूचनाएं साइबर अपराधियों तक पहुंच जाती हैं, क्यों कि कई ऐसे ऐप्स हैं जिन्हें डाउनलोड करने के बाद जब इन ऐप्स को हम परमिशन देते हैं तब सूचनाएं साइबर अपराधियों तक पहुंच जातीं हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज जाने अनजाने में साइबर स्पेस में हमारा बहुत सा डाटा, सूचनाएं बगैर किसी रोक-टोक के मौजूद रहता है, क्यों कि हम सूचनाओं, जानकारियों को इस साइबर स्पेस में खुला छोड़ देते हैं। आज भारत दुनिया के सबसे बड़े इंटरनेट उपभोक्ताओं में से एक है। पाठकों को बताता चलूं कि भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा इंटरनेट बाजार है, जिसमें 900 मिलियन से अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं। आंकड़े बताते हैं कि भारत में दिसंबर 2024 के अंत तक, 970.16 मिलियन इंटरनेट उपभोक्ता थे. इसमें से 928.96 मिलियन वायरलेस इंटरनेट उपभोक्ता और 41.21 मिलियन वायरलाइन इंटरनेट उपभोक्ता थे।भारत में कुल इंटरनेट उपभोक्ताओं में से, 944.96 मिलियन ब्रॉडबैंड इंटरनेट उपभोक्ता और 25.20 मिलियन नैरोबैंड इंटरनेट उपभोक्ता थे। न केवल शहरी बल्कि आज ग्रामीण भारत में भी इंटरनेट उपयोग बढ़ रहा है, और एक रिपोर्ट के अनुसार इस साल यानी कि साल 2025 में 900 मिलियन से अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की उम्मीद है। गौरतलब है कि इस वृद्धि में 488 मिलियन ग्रामीण इंटरनेट उपयोगकर्ता शामिल हैं, जो कुल इंटरनेट आबादी का 55% है। आज हमारे देश में डिजिटल क्रांति आई है और यही कारण है कि आज हम डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन शिक्षा, वर्चुअल मीटिंग्स और स्वास्थ्य सेवाओं, आफिस , व्यापार जहां देखो वहां डिजिटल युग में नजर आने लगे हैं। जैसे जैसे डिजिटाइजेशन बढ़ा है, वैसे-वैसे साइबर अपराधों में भी बढ़ोत्तरी देखने को मिली है। सोलह अरब पासवर्ड और लॉगइन क्रेडेंशियल का लीक होना कोई साधारण घटना नहीं है। देखा जाए तो यह एक प्रकार से साइबर सुरक्षा के प्रति हमें एक गंभीर व बड़ी चेतावनी ही है। वास्तव में साइबर सुरक्षा के लिए हमें यह चाहिए कि हम हमेशा मजबूत पासवर्ड का उपयोग करें, उसे समय-समय पर बदलते रहें और कभी भी एक ही पासवर्ड का उपयोग कई खातों के लिए न करें। हमें यह चाहिए कि हम पासवर्ड मैनेजर का उपयोग करने पर विचार करें। हमें अपने सॉफ़्टवेयर और ऑपरेटिंग सिस्टम को अपडेट रखना चाहिए तथा एंटी-वायरस सॉफ़्टवेयर का उपयोग करना चाहिए। हमें अज्ञात प्रेषकों से ईमेल संलग्नक नहीं खोलना चाहिए तथा साथ ही अज्ञात प्रेषकों या अपरिचित वेबसाइटों से प्राप्त ईमेल में दिए गए लिंक पर क्लिक नहीं करना चाहिए। इतना ही नहीं, हमें सोशल मीडिया साइटों, मोबाइल डिवाइस आदि के लिए स्थान सेवाओं को अक्षम करने पर विचार करना चाहिए, क्यों कि यह हमारे स्थान डेटा की सुरक्षा करने और हमारे बारे में जानकारी को ट्रैक करने से रोकने में मदद करता है। संवेदनशील ब्राउज़िंग के लिए सार्वजनिक कंप्यूटर, साइबर कैफे या मुफ्त वाई-फाई का उपयोग करने से भी हमें बचना चाहिए, क्यों कि ऐसा करने से हमारी सूचनाएं, जानकारियां कभी भी लीक हो सकतीं हैं।मल्टी-फैक्टर ऑथेंटिकेशन (एमएफए) का उपयोग हमारे अकाउंट को सुरक्षित करने का एक अतिरिक्त स्तर है। हमें यह चाहिए कि हम अपने डेटा का नियमित रूप से बैकअप लें, ताकि हम किसी भी डेटा हानि की स्थिति में इसे पुनर्प्राप्त कर सकें।हम अपने डेटा, सूचनाओं का बैकअप क्लाउड में या किसी बाहरी हार्ड ड्राइव में ले सकते हैं।इन सबके अलावा आज जरूरत इस बात की है कि हम सब साइबर सुरक्षा के बारे में अधिक से अधिक जानें और समझें ताकि कोई धोखाधड़ी होने से हम बच पाएं। इन सबके अलावा नियमित सुरक्षा ऑडिट और पारदर्शी डाटा प्रबंधन नीतियों के साथ ही साथ साइबर कानूनों को भी आज सख्त करने की जरूरत है, ताकि ऐसी घटनाओं को रोका जा सके और दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा भी दी जा सके। वास्तव में आज जरूरत इस बात की है कि हम व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर साइबर सुरक्षा को प्राथमिकता दें। साइबर सुरक्षा की जिम्मेदारी हम सब पर है और यह किसी व्यक्ति विशेष, सरकार विशेष का विषय मात्र नहीं है। कुल मिलाकर यह बात कही जा सकती है कि डिजिटाइजेशन के साथ साइबर सुरक्षा आज की महत्ती आवश्यकता है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

कांग्रेस का डीएनए बदल रहा है — थरूर इसके उत्प्रेरक हैं?

[पार्टी लाइन या राष्ट्रहित? थरूर के रुख पर बढ़ता विवाद]

निलांबुर उपचुनाव ने इस तनाव को और बढ़ा दिया। 19 जून 2025 को थरूर ने दावा किया कि उन्हें उपचुनाव के प्रचार के लिए निमंत्रण नहीं मिला, न ही "एक मिस्ड कॉल" तक आई। उन्होंने कहा, "मैं वहां नहीं जाता, जहां मुझे बुलाया नहीं जाता।" यह बयान इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि निलांबुर उपचुनाव को अगले साल होने वाले केरल विधानसभा चुनावों के लिए कांग्रेस की रणनीति के लिहाज से अहम माना जा रहा था। हालांकि, केरल प्रदेश कांग्रेस समिति के अध्यक्ष सनी जोसेफ ने थरूर के दावे का खंडन किया, यह कहते हुए कि थरूर का नाम स्टार प्रचारकों की सूची में शामिल था, जो चुनाव आयोग को सौंपी गई थी। जोसेफ ने थरूर की अनुपस्थिति को उनकी विदेश यात्रा और व्यस्तता से जोड़ा। इस विरोधाभास ने यह सवाल उठाया कि क्या यह एक संचार त्रुटि थी, या जानबूझकर थरूर को दरकिनार करने की कोशिश?

भारतीय राजनीति में व्यक्तित्व और विचारधारा के टकराव कोई नई बात नहीं हैं, लेकिन जब बात कांग्रेस जैसे ऐतिहासिक दल और उसके प्रमुख चेहरों में से एक शशि थरूर की हो, तो यह चर्चा न केवल राजनीतिक गलियारों, बल्कि जनमानस में भी तीव्र हो उठती है। हाल ही में, तिरुवनंतपुरम के सांसद और कांग्रेस कार्य समिति के सदस्य शशि थरूर ने पार्टी के शीर्ष नेतृत्व के साथ मतभेद स्वीकार किए, जिसने उनके और कांग्रेस के बीच बढ़ती दूरी की अटकलों को हवा दी। यह विवाद तब और गहरा गया, जब थरूर ने खुलासा किया कि केरल की निलांबुर विधानसभा सीट के उपचुनाव में प्रचार के लिए उन्हें पार्टी ने नहीं बुलाया। इसके साथ ही, केंद्र सरकार द्वारा 'ऑपरेशन सिंदूर' के लिए थरूर को अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई सौंपे जाने पर भी कांग्रेस के कुछ नेताओं की नाराजगी सामने आई थी। यह घटनाक्रम न केवल थरूर के राजनीतिक भविष्य, बल्कि कांग्रेस की आंतरिक एकता और रणनीति पर भी सवाल खड़े करता है। तथ्यों और विश्वसनीय स्रोतों के आधार पर यह लेख इस टकराव की जड़ों, इसके प्रभावों और संभावित परिणामों का विश्लेषण करता है।

शशि थरूर, जो अपनी बौद्धिकता, वाकपटुता और वैश्विक छवि के लिए जाने जाते हैं, पिछले 16 वर्षों से कांग्रेस के साथ जुड़े हैं। 19 जून 2025 को तिरुवनंतपुरम में पत्रकारों से बातचीत में, थरूर ने पहली बार सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया कि उनके और पार्टी नेतृत्व के कुछ लोगों के बीच ₹मतभेद₹ हैं। हालांकि, उन्होंने यह स्पष्ट नहीं किया कि ये मतभेद राष्ट्रीय नेतृत्व, जैसे सोनिया गांधी या राहुल गांधी, से हैं या केरल के स्थानीय नेतृत्व से। थरूर ने कहा, ₹मेरे कुछ मतभेद पार्टी नेतृत्व के कुछ तत्वों के साथ हैं, और इन्हें बंद कमरे में सुलझाया जाना चाहिए।₹ यह बयान निलांबुर उपचुनाव के मतदान के दिन आया, जिसके कारण उन्होंने विस्तार से बोलने से परहेज किया। लेकिन यह स्वीकारोक्ति पर्याप्त थी कि कांग्रेस के भीतर लंबे समय से चल रही अटकलों को बल मिले।

इस विवाद की शुरुआत तब हुई, जब केंद्र सरकार ने 'ऑपरेशन सिंदूर'—पाकिस्तान और पाक अधिकृत कश्मीर में भारत की सैन्य कार्रवाई—के बाद भारत का पक्ष वैश्विक मंच पर रखने के लिए थरूर को पांच देशों के दौरे पर भेजे गए सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व सौंपा। थरूर, जो संसद की विदेश मामलों की समिति के अध्यक्ष हैं, ने इस अवसर को राष्ट्रीय हित में स्वीकार किया। लेकिन कांग्रेस नेतृत्व को यह नागवार गुजरा, क्योंकि पार्टी ने इस प्रतिनिधिमंडल के लिए थरूर के नाम की सिफारिश नहीं की थी। पूर्व कांग्रेस सांसद उदित राज ने तो थरूर को ₹बीजेपी का सुपर प्रवक्ता₹ तक कह डाला, यह आरोप लगाते हुए कि उन्होंने 2015 में भारत द्वारा नियंत्रण रेखा पार करने की बात को बढ़ावा दिया, जो कांग्रेस के शासनकाल की सैन्य कार्रवाइयों को नजरअंदाज करता है। थरूर ने इन आरोपों का खंडन किया और कहा कि उनकी टिप्पणियां राष्ट्रीय हित में थीं, न कि किसी पार्टी विशेष के लिए।

निलांबुर उपचुनाव ने इस तनाव को और बढ़ा दिया। 19 जून 2025 को थरूर ने दावा किया कि उन्हें उपचुनाव के प्रचार के लिए निमंत्रण नहीं मिला, न ही ₹एक मिस्ड कॉल₹ तक आई। उन्होंने कहा, ₹मैं वहां नहीं जाता, जहां मुझे बुलाया नहीं जाता।₹ यह बयान इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि निलांबुर उपचुनाव को अगले साल होने वाले केरल विधानसभा चुनावों के लिए कांग्रेस की रणनीति के लिहाज से अहम माना जा रहा था। हालांकि, केरल प्रदेश कांग्रेस समिति के अध्यक्ष सनी जोसेफ ने थरूर के दावे का खंडन किया, यह कहते हुए कि थरूर का नाम स्टार प्रचारकों की सूची में शामिल था, जो चुनाव आयोग को सौंपी गई थी। जोसेफ ने थरूर की अनुपस्थिति को उनकी विदेश यात्रा और व्यस्तता से जोड़ा। इस विरोधाभास ने यह सवाल उठाया कि क्या यह एक संचार त्रुटि थी, या जानबूझकर थरूर को दरकिनार करने की कोशिश?

थरूर और कांग्रेस के बीच यह तनाव नया नहीं है। जनवरी 2025 में, जब थरूर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विदेश नीति की तारीफ की थी, तब भी पार्टी के भीतर असहजता देखी गई थी। पाहलगाम आतंकी हमले के बाद थरूर ने सरकार की प्रतिक्रिया का समर्थन किया, जो कांग्रेस की आधिकारिक लाइन से अलग था। इसके बाद, जब सरकार ने उन्हें वैश्विक कूटनीति मिशन के लिए चुना, तो कांग्रेस ने उन्हें 33 देशों के प्रतिनिधिमंडल की सिफारिश सूची से बाहर रखा, जिसे नेतृत्व की नाराजगी का संकेत माना गया। इन घटनाओं ने यह धारणा बनाई कि थरूर और कांग्रेस नेतृत्व के बीच वैचारिक और रणनीतिक असहमति बढ़ रही है।

इस विवाद के पीछे कई कारण हो सकते हैं। पहला, थरूर की स्वतंत्र छवि और उनकी वैश्विक पहचान उन्हें पार्टी की पारंपरिक कमान संरचना से अलग करती है। दूसरा, केरल में कांग्रेस के भीतर गुटबाजी, जहां थरूर को स्थानीय नेताओं के एक वर्ग का समर्थन नहीं मिलता। तीसरा, कांग्रेस की राष्ट्रीय रणनीति, जो बीजेपी के खिलाफ सख्त विपक्षी रुख अपनाने पर केंद्रित है, जबकि थरूर राष्ट्रीय हित के मुद्दों पर अधिक समावेशी दृष्टिकोण अपनाते हैं। कुछ विश्लेषकों का मानना है कि थरूर की महत्वाकांक्षा—जैसे 2022 में कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए उनकी उम्मीदवारी—ने भी नेतृत्व के साथ उनके रिश्तों को तनावपूर्ण किया है।

इस टकराव के संभावित परिणाम गंभीर हो सकते हैं। यदि निलांबुर उपचुनाव में कांग्रेस की जीत होती है, तो यह नेतृत्व के लिए थरूर की अनुपस्थिति को उचित ठहरा सकता है, जिससे उनकी स्थिति कमजोर हो सकती है। वहीं, हार की स्थिति में थरूर की आवाज को और बल मिल सकता है। थरूर ने स्पष्ट किया कि वह पार्टी छोड़ने की अटकलों को खारिज करते हैं और 16 साल की अपनी निष्ठा को रेखांकित करते हैं। फिर भी, अगर मतभेद सुलझे नहीं, तो यह कांग्रेस की एकता और केरल में उसकी साख को नुकसान पहुंचा सकता है, जहां वह पहले से ही वामपंथी दलों और बीजेपी से कड़ी चुनौती का सामना कर रही है।

यह विवाद कांग्रेस के लिए एक चेतावनी भी है। एक ओर, पार्टी को थरूर जैसे बौद्धिक और वैश्विक चेहरों की जरूरत है, जो युवा और शहरी मतदाताओं को आकर्षित कर सकते हैं। दूसरी ओर, आंतरिक अनुशासन और एकसमान वैचारिक रुख बनाए रखना भी जरूरी है। थरूर ने संकेत दिया है कि वह उपचुनाव के बाद नेतृत्व के साथ बात करेंगे, लेकिन यह बातचीत कितनी सकारात्मक होगी, यह देखना बाकी है।

भारतीय राजनीति के इस नाटकीय मोड़ पर, शशि थरूर और कांग्रेस के बीच का तनाव केवल एक व्यक्तिगत विवाद नहीं, बल्कि एक बड़े सवाल का प्रतीक है: क्या कांग्रेस अपने भीतर विविधता और स्वतंत्र विचारों को जगह दे पाएगी, या यह आंतरिक कलह का शिकार होकर कमजोर होगी? जैसे-जैसे निलांबुर के नतीजे सामने आएंगे, यह सवाल और तेज होगा। क्या यह टकराव एक नए समझौते की शुरुआत है, या फिर एक ऐसी दूरी की, जो कभी पाटी न जा सके? समय ही इसका जवाब देगा, लेकिन फिलहाल, यह कहानी भारतीय राजनीति की अनिश्चितताओं और संभावनाओं का जीवंत चित्र प्रस्तुत करती है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

क्या पुरस्कार अब प्रकाशन-राजनीति का मोहरा बन गए हैं?

डॉ. सत्यवान सौरभ

"साहित्य समाज का दर्पण होता है।" यह वाक्य हमने न जाने कितनी बार पढ़ा और सुना है। परंतु आज साहित्य के दर्पण पर परतें चढ़ चुकी हैं—राजनीतिक, प्रकाशकीय और प्रतिष्ठान-प्रेरित परतें। प्रश्न यह नहीं है कि कौन किससे छप रहा है। प्रश्न यह है कि क्या हिंदी साहित्य का पुरस्कार अब केवल उन्हीं लेखकों को मिलेगा जो वाणी प्रकाशन या राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित होंगे?

पुरस्कार: साहित्यिक मान्यता या प्रकाशकीय गठजोड़?

एक समय था जब किसी लेखक को पुरस्कार मिलने पर पूरे साहित्यिक समाज में उत्सव जैसा माहौल होता था। आज स्थिति यह है कि जैसे ही किसी लेखक को प्रतिष्ठित पुरस्कार मिलता है, सबसे पहला सवाल यह पूछा जाता है—"कहाँ से छपे हैं?" अगर जवाब वाणी या राजकमल है, तो चर्चा बदल जाती है—"चलो, सेटिंग होगी...!" यह कटाक्ष नहीं, आज के साहित्यिक वातावरण का यथार्थ है। क्योंकि अब पुरस्कार प्रतिभा का नहीं, प्रकाशन और पहुंच का प्रमाण बनते जा रहे हैं।

साहित्यिक ब्रांडिंग का दौर

वाणी और राजकमल जैसे संस्थान निस्संदेह हिंदी के प्रमुख स्तम्भ हैं। उन्होंने उत्कृष्ट लेखकों को छापा है और साहित्य की सेवा की है। लेकिन अब समस्या यह नहीं है कि वे छाप रहे हैं, समस्या यह है कि बाकी किसी को छापना, सुनना और पुरस्कृत करना साहित्यिक प्रतिष्ठानों को "जोखिम" जैसा लगता है।

जिस तरह फिल्मों में केवल बड़े बैनर की फिल्में ही राष्ट्रीय पुरस्कार पाती हैं, उसी तरह अब साहित्य में भी "ब्रांडेड प्रकाशन" ही पुरस्कारों का टिकट बन चुके हैं।

प्रतिभा बनाम पहुँच

हिंदी साहित्य के छोटे लेखक, ग्रामीण पृष्ठभूमि के रचनाकार, स्वतंत्र प्रकाशनों से जुड़ी प्रतिभाएँ — सब धीरे-धीरे इस "पुरस्कार तंत्र" से बाहर हो चुके हैं। उनके पास न तो साहित्यिक लॉबियों से संपर्क हैं, न दिल्ली-मुंबई जैसे केन्द्रों में मौजूदगी, और न ही ब्रांडेड कवर पृष्ठ। तो फिर पुरस्कार किसके हिस्से आएंगे? जवाब स्पष्ट है: उन्हीं के जो पहले से स्थापित हैं, और एक खास प्रकाशकीय घेरे में फिट होते हैं।

पुरस्कार चयन प्रक्रिया की पारदर्शिता पर सवाल

जब पुरस्कारों की चयन समितियों में उन्हीं संस्थानों के प्रतिनिधि बैठें जिनके लेखक पुरस्कार जीतते हैं, तो यह नैतिकता की नहीं, तंत्र की समस्या बन जाती है। क्या कोई लेखक इसलिए श्रेष्ठ है क्योंकि वह किसी प्रसिद्ध प्रकाशन से छपा है? क्या एक गाँव की लड़की की कहानी इसलिए उपेक्षित है क्योंकि वह "स्व-वित्तपोषित" किताब में छपी है? क्या साहित्य केवल महानगरों में लिखा जा रहा है? यह सवाल मात्र भावुकता नहीं, साहित्य के लोकतंत्र की माँग है।

"सेटिंग और गैटिंग" का साहित्यिक संस्करण

अब साहित्यिक पुरस्कार भी वैसी ही 'लॉबिंग' का हिस्सा बन चुके हैं जैसे राजनीति या सिनेमा में होता है। कोई वरिष्ठ आलोचक पुरस्कार समिति में बैठता है और उसी साल उसका शिष्य पुरस्कार पाता है। कोई लेखक चर्चित होता है क्योंकि उसके प्रकाशक ने किताब के विमोचन में 'नामचीन लोगों' को बुला लिया। समीक्षाएँ छपती हैं—पर लेखन नहीं पढ़ा जाता, सिर्फ "प्रकाशक का नाम" देख लिया जाता है।

स्वतंत्र प्रकाशकों की उपेक्षा: एक अन्यायपूर्ण प्रवृत्ति

हिंदी में आज कई स्वतंत्र, ईमानदार, मेहनती प्रकाशक सक्रिय हैं। वे बिना किसी शोर-शराबे के अच्छे लेखकों को प्रकाशित कर रहे हैं, नए विषय ला रहे हैं, जोखिम ले रहे हैं। लेकिन उन्हें पुरस्कारों की सूची में शायद ही जगह मिले। क्या इसलिए कि उनके पास प्रचार का पैसा नहीं है?

या इसलिए कि वे किसी पुरस्कार समिति के सदस्य के 'प्रकाशकीय मित्र' नहीं हैं?

पुरस्कार नहीं, पाठक चाहिए

आज कई लेखक इस पुरस्कार-तंत्र से परेशान होकर कहते हैं—"हमें पुरस्कार नहीं चाहिए, हमें पाठक चाहिए।" यह बदलाव एक क्रांतिकारी सोच है। क्योंकि एक समय ऐसा आएगा जब पाठक पूछेगा—"क्या यह लेखक अच्छा है, या बस पुरस्कार मिला हुआ है?"

क्या राजकमल या वाणी में छपना गुनाह है?

बिलकुल नहीं। वाणी, राजकमल या अन्य बड़े प्रकाशकों से छपना एक उपलब्धि हो सकती है, लेकिन वह एकमात्र रास्ता नहीं होना चाहिए। समस्या तब होती है जब पुरस्कार देने वाले संस्थान यह मान बैठते हैं कि अच्छा साहित्य वहीं छपता है।

इस मानसिकता को बदलना होगा, क्योंकि एक समाज का साहित्य उसकी विविधता, भूगोल, बोली और संघर्षों का समुच्चय होता है — न कि केवल दिल्ली की प्रेस या कॉफी टेबल रीडिंग।

नवलेखकों के लिए क्या संदेश है?

आज का नवलेखक यह देख रहा है कि अगर उसकी किताब किसी "ब्रांडेड" प्रकाशक से नहीं छपी, तो उसके पुरस्कार पाने की संभावना लगभग समाप्त है। यह मानसिक अवसाद और हतोत्साहन की स्थिति है। उसे यह समझाना ज़रूरी है कि —

पुरस्कार अंतिम सत्य नहीं हैं। साहित्य एक दीर्घकालीन संवाद है, जिसमें पाठक का प्रेम, समाज की प्रतिक्रिया और लेखकीय ईमानदारी सबसे महत्वपूर्ण है।

साहित्यिक लोकतंत्र की आवश्यकता

हमें ऐसे मंचों और पुरस्कार संस्थाओं की आवश्यकता है जो छोटे, स्वतंत्र, स्थानीय और डिजिटल प्रकाशकों से छपने वाली पुस्तकों को भी समान अवसर दें। हमें "साहित्यिक समानता" की बात करनी होगी, जहाँ प्रकाशन का नाम नहीं, रचना की संवेदना और सामाजिक प्रासंगिकता मूल्यांकन का आधार हो।

प्रश्न जो रह गए हैं:

क्या साहित्यिक संस्थाएँ पुरस्कार चयन से पहले अंधभक्ति की परत हटा पाएँगी? क्या आलोचक अपने संपर्कों से ऊपर उठकर नए साहित्य को खोजने का साहस दिखाएँगे? क्या हम अपने बच्चों को बताएँगे कि "सच्चा साहित्य पुरस्कारों से नहीं, अनुभवों से उपजता है?"

पुरस्कार नहीं, ईमानदारी चाहिए

पुरस्कार मिलना अच्छा है, लेकिन ईमानदारी से लेखन करना उससे कहीं ज़्यादा बड़ा पुरस्कार है। वह पुरस्कार जो आत्मा देती है, पाठक देते हैं, और समय देता है। साहित्य वह नहीं जो पुरस्कार पाता है, साहित्य वह है जो मनुष्य को भीतर से झकझोर दे — चाहे वह किसी भी प्रकाशक से छपा हो।

तो अगली बार जब कोई आपसे पूछे – "कहाँ से छपे हो?",

तो जवाब हो — "जहाँ मेरी आत्मा ने कलम चलाई और पाठकों ने उसे पढ़ा।"

(डॉ. सत्यवान सौरभ स्वतंत्र स्तंभकार, समीक्षक और समाज विषयों पर धारदार लेखन के लिए जाने जाते हैं। आपने ग्रामीण भारत, स्त्री विमर्श और साहित्यिक राजनीति पर कई चर्चित लेख लिखे हैं।)

हवाई अड्डे पर अफ़गानिस्तानि गिरफ्तार: नकली पासपोर्ट से ब्यापार कर रहा था

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: बीजू पटनायक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर कल रात पकड़े गए एक अफ़गान नागरिक (काबुलीबाला) को आज एयरपोर्ट पुलिस ने गिरफ़्तार कर लिया है। आरोपी की पहचान मोहम्मद यूसुफ़ उर्फ़ या खान (54) के रूप में हुई है। उस पर फ़र्जी पासपोर्ट के आधार पर 2018 से कटक में रहने का आरोप है।एयरपोर्ट इमिग्रेशन डीएसपी समापिका पटनायक की शिकायत के अनुसार, मोहम्मद यूसुफ कल रात दुबई से फ्लाइट संख्या 6ई-1488 से भुवनेश्वर एयरपोर्ट पहुंचे। उनके पासपोर्ट (संख्या यू1380251) की जांच के दौरान उनका नाम जा खान, पिता- मोती खान, घर- कटक केटीएम साही बताया गया। इमिग्रेशन क्लीयरेंस के दौरान अधिकारियों को संदेह हुआ और उन्होंने विस्तृत जांच की। जांच से पता चला कि कोलकाता एयरपोर्ट पर उनके असली नाम के खिलाफ लुकआउट सर्कुलर जारी किया गया था। लुकआउट सर्कुलर के अनुसार उनका नाम मोहम्मद यूसुफ था और वे अफगानिस्तान के मूल निवासी थे। यह लुकआउट सर्कुलर उनके असली पासपोर्ट (संख्या 02457655) के खिलाफ जारी किया गया था। जांच में पता चला कि वे असली पासपोर्ट के आधार पर भारत आए थे और कटक में

रहने के बाद उन्होंने धोखाधड़ी से भारतीय नागरिक के तौर पर सारे रिकॉर्ड हासिल कर लिए थे। कटक के पते पर उसने आधार कार्ड, पैन कार्ड, वोटर आईडी, ड्राइविंग लाइसेंस और पासपोर्ट आदि बनवा लिए थे। भारत आने के बाद से वह लापता है, इसलिए उसके खिलाफ लुकआउट सर्कुलर जारी किया गया है।

दलितों तथा वंचितों की आवाज को दबाने का काम कर रही हरियाणा सरकार व हरियाणा पुलिस

अधिवक्ता रजत कल्सन के घर पर 40 से अधिक पुलिस कर्मचारियों व अधिकारियों की रेड।

अधिवक्ता रजत कल्सन के सभी सोशल मीडिया अकाउंट हरियाणा सरकार ने गैर-क़ानूनी तरीके से किये बंद ।

रजत कल्सन

दलित समाज के खिलाफ हो रहे अन्याय, अत्याचार व उत्पीड़न की आवाज उठाना कितना बड़ा गुनाह हो गया है, यह भाटला सामाजिक बहिष्कार प्रकरण से साबित हो गया है। कल भाटला सामाजिक बहिष्कार प्रकरण में पीड़ितों के अधिवक्ता रजत कल्सन के घर पर रेड की जिसमें 6 पुलिस की एसयूवी गाड़ियाँ जिसमें कम से कम 30-40 पुलिसकर्मी व अधिकारी शामिल थे उन्होंने अधिवक्ता रजत कल्सन के घर पर रेड की तथा घर को गैर-क़ानूनी तरीके से घेर कर उनकी पत्नी व बच्चों के साथ पुलिसिया अंदाज में बात की तथा परिजनों को डराने की कोशिश की।

आपको एक बात और बता दे की पुलिस ने 15 जून को अधिवक्ता रजत कल्सन की मुख्य फेसबुक आईडी जिसमें 41000 से भी अधिक फॉलोअर्स थे उनको तो पहले ही बंद कर दिया था तथा अब दूसरी फेसबुक आईडी जिसके माध्यम से अधिवक्ता रजत कल्सन अपनी बात रखने का काम कर रहे थे उसको भी आज गैर-कानूनी तरीके से बंद करने का काम किया है तथा अब सोशल मीडिया फेसबुक पर अधिवक्ता रजत कल्सन की कोई भी फेसबुक आईडी आपको नजर नहीं आएगी।

दलितों तथा वंचितों की आवाज को बंद करने का काम हरियाणा सरकार तथा हरियाणा पुलिस द्वारा किया गया है और भाटला सामाजिक बहिष्कार प्रकरण में पुलिस की भूमिका संदिग्ध रही है तथा पुलिस ने जातिवादी गुंडो को बचाने का भरपूर प्रयास किया है। अब जब पुलिस व जातिवादी गुंडो को अपनी कलई खुलती नजर आ रही है तो उन्होंने इस तरीके से उनकी भड़ास निकालनी शुरू कर दी है तथा अब यह फर्जी मुकदमों में रजत कल्सन को गिरफ्तार कर उनको टॉर्चर करना चाहते है।

सभी सम्मानित साथियों से निवेदन है कि आप इस विकट समय में अधिवक्ता रजत कल्सन की मदद करने का काम करें तथा इस संदेश को ज्यादा से ज्यादा सोशल मीडिया पर शेयर करने का काम करें तथा आप यह जरूर याद रखें कि हरियाणा में जहां भी अन्याय-अत्याचार की घटना घटित होती है वहां पर अधिवक्ता रजत कल्सन आपके साथ दुःख-दर्द में साथ खड़े थे और अब आपका भी फर्ज बनता है कि आप सब लोग उनके साथ खड़े रहे।

कोयलांचल जमीन अधिग्रहण एवज में नौकरी पर सीसीएल एवं सरकारी कर्मी शामिल: सीआईडी

रिपोर्ट के आधार पर दर्ज करें मुकदमा : डीजीपी,झारखंड

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची। झारखंड खनीज संपदा का गढ़ रहा है । लोगों के जमीन के नीचे अरबों खरबों की विभिन्न खनीज , अयस्क मिलते हैं वहीं औधौगिक परिवेश हेतु यहां लोग जमीन गंवाते हैं । परन्तु आश्चर्य की बात अक्सर इन्हें ठगा जाता । ऐसी ही कहानी चतरा की मगध कोल परियोजना और हजारीबाग के केरेडारी स्थित चंद्रगुप्त ओपनकास्ट कोल परियोजना में जमीन अधिग्रहण के बदले नौकरी देने में गड़बड़ी सामने आई है। सीआईडी ने इस मामले में मिली शिकायतों की प्रारंभिक जांच के बाद डीजीपी को रिपोर्ट सौंपी है। रिपोर्ट में सीसीएल अफसरों के एक ही समूह की संलिप्तता बताई गई है। साथ ही राजस्व विभाग के अफसरों और कर्मियों की भूमिका संदिग्ध मिली है। डीजीपी ने रिपोर्ट के आधार पर अब सीआईडी को केस दर्ज करने का आदेश दिया है।

जानकारी मुताबिक टंडवा कोल परियोजना के मामले में पहले से टंडवा थाने में दर्ज केस को सीआईडी टेकओवर करेगी, जबकि चंद्रगुप्त ओपनकास्ट कोल परियोजना में गड़बड़ी को लेकर नई प्राथमिकी दर्ज करेगी। बता दें कि दुर्गा उरांव उर्फ दुर्गा मुंडा नामक व्यक्ति ने गृह सचिव और डीजीपी से इस घोटाले की शिकायत की थी ।

अब तक की जांच के अनुसार, जमीन अधिग्रहण करने पर विस्थापित ग्रामीणों को सीसीएल की अलग-अलग परियोजनाओं में मुआवजा और नौकरी देने का प्रावधान है, लेकिन जांच में यह बात भी सामने आई कि फर्जी दस्तावेज, जाली रिपोर्ट और बनावटी हस्ताक्षर के आधार पर एक संगठित गिरोह ने खुद को विस्थापित दिखाकर मुआवजा और नौकरी हासिल कर ली। जिला भू- अर्जन पदाधिकारी के लिखित बयान के आधार पर नामजद प्राथमिकी दर्ज हे।

चतरा जिला प्रशासन की प्रारंभिक जांच में घोटाले की पुष्टि हुई थी। जांच में पाया गया कि कुछ लोगों ने फर्जी हुकुमनामा, वंशावली, जमाबंदी और लगान रसीद बनाकर न सिर्फ अधिग्रहण क्षेत्र के बाहर के व्यक्तियों को रैयत बनाया, बल्कि सीसीएल में नौकरी भी दिलाई। जिला प्रशासन ने यह भी कहा कि इस फर्जीवाड़े में सीसीएल के कुछ अधिकारी और अंचलकर्मी भी शामिल रहे। इसे लेकर 22 नामजद लोगों पर टंडवा थाने में केस दर्ज कराया गया था।

ट्रम्प ने अमेरिकियों को ओडिशा जाने के दौरान रात में बाहर नहीं जाने की चेतावनी दी है, अमेरिका में दंगे हैं, ट्रम्प ओडिशा के बारे में बात क्यों कर रहे हैं: कृष्णा पत्रा

मनोरनजान सासमाल

भुवनेश्वर: ट्रम्प सरकार ने भारत आने वाले अमेरिकियों के लिए दिशानिर्देश जारी किए हैं। बलात्कार, हिंसा, आतंकवाद पर दिशानिर्देश जारी किए गए हैं। यह कहता है कि भारत में बलात्कार बढ़ रहा है। पर्यटन स्थलों में दुर्व्यवहार और हिंसा बढ़ रही है। पर्यटन स्थलों में आतंकवादी हमले हो रहे हैं। बाजार, शॉपिंग मॉल और पर्यटन स्थल असुरक्षित हो रहे हैं। इसलिए, यह सलाह दी गई है कि भारत आने वाले अमेरिकी महिला पर्यटकों को अकेले कहीं नहीं जाना चाहिए। ट्रम्प प्रशासन ने जम्मू और कश्मीर और भारत-पाकिस्तान सीमा पर जाने के खिलाफ भी सलाह दी है। इसी तरह, भारत में काम करने वाले अमेरिकी नागरिकों को ओडिशा सहित छह राज्यों में जाने की पूर्व अनुमति लेने के लिए कहा गया है। अन्य पांच राज्य बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, मेघालय और पश्चिम बंगाल हैं। अमेरिकी नागरिकों को इन छह राज्यों की राजधानियों में जाने की अनुमति की आवश्यकता होती है, लेकिन अगर वे अन्य क्षेत्रों में जाते हैं, तो उन्हें अनुमति नहीं लेनी होगी। अमेरिकियों से आग्रह किया गया है कि ₹व्यायाम में सावधानी बढ़ाई₹।

अमेरिका ने भारत में सबसे तेजी से बढ़ते अपराधों में से एक के रूप में बलात्कार का हवाला दिया है। अमेरिका ने कहा है कि पर्यटन स्थलों और अन्य स्थानों पर हिंसक अपराध हो रहे हैं। सलाहकार महिलाओं, विशेष रूप से महिलाओं को सलाह देता है, अकेले यात्रा करने के लिए नहीं। इससे पहले, 2019 और 2021 में, अमेरिकी दूतावास ने महिलाओं की सुरक्षा के बारे में इसी तरह की चेतावनी जारी की थी। सलाहकार ने यह भी कहा कि यात्रियों को अपने साथ उपग्रह फोन या जीपीएस उपकरण नहीं लाना चाहिए, क्योंकि वे भारत में अवैध हैं और $ 200,000 या कारावास का जुर्माना लगा सकते हैं।

ओडिशा खाद्य आपूर्ति मंत्री कृष्ण चंद्र पटरा। उन्होंने कहा, ₹आप ओडिशा जैसी शांतिपूर्ण जगह नहीं पा सकते हैं, दुनिया में कहीं भी ओडिशा जैसा माहौल। समस्या क्यों बनी रहेगी? हमारी सरकार उस सब पर टूट रही है। क्या अमेरिका में हिंसा नहीं है? रियो नहीं हैं?

जमशेदपुर के थाना प्रभारी आलोक दुबे ने धर दबोचा कुख्यात अन्तराज्य ठग

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

जमशेदपुर, जमशेदपुर कदमा के एक फ्लैट में दिनदहाड़े ठगी के बाद कोल्हान प्रमंडल के कर्मठ पुलिस अधिकारी संप्रति कदमा थाना प्रभारी आलोक दुबे ने त्वरित कार्रवाई कर एक अन्तराज्य ठग को धर दबोचा है।

के के एस लिंक रोड निवासी 44 वर्षीय प्रशांत डिंडा के लिखित आवेदन के आधार पर मामला कदमा थाने में दर्ज किया गया था . उन्होंने बताया कि 5 जून को दोपहर लगभग 12:30 से 1 बजे के बीच जब वे अपने कार्यालय में थे तब एक अज्ञात व्यक्ति उनके फ्लैट में घुस आया और उनकी पत्नी को अपना पुराना परिचित बताते हुए झासा में ले लिया. वह व्यक्ति फर्जी मित्र बनकर कीमती जेवरात और जरूरी दस्तावेज लेकर फरार हो गया ।

घटना की गंभीरता को देखते हुए वरीय पुलिस अधीक्षक के निर्देशानुसार पुलिस अधीक्षक नगर के नेतृत्व में एक विशेष टीम गठित की गई. जिसका जिम्मेदारी आलोक दुबे ने निभाया । तकनीकी और मानवीय सूचनाओं के आधार पर जांच शुरू की गई. जांच में जयंत कुमार जयसवाल नामक व्यक्ति का नाम सामने आया, जिसकी उम्र लगभग 51 वर्ष है और वह उत्तर 24 परगना, पश्चिम बंगाल का निवासी है. विशेष टीम ने कोलकाता और झारखंड में उसके संभावित ठिकानों पर छापेमारी की. अंततः उसे गिरिडीह से गिरफ्तार किया गया.

पूछताछ में आरोपी ने स्वीकार किया कि वह जमशेदपुर और राउरकेला जैसे औद्योगिक शहरों में बीते 5 वर्षों से अकेली महिलाओं को निशाना बनाकर ठगी करता रहा है. वह कंपनियों के कर्मचारियों के घरों में उस वक्त घुसता जब पुरुष सदस्य कार्यालय में होते और खुद को परिचित बताकर महिलाओं से आभूषण और नकदी ठग लेता था. ठगी से मिले पैसों का उपयोग वह अपने जीवन-यापन और आईपीएल सट्टेबाज़ी में करता था.

आरोपी के खिलाफ पहले भी कई मामले दर्ज हैं:टेल्को थाना कांड संख्या 77/23, धारा 392.टेल्को थाना कांड संख्या 74/22, धारा 392.टेल्को थाना कांड संख्या 131/23, धारा 420/380.राउरकेला सेक्टर-15 थाना कांड संख्या 115/24, धारा 318(4)/319(2) बी एन एस दर्ज है ।

3 निजी बैंक मुश्किल में: नहीं जमा होगा सरकारी पैसा

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर: राज्य सरकार ने 3 निजी बैंकों को पैनल से हटा दिया है। ओडिशा सरकार ने पिछले दो वर्षों में कुछ प्रमुख सरकारी योजनाओं में खराब प्रदर्शन के कारण तीन प्रमुख निजी बैंकों को सूची से हटा दिया है। इस संबंध में वित्त विभाग ने सभी विभागों को पत्र लिखा है। जिसमें यह स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि निजी एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक और एक्सिस बैंक को तत्काल प्रभाव से राज्य सरकार और सरकारी संस्थानों के व्यवसाय और जमा को संभालने के लिए पैनल से हटा दिया गया है। इसके साथ ही इन बैंकों के अन्य बैंकिंग मापदंडों में भी इनका प्रदर्शन अच्छा नहीं है। इसलिए बैंकों को कमजोर प्रदर्शन के लिए सूची से हटा दिया गया है। जो बैंकों के लिए एक बड़ा झटका है।

इस संबंध में वित्त विभाग के प्रधान सचिव शाश्वत मिश्रा ने कहा कि पिछले दो वित्तीय वर्षों में कुछ प्रमुख सरकारी योजनाओं और हतोत्साहित करने वाले सामान्य बैंकिंग मापदंडों में खराब प्रदर्शन के कारण इन तीन निजी बैंकों को राज्य सरकार और राज्य सरकार समर्थित संगठनों के व्यवसाय और जमा को संभालने के लिए सूचीबद्ध बैंकों की सूची से हटा दिया गया है। पत्र में कहा गया है कि इन सभी संगठनों को इन तीनों बैंकों में रखे गए अपने बचत या चालू खाते तथा अन्य चालू खातों को तत्काल बंद करने का निर्देश दिया गया है। खाते की शेष राशि को किसी अन्य पैनल बैंक में खोले गए या रखे गए नए या मौजूदा खाते में स्थानांतरित करने का निर्देश दिया गया है। हालांकि, इन तीनों बैंकों में वर्तमान में रखे गए सावधि जमा या सावधि जमा को अभी बंद नहीं किया जाएगा, क्योंकि समय से पहले बंद होने के कारण उन पर ब्याज नहीं मिल पाएगा। इन जमाओं की परिपक्वता के बाद अर्जित ब्याज सहित पूरी जमा राशि अन्य पैनल बैंकों में स्थानांतरित कर दी जाएगी, वित्त विभाग के प्रधान सचिव ने जानकारी दी है। इसके अलावा पत्र में यह भी कहा गया है कि यह आदेश पत्र जारी होने की तिथि से लागू होगा। इन निर्देशों का पालन न करने पर गंभीरता से निपटा जाएगा। विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण में आने वाले सभी राज्य सरकारों और राज्य सरकार समर्थित संगठनों को इस संबंध में सूचित कर दिया गया है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023